JAYA PRAKASH KARDAM AUR Dr.KOLAKALURI ENOCK KI KAHANIYOM ME SAMAJIKA MOOLYA THULANATHMAKA ADHYAYAN

MINOR RESEARCH PROJECT

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

SOUTHERN REGIONAL OFFICE

HYDERABAD

PRINCIPAL INVESTIGATOR

Dr.P.Kamala Sayi M.A. M.Phil.Ph.D.

Lecturer in Hindi

D.R.W.College (Autonomous)

Gudur NELLORE Dt.

DECLARATION

I hereby declare that the Project entitled ' **Dr.Jaya Prakash Kardam Aur Dr.Kolakaluri Enoch ki Kahaniyom me Samajika Moolya - Thulanathmaka Adhyayan'** has been written by me under the scheme of support for Minor Research Project by University Grants Commission, Hyderabad. I also declare that the Project is the result of my own effort.

Dr.P.KAMALA SAYI

Principal Investigator

डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक की कहानियों में सामाजिक मूल्य

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	i to iv
1.0. भूमिका :	1
1.1.कर्दम जी का व्यक्तित्व	2
1.1.1. जन्म और बचपन	2
1.1.2. शिक्षा	3
1.1.3. नौकरी	5
1.1.4. वैवाहिक जीवन तथा संतान	6
1.1.5. साहित्य जगत में पदार्पण	7
1.1.6. पुरस्कार एवं सम्मान	8
1.1.7.व्यक्तित्व के विविध पहलू - दलित चिंतक	9
1.2. जयप्रकाश कर्दम जी का कृतित्व	12
1.2.1.उपन्यास साहित्य	12
1.2.1.1. छप्पर	12
1.2.1.2. करुणा	13
1.2.2. कविता संग्रह	13
1.2.2.1. गूँगा नहीं था मैं	14
1.2.2.2. तिनका - तिनका आग	14

1.2.3. कहानी - संग्रह 14

1.2.3.1. तलाश 14

1.2.3.2. खरोंच 19

1.2.4. अन्य रचनाएँ 27

1.2.4.1.बल साहित्य 27

1.2.4.2.बल उपन्यास 27

1.2.4.3. आलोचना विचार प्रबंध 28

1.2.4.4. शोध प्रबंध 28

1.2.4.5. संपादित पुस्तकें 28

1.2.4.6. अनूदित पुस्तकें 28

1.2.4.7. पत्र - पत्रिकाओं से जुडाव 28

1.2.5. अन्य विवरण 29

1.2.6. निष्कर्ष 29

दूसरा अध्याय

डॉ. कोलकलूरि इनाक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.0. भूमिका 32

2.1. पद्मश्री आचार्य कोलकलूरि इनाक जी का व्यक्तित्व 33

2.1.1. जन्म और बचपन 33

2.1.2. शिक्षा एवं नौकरी 33

2.1.2.1. शिक्षा 33

2.1.2.2. नौकरी 35

2.1.3. *विवाह और संतान* 36

2.1.4. *साहित्य जगत में पदार्पण* 38

2.1.5. *पुरस्कार एवं सम्मान* 38

2.1.5.1. *शिक्षा, साहित्य तथा सामाजिक कार्यकलापों से संबंधित पुरस्कार* 38

2.1.5.2. *उपाधियाँ* 39

2.1.5.3. विदेशी पर्यटन 40

2.1.6. *व्यक्तित्व के विविध पहलू* 40

2.2. *इनाक जी का कृतित्व* 40

2.2.1. *उपन्यास साहित्य* 41

2.2.2. *कहानी साहित्य* 41

2.2.3. *नाटक - साहित्य* 45

2.2.4. *कविता संग्रह* 46

2.2.5. *अनुसंधान के क्षेत्र में अनुभव* 47

2.2.6. *अनुवाद साहित्य* 47

2.3. *निष्कर्ष* 48

तीसरा अध्याय

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

3.0. *प्रस्तावना* 50

3.1. *मूल्य : व्युत्पत्यार्थ* 50

3.2. *मूल्य - परिभाषा एवं स्वरूप* 51

3.3. *मूल्य का महत्व* 53

3.4. मूल्य की आवश्यकता 53

3.5. मूल्य का वर्गीकरण 55

3.6. समाज : परिभाषा एवं स्वरूप 56

3.6.1. समाज शब्द का अर्थ 56

3.6.2. समाज की संरचना एवं परिभाषाएँ 57

3.6.3. साहित्य और समाज 58

3.6.4. समाज और मूल्य 60

3.6.5. साहित्य और मूल्य 61

3.7. सामाजिक मूल्य : तात्पर्य और विश्लेषण 62

3.7.1. व्यक्ति और समाज का संबंध 62

3.7.2. सामाजिक मूल्य - तात्पर्य 63

3.7.3. सामाजिक मूल्य - विश्लेषण 64

3.8. सामाजिक मूल्य - वर्गीकरण 65

3.8.1. वैयक्तिक मूल्य 65

3.8.1.1. निर्भयता 66

3.8.1.2. आत्म - पर्यालोचन 66

3.8.1.3. विनम्रता 67

3.8.1.4. तेजस्विता 67

3.8.1.5. उद्यमशीलता 67

3.8.1.6. एक निष्ठा 67

3.8.1.7. स्वाभिमान 68

3.8.1.8. कृतज्ञता 68

3.8.2. पारिवारिक मूल्य 68

3.8.2.1. पति - पत्नी संबंधित मूल्य 69

3.8.2.2. माता - पिता संबंधी मूल्य 69

3.8.2.3. सन्तान संबंधी मूल्य 70

3.8.3. समष्टिगत सामाजिक मूल्य 70

3.8.3.1. वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन 71

3.8.3.2. समानता 71

3.8.3.3. सामाजिक रूढियों और कुरीतियों का विरोध 72

3.8.3.4. शोषितों, पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति 73

3.8.3.5. सहयोग 73

3.8.3.6. साहस व धैर्य 73

3.8.3.7. नारी का स्वरूप 73

3.9. निष्कर्ष 74

चौथा अध्याय

डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी

की कहानियों में सामाजिक मूल्य

4.0. प्रस्तावना 78

4.1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में 79

प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्य

4.1.1. वैयक्तिक मूल्य 79

4.1.1.1. निर्भयता 79

4.1.1.2. आत्म पर्यालोचन 83

4.1.1.3. विनम्रता 84

4.1.1.4. तेजस्विता 86

4.1.1.5. उद्यमशीलता 87

4.1.1.6. एक निष्ठा 89

4.1.1.7. स्वाभिमान 90

4.1.2. पारिवारिक मूल्य 91

4.1.2.1. पति -पत्नी संबंधी मूल्य 92

4.1.2.2. माता पिता संबंधी मूल्य 94

4.1.2.3. सन्तान संबंधी मूल्य 97

4.1.3. समष्टिगत सामाजिक मूल्य 98

4.1.3.1. वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन 99

4.1.3.2. समानता 105

4.1.3.3. धर्म के अंधानुकरण का विरोध 107

4.1.3.4. शोषितों ,पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति 109

4.1.3.5. सहयोग 112

4.1.3.6. साहस व धैर्य 113

4.1.3.7. नारी संबंधी मूल्य 114

4.1.4. उपसंहार 118

पाँचवाँ अध्याय

उपसंहार 125 - 132

परिशिष्ट

क. आधार ग्रंथों की सूची - i

ख. सहायक ग्रंथों की सूची - ii to vi

प्राक्कथन

आज साहित्य के क्षेत्र में तुलनात्मक अनुसंधान का विशेष महत्व है, क्योंकि तुलना से साहित्य खरा उतरता है । तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा ज्ञानवर्द्धन के साथ - साथ विभिन्न समाजों और संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त होता है । दो भिन्न भाषाई प्रदेशों के साहित्य की तुलना करने से वहाँ की सामाजिक गतिविधियाँ, भौगोलिक वातावरण, सांस्कृतिक परिवेश एवं जीवन शैली का आदान - प्रदान संभव होता है । ज्ञान - वृद्धि, सुख समृद्धि, उच्चतर मानवीय मूल्यों की स्थापना आदि तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा ही संभव है ।

किसी साहित्यकार के निर्माण में उसके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । जीवन के व्यापक क्षेत्र में केवल वे व्यक्ति महत्ता पा सके हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से, अपने जीवन का उन्नयन किया है । प्रस्तुत लघु शोध परियोजना में डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक के कथा -साहित्य की तुलना की गयी है ।

हर व्यक्ति की अपनी - अपनी अलग पहचान होती है । साहित्य - सृजन करनेवाले साहित्यकार की भी अपनी - अपनी रुचियाँ एवं विचारधाराएँ होती हैं । साहित्यकार एक आम व्यक्ति की तरह, समाज में रहते हुए, सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए भी, समाज के प्रति अपना अलग भावात्मक दृष्टिकोण रखता है ।

भारतीय जीवन प्रणाली में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि मूल्यों का असाधारण महत्व है । परन्तु वर्तमान काल में इन मूल्यों की उपेक्षा की जा रही है । इसका कारण पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाना ही है । यही नहीं, विज्ञान की प्रगति के कारण, मानव जीवन में बहुत ही परिवर्तन आया है ।मनुष्य जीवन में भौतिक सुख -सुविधाओं का महत्व बढ गया है । परिणाम यह हुआ कि सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से पारम्परिक मूल्यों की उपेक्षा होने लगी । मूल्य हीन समाज के कारण ही समस्याएँ निर्माण होती हैं । सुसंस्कृत मानव विकास केलिए

मूल्यों के आचरण की आवश्यकता है । समाज का संचालन कतिपय मूल्यों के आधार पर होता है । मूल्यों के अभाव में अव्यवस्था तथा अराजकता उत्पन्न हो सकती है ।

व्यक्ति और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । सिक्के के दो पहलू होते हुए भी व्यक्ति और समाज दोनों अभिन्न हैं । दोनों एक - दूसरे पर परस्पराश्रित हैं और एक - दूसरे से परस्पर प्रभावित होते हैं ।समाज को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत, सुनियंत्रित तथा स्वच्छ रखने केलिए जिन मूल्यों की आवश्यकता है, उन्हें सामाजिक मूल्य कह सकते हैं । समाज परिवर्तनशील है । जब मूल्यों के ह्रास के कारण समाज पतनशील होने लगता है तो सबसे अधिक संवेदनशील प्राणी साहित्यकार के मन में विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ होती हैं । समाज को पतन से बचाने केलिए फिर सामाजिक मूल्यों की याद दिलाता है । इसके फल स्वरूप व्यक्तियों के आपसी व्यवहार में ऐसा परिवर्तन आ जाता है, जिससे पतनोन्मुख समाज, पतन के गर्त में गिरने से बच जाता है और उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है । ऐसा ही साहित्य कालजयी माना जाता है ।

अतः कह सकते हैं कि सामाजिक मूल्य, लेखक की वह ज्ञानात्मक मनेवृत्ति है, जो उसे समाज के प्रति प्रतिबद्ध रखती है और सशक्त साहित्य की रचना करने केलिए उसे प्रेरित करती है । सामाजिक मूल्य, समाज के निर्माता हैं, जो कि सामाजिक संबंधों में एकता स्थापित करते हैं, आदर्श व्यक्तित्व का विकास करते हैं तथा संस्कृति को सही आधार देते हैं । इसीलिए हिन्दी और तेलुगु साहित्य के दो महान लेखकों की कहानियों के माध्यम से कतिपय सामाजिक मूल्यों की याद दिलाना ही प्रस्तुत शोध - परियोजना का लक्ष्य है ।

प्रस्तुत लघु शोध - परियोजना का शीर्षक है - **' डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक की कहानियों में सामाजिक मूल्य ' ।** शोध कार्य और शोधाध्ययन को ध्यान में रखकर, शोध - परियोजना को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

पहला अध्याय - **'डॉ. जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व '** है । इसमें हिन्दी के प्रमुख दलित लेखक कर्दम जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया । व्यक्तित्व के अंदर, उनका बचपन, शिक्षा, नौकरी, वैवाहिक जीवन तथा संतान के बारे में बताया गया । कर्दम जी बहुमुख प्रतिभाशाली हैं । उन्होंने उपन्यास, कविता, कहानी तथा आलोचना विचार निबंध आदि की रचना की । एक दलित होने के नाते, उनको जिन परिस्थितियों का सामना करना पडा, उसका परिचय भी दिया गया । प्रस्तुत शोध - परियोजना में सिर्फ उनकी कहानियों को ही लेकर अध्ययन किया गया है ।

दूसरा अध्याय - **'डॉ. कोलकलूरि इनाक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व '** है । इसमें पद्मश्री कोलकलूरि इनाक जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया । इसमें उनके बचपन, शिक्षा, नौकरी, वैवाहिक जीवन तथा संतान के बारे में बताते हुए यह स्पष्ट किया गया कि उनका जीवन दलितों केलिए आदर्शवान है । आचार्य इनाक जी का सारा साहित्य, उन्हीं का प्रतिबिंब है, जो उन्होंने स्वयं अपने जीवन में अनुभव किया । समाज की दुर्बलता के प्रति सहानुभूति, मनुष्य की वेदना आदि उनको कवि, रचनाकार,नाटककार, निबंधकार, कहानीकार, उपन्यासकार,आलोचक तथा शोधार्थी बनने के प्रेरक बने । प्रस्तुत शोध - परियोजना में सिर्फ उनकी कहानियों को ही लेकर अध्ययन किया गया है ।

तीसरा अध्याय **- ' सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य ' है ।** इसमें मूल्य की परिभाषा, महत्व, आवश्यकता, वर्गीकरण आदि पर प्रकाश डालते हुए, समाज की संरचना एवं परिभाषाएँ , साहित्य, समाज तथा मूल्य का परस्पर संबंध पर जोर दिया गया डै । सामाजिक मूल्य की परिभाषा देने के साथ - साथ व्यक्ति और समाज का संबंध भी बताया गया है । सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत वैयक्तिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य और समष्टिगत सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया । वैयक्तिक मूल्यों के अंतर्गत - निर्भयता, आत्म - पर्यालोचन, विनम्रता, तेजस्विता, उद्यमशीलता, एक - निष्ठा, स्वाभिमान आदि के बारे में बताया गया । पति - पत्नी, माता - पिता

तथा संतान से संबंधित मूल्य पारिवारिक मूल्यों के रूप में वर्णन किये गये । समष्टिगत सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन,समानता ,सामाजिक रूढियों और कुरीतियों का विरोध ,शोषितों, पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति ,सहयोग, साहस व धैर्य ,नारी का स्वरूप आदि का विश्लेषण किया गया ।

चौथा अध्याय - **'डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में सामाजिक मूल्य** '। इस अध्याय में डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों का अध्ययन करके, उनमें प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्यों का वर्णन किया गया । इस शोध परियोजना का लक्ष्य, इसी अध्याय के माध्यम से पूरा हुआ । दोनों लेखक दलित चेतना से ओतप्रोत हैं और उनकी कहानियों के प्रधान पात्र दलित ही हैं । यही नहीं, दोनों की सामाजिक तथा पारिवारिक परिस्थितियाँ एक जैसी हैं । अतः हिन्दी भाषा के लेखक कर्दम जी और तेलुगु भाषा के लेखक इनाक जी की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करना नितांत उपयुक्त है ।

अंतिम अध्याय और पाँचवाँ अध्याय - **उपसंहार** है । इसमें चारों अध्यायों का निष्कर्ष बताया गया । अगर एक व्यक्ति को अपने जीवन में सफलता पाना है तो उसे निर्भयता, तेजस्विता,विनम्रता, आत्मपर्यालोचन, उद्यमशीलता, एकनिष्ठा, स्वाभिमान, कृतज्ञता आदि मूल्यों को अपनाना चाहिए । आजकल समाज में मूल्यों का जो ह्रास हो रहा है, उसका अवगत करते हुए, यह बताया गया है कि समाज में सभी लोगों को ठीक रास्ते पर जाने केलिए कतिपय मूल्यों को आत्मसात करना नितांत आवश्यक है । दोनों लेखकों की कहानियों में प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्यों के अध्ययन करने का जो प्रयत्न इस शोध परियोजना में किया गया, वह सफल सिद्ध हुआ ।

मुझे बहुत दिनों से तेलुगु और हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन करने का शौक

था । विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग, हौदराबाद ने मुझे लघु शोध परियोजना की अनुमति देकर, जो अवसर प्रदान किया, उसके प्रति मैं बहुत आभारी हूँ। डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी ने समय - समय पर मोबाइल के द्वारा मुझे जो सलाहें दीं और अपनी पुस्तकों की जानकारी देकर मेरे अध्ययन का काम सुगम बनाया, उनके प्रति मैं बहुत - बहुत आभारी हूँ। पद्मश्री ग्रहीता डॉ. कोलकलूरि इनाक जी से साक्षात्कार और मोबाइल के माध्यम से उन्होंने जो भी सलाहें दीं उन केलिए मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। इनाक जी की बेटी डॉ. मधुज्योती के सहयोग के प्रति भी मैं धन्यवाद समर्पित करती हूँ।

अंत में मैं उन सभी लोगों के प्रति आभारी व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग से अपना शोध - कार्य सम्पूर्ण सिद्ध हुआ ।

पहला अध्याय

डॉ. जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पहला अध्याय
डॉ. जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.0. भूमिका :

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा की अभूतपूर्व श्रीवृद्धि हुई । इक्कीसवीं सदी के बाद अनेक साहित्यकारों का आगमन हुआ, जिन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप नवीन साहित्य का सृजन किया । इसका मतलब यह नहीं है कि आजादी के पूर्व श्रेष्ठ साहित्य का सृजन नहीं हुआ, वरन देश के आजाद होने के बाद देश की परिस्थितियाँ बदलीं, समस्याएँ बदली और साथ ही लोगों की मनोवृत्तियों में भी विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए । अतः इन बदली हुई परिस्थितियों के साथ - साथ,साहित्य की दिशा और साहित्यकारों के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक था । इसी कारण हम कह सकते हैं कि आजादी के बाद हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा का तीव्र गति से विकास हुआ है । उस समय जो विभिन्न साहित्यकार आगे आये, उन्होंने अपनी रुचि के अनुसार साहित्यिक विधा का चयन किया । इन्हीं साहित्यकारों की श्रेणी में प्रख्यात लेखक डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी का अद्वितीय स्थान है ।

हर व्यक्ति की अपनी - अपनी अलग पहचान होती है । साहित्य - सृजन करनेवाले साहित्यकार की भी अपनी - अपनी रुचियाँ एवं विचारधाराएँ होती हैं । साहित्यकार एक आम व्यक्ति की तरह, समाज में रहते हुए, सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए भी, समाज के प्रति अपना अलग भावात्मक दृष्टिकोण रखता है । वह अपने अडोस - पडोस के परिचित व्यक्तियों के मानसिक आवेगों, विचारों और व्यवहारों का विश्लेषण करता है और अपनी रचनाओं में उसका प्रस्तुतीकरण करता है । इस प्रकार साहित्यकार की रचना प्रक्रिया में बाह्य और आंतरिक तत्व सहायक होते हैं । किसी भी रचनाकार का साहित्य, उनके व्यक्तित्व रूपी मधुर स्पर्श से अछूत नहीं रह सकता । उनके व्यक्तित्व एवं स्थितिगतियों से उनकी रचनाओं

का प्रभावित होना और उनको अपने साहित्य में उतारना स्वाभाविक है । अतः उनकी रचनाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण केलिए उनके व्यक्तित्व से अवगत होना जरूरी है । इसलिए प्रस्तुत अध्याय में डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया जा रहा है ।

1.1.*कर्दम जी का व्यक्तित्व :*

हिन्दी जगत में दलित साहित्य को सामने लाने,उसको स्थापित करने और परंपरागत हिन्दी साहित्य के समांतर दलित साहित्य के बुनियादी सरोकारों का उजागर करने में जिन दलित साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है, उन दलित साहित्यकारों में डॉ. जयप्रकाश कर्दम एक जाना - पहचाना नाम है । वे दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं और अपने व्यक्तित्व और सृजन कर्म केलिए अपने समकालीनों में काफी चर्चित हैं ।कर्दम जी के जीवन का बहुजन हिताय - बहुजन सुखाय के महत कार्य में योगदान रहा है ।

1.1.1. *जन्म और बचपन :*

डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी का जन्म 17फरवरी, 1959 में उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद के निकट इन्दरगडी नामक गाँव में एक दलित परिवार में हुआ ।लेकिन सरकारी दस्तावेजों में या शैक्षणिक प्रमाण पत्रों में उनकी जन्म तिथि 5 जुलाई, 1958 दर्ज है । परिवार की आर्थिक स्थिति को दृष्टि में रखकर, जल्दी कमाने के उद्देश्य से उनकी जन्म तिथि ऐसी लिखायी गयी । अतः उनकी अधिकारिक जन्म तिथि 5 जुलाई, 1958 ही थी ।

कर्दम जी जब पैदा हुए, तब उनका परिवार बहुत गरीब नहीं था । गाँव के बहुत से लोगों की तरह उनका घर भी भले ही कच्चे तथा मिट्टी का बना हुआ था । उनके पिता के पास थोडा सा खेत, हल - बैल और बैल गाडी भी थे । सामान्य तरीके से घर का गुजारा चल रहा था । जब तक उनके दादा जीवित थे, तब तक घर में किसी की कमी नहीं थी । परन्तु दादा की

मृत्यु के बाद, घर की परिस्थितियाँ बदल गयीं ।

कर्दम के पिता का नाम हरिसिंह और माता का नाम अतरकली है । हरिसिंह मेट्रिक तक अपनी शिक्षा पूरी की थी । उन्होंने मेहनत - मजदूरी करके घर - गृहस्थी चलाते थे । पर दुःख की बात है कि वे ट्यूबरक्युलोसिस (टी.बी) से ग्रस्त थे । बीमारी के कारण वे खेत में काम नहीं कर सकते थे । अतः सारा खेत बिक गये । परिवार का हाल बहुत बुरा बन गया था । इसलिए कर्दम जी की माँ अतरकली, जो अंतरो नाम से पुकारी जाती थी, घर - खेतों में काम करती थी । वह दूसरों के खेतों में भी काम करके, परिवार का पालन - पोषण करती थी ।

हरिसिंह की कुल सात संतानें थी । कर्दम जी दूसरी संतान हैं । उनके तीन भाई और तीन बहनें हैं । अपने भाई - बहनों के बारे में वे कहते हैं -

' भाई - बहन में सबसे बडी बहन है सोनवती, मुझसे दो - तीन वर्ष बडी । उसकी शादी जल्दी ही हो गयी थी जब मैं सातवें कक्षा में पढता था । दूसरे नंबर पर मैं रहा । उसके बाद छोटा भाई रणजीतसिंह । वह दिल्ली में विद्युत विभाग में नौकरी करता है । तीन बच्चों का पिता है । गाजियाबाद में उसका अपना मकान है और उसने अब गाडी भी खरीद ली है । चौथे और पाँचवें नंबर पर दो बच्चे मधुबाला और मालती । मधु (रोहिणी) दिल्ली में रहती है । उसका पति दिल्ली पुलिस में नियंत्रण शाखा में काम करता है । मालती का पति नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन में कर्मचारी है । संदीप कुमार एम.ए. उत्तीर्ण है । उसकी पत्नी अध्यापिका है और ऐटा (उत्तरप्रदाश) में तैनात है । वे वहीं पर रहते हैं । कुलदीप गाँव में रहकर मजदूरी करता है । वह मेट्रिक भी पास नहीं कर सका ।' [1]

1.1.2. *शिक्षा :*

कर्दम जी की पढाई आठवीं कक्षा तक निर्बाध रूप से चली । उनके पिताजी उनको वेल्डिंग का काम सिखाना चाहते थे, ताकि वे जल्दी कमाने लगेंगे और परिवार की

आर्थिक स्थिति सुधर सके । लेकिन अनेक लोग, खासकर कर्दम जी के छोटे दादा फग्गन सिंह ने कर्दम जी के पिताजी को समझाया कि उनकी पढाई न रोके, क्योंकि वे बुद्धिमान हैं । पढाई में वे पहले से ही अच्छा था ।

अपनी पढाई के बारे में स्वयं कर्दम जी कहते हैं - 'पाँचवीं की बोर्ड की परीक्षा में मैं ने अपने स्कूल के साथ - साथ परीक्षा केन्द्र के सभी सात - आठ स्कूलों में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये थे । उसके बाद भी मैं प्रत्येक कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर, प्रथम स्थान प्राप्त करता था ।'[2]

कर्दम जी जब ग्यारहवीं कक्षा में पढते थे तब 1976 में उनके पिताजी का देहान्त हो गया । परिवार में कोई कमानेवाला नहीं था । उनकी माँ मजदूरी करने जाती थी । कर्दम जी भी मजदूरी करने जाते थे ।गरीबी के कारण उनके घर में बिजली भी नहीं थी । अतः लालटेन या डिबरी के उजाले में पढते थे ।

जयप्रकाश कर्दम जी की प्राथमिक शिक्षा उनके गाँव इन्दरगडी में हुई । उन्होंने इन्टमीडिएट विज्ञान विषयों को लेकर पूरा किया । घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने की वजह से उन्होंने बी.एस.सी. न लेकर दर्शन शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी लेकर बी.ए. की उपाधि प्राप्त की । उन्होंने एम.ए.की उपाधि दर्शन शास्त्र, हिन्दी और इतिहास में प्राप्त की । सन. 2000 में रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन - विषय पर मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ से पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की । असल में उनका तो इन्जनीयर बनने का शौक था । पर गरीबी के कारण उनका सपना, सपना ही रह गया । उनकी ही बातों में -

'' मैं विज्ञान का छात्र था । मेरा सपना इन्जनीयर बनने का था, किन्तु मेरी परिस्थितियों ने मेरे सपने को चकनाचूर कर दिया । मैं ने इन्जनीयरिंग फार्म भरा और प्रवेश परीक्षा में भी पास हो गया था । किन्तु फीस केलिए पैसे नहीं होने के कारण प्रवेश नहीं ले सका । फीस केलिए रु.140 नहीं होने के कारण, मैं उस वर्ष बी.एस.सी. में भी प्रवेश नहीं ले सका था । शिक्षा की दृष्टि से मेरे जीवन का यह एक महत्वपूर्ण वर्ष व्यर्थ हुआ । इसका मुझे आज तक दुःख है ।''[3]

इस प्रकार कर्दम जी का सपना पूरा न होने पर भी, वे एक उच्च शिक्षित विद्वान बन गये । उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई उपाधियों को कठोर परिश्रम के साथ प्राप्त किया । कुछ न कुछ पढते रहना उनकी आदत बन गयी । उन्होंने धर्म और संस्कृति से लेकर, उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, जीवनी, आत्मकथा जो कुछ मिला सब पढा । वे जितना पढते गये, उनकी पढने की भूख और बढती गयी ।

1.1.3. *नौकरी :*

जयप्रकाश कर्दम जी की नौकरी की शुरुआत सन.1980 में उनकी बी.ए. की पढाई के दौरान हो गयी थी । सबसे पहले गाजियाबाद में ही बिक्री कर विभाग में अमीन बना । सन.1984 में बिक्री कर विभाग की नौकरी से त्यागपत्र देकर विजया बैंक में प्रवेश किया । अपनी नौकरी के बारे में कर्दम जी कहते है -

'सबसे पहले बिक्री कर विभाग में अमीन बना गाजियाबाद में । फिर क्लर्क के पद पर दो - तीन साल काम किया । सन.1984 में बैंक नौकरी में चला गया । पहली नियुक्ति इलाहाबाद में हुई । फिर स्थानांतरित होकर, मेरठ आ गया । इस दौरान, इतिहास में भी एम.ए. की उपाधि हासिल की और सिविल सर्वीस की परीक्षाओं में भाग लिया ।उत्तर प्रदेश की पी.सी.एस.की परीक्षा दो बार पास की ।पहली बार साक्षात्कार में सफल नहीं हो सका । दूसरी बार अधीनस्त सेवा में सफल हुआ ।नायब तहसीलदार के पद पर मेरी नियुक्ति हुई , जिसे मैं ने स्वीकार नही किया । सन. 1989 में संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से केन्द्रीय सचिवालय, राजभाषा सेवा में सहायक निर्देशक के पद पर चयनित हुआ । सन. 1996 में पदोन्नत होकर, उपनिदेशक बना । अब भारतीय उच्च आयोग, पोर्ट लुई (मारिशस) में द्वितीय सचिव (शिक्षा एवं संस्कृति) के पद पर प्रतिनियुक्त पर कार्यरत हैं । यह नियुक्ति भी संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से हुई है ।' [4]

कर्दम जी को अनेक जिम्मेदारियाँ अपने कंधें पर लेना पडा । एकमात्र कमानेवाले

व्यक्ति केलिए इतने बडे परिवार की आजीविका, सभी भाई - बहनों की पढाई - लिखाई और बहन की शादी, यह सब आसान नहीं था । आर्थिक अभाव के अलावा मानसिक तनाव भी रहता था । फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी । स्वयं उनकी ही बातों में यह व्यक्त होता है -' मैं अपने गाँव का पहला व्यक्ति था, जो केन्द्रीय सरकार में राजपत्रित अधिकारी बना । .....इस तरह मेरी जीवन यात्रा आगे बढती रही । नौकरी के साथ - साथ मैं उच्च अध्ययन करता रहा और अच्छी नौकरी केलिए प्रतियोगी परीक्षाएँ देता रहा और लेखन - कार्य भी करता रहा ।' [5]

1.1.4. *वैवाहिक जीवन तथा संतान :*

कर्दम जी का विवाह 16 अक्तूबर 1988 में तारा जी से बौद्ध पद्धति में हुआ । तारा जी उच्च शिक्षित हैं । वे एम.ए. हिन्दी और बी.एड. उत्तीर्ण हैं । अब वे दिल्ली की सरकारी पाठशाला में अध्यापिका का काम कर रही हैं । कर्दम जी तीन बच्चों के पिता हैं । उनकी बडी बेटी कम्पिला कर्दम एम.बी.बी.एस. में उत्तीर्ण हैं और अब उच्च शिक्षा में स्थान पाने केलिए प्रतियोगिता परीक्षा लिखने की तैयारी कर रही हैं । छोटी बेटी विशाखा कर्दम अंग्रेजी में एम.ए. करके एम.फिल भी पूरा की है । अब उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय की अनुबंध कलाशाला में प्राचार्य का काम कर रही हैं । बेटा कुनाल कर्दम एन.एस.ऐ.टी. नई दिल्ली में कम्पूटर विज्ञान में इन्जनीयरिंग पढ रहे हैं । कर्दम जी अपने परिवार से संतुष्ठ हैं ।

उनकी ही बातों में यह स्पष्ट मालूम होता है - ''जीवन के कंटीले - पथरीले, ऊबड - खाबड दुर्गम रास्तों और तंग गलियों से गुजरते हुए मैं खुली सडक तक पहुँचा हूँ । मैं अपने जीवन से संतुष्ठ हूँ ।''[6]

जयप्रकाश कर्दम जी सीदा - सादा जीवन बिताना पसंद करते हैं और साधारण तरीके का खानपान पसंद करते हैं । उन्हें हरे पत्तेवाली सब्जियाँ, फल और दूध पसंद हैं । वे साधारण जिंदगी बितानेवाले उच्च विचारों के महान पुरुष हैं ।

1.1.5. *साहित्य जगत में पदार्पण :*

जयप्रकाश कर्दम जाने - माने एक प्रमुख दलित लेखक हैं । अपनी साहित्य -रचना के प्रेरणा स्रोत के बारे में वे स्वयं कहते हैं -

''मेरे साहित्य - सृजन के मूल प्रेरणा स्रोत तो मेरी परिस्थितियाँ रहीं । सन.1976 में पिताजी की मृत्यु के पश्चात, संघर्ष के उस दौर में जब अभाव और उदासी के अलावा जीवन में कुछ भी नहीं था । केवल किताबें ही एक मात्र सहारा थीं । उन्हीं में मैं जिंदगी की उम्मीदें ढूँढता था । जो पढता, उसी पर सोचता रहता था । उसी को अपने जीवन से जोडकर देखता था ।''[7]

कर्दम जी का बचपन दुखों में बीता । जब वे इंटर कालेज में पढते थे, उस समय दिनभर मजदूरी करके, रात में देर तक पढते थे । जब वे बी.ए. पढते थे तब उनके चाचा डॉ.कमल ग्रंथालय से अनेक किताब लाया करते थे । उन सभी पुस्तकों को कर्दम जी पढने लगे । उन्होंने उस समय प्रेमचन्द के लगभग सारे उपन्यास और कहानियाँ पढीं । उनके साथ - साथ कर्दम जी ने रबीन्द्रनाथ ठाकुर की आत्मकथा के तीनों खंड, मेक्सिम गोर्की की किताबें, चार्ल डिकेस और हारेल राबिन्स के अनुवाद भी पढे । उन किताबों से उनको लिखने की प्रेरणा मिली । इसलिए पहले वे पत्रकारिता को चुना और गाजियाबाद से निकलनेवाले कुछ साप्ताहिक और पाक्षिक अखबारों के संवाददाता बने । यहीं से धीरे - धीरे कहानी, कविताएँ और उपन्यास लिखने की शुरुआत हुई । इस प्रकार सन. 1974 के आसपास से उनकी अनेक रचनाएँ पत्र - पत्रिकाओं में छपने लगीं ।

सन.1983 में उन्होंने एक छोटी सी किताब 'वर्तमान दलित आंदोलन' लिखी । इस किताब में उन्होंने दलित समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पहलुओं पर छोटी चर्चा करते हुए, उनके उपाय भी सुझाए कि कैसे हम राजनीतिक और सामाजिक ताकत पा सकते हैं । इसी दौरान उन्होंने तीन उपन्यास लिखे । पर दुख की बात है कि

तीनों उपन्यास नहीं छापे गये । इस प्रकार उनके पहले तीन उपन्यास ऐसे ही बेकार चले गये । इसके बारे में कर्दम जी अपने भाव व्यक्त करते हुए बताते हैं -

''मुझे दुख है कि उन तीनों उपन्यास गुम हो गये, क्यों कि वे मेरी प्रारंभिक कृतियाँ थीं और अपनी प्रारंभिक रचनाओं से हर लेखक का एक गहरा लगाव होता है । भले ही हम आगे कितनी ही परिपक्व रचनाएँ दे दें, लेकिन हमने मेजिल जहां से शुरू की या चलना सीखा, उन पगडंडियों से तो हमें प्यार होता ही है ।''[8]

कर्दम जी का उपन्यास **'करुणा'** सन. 1986 में छपा था । उन पर बौद्ध दर्शन का तथा अम्बेड्कर के जीवन का बहुत प्रभाव है । बौद्ध दर्शन में समता का मूल्य सर्वोपरि है । इस प्रकार कर्दम जी ने साहित्य जगत में पदार्पण किया ।

1.1.6. पुरस्कार एवं सम्मान :

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित दलित लेखक कर्दम जी ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की, वह चिर स्मरणीय है । उनकी साहित्य सेवा तथा सामाजिक कार्यों से संतुष्ठ होकर, भारत के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया ।

- उत्तरप्रदेश के समाज विकास संगठन द्वारा डॉ.बाबा साहेब अम्बेड्कर रत्न पुरस्कार
- भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा संत रैदास सम्मान
- राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा साहित्य सारस्वत सम्मान
- मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा क़ृति सम्मान
- भारतीय दलित साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश द्वारा ज़ंत कबीर सम्मान
- भारतीय दलित साहित्य अकादमी,दिल्ली द्वारा डॉ.बाबा साहेब अम्बेड्कर राष्ट्रीय सम्मान
- भारतीय दलित साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा डॉ.बाबा साहेब अम्बेड्कर अस्मिता सम्मान

- बहुजन अन्याय एक्शन समिति, अमरावती (महाराष्ट्र) द्वारा सम्मान
- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार , (राष्ट्रपति, प्रणब मुखर्जी के हाथों से) - सन. 2017
- हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली द्वारा , वरिष्ठ योगदान सम्मान (2016 - 2017)
- वाणी फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा , हिन्दी सेवी सम्मान (2017)

कर्दम जी को जो सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए, उनसे यह पता चलता है कि हिन्दी साहित्य केलिए उनकी सेवा अविस्मरणीय है ।

1.1.7.व्यक्तित्व के विविध पहलू - दलित चिंतक :

जयप्रकाश कर्दम जी के जीवन को देखने से यह पता तलता है कि वे सीदा -सादा, निर्मल मन के प्रसन्न व्यक्ति हैं । उनके व्यक्तित्व के बारे में डॉ.सुनील बनसोडे कहते हैं -

''उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं में संघर्षशील, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ प्रेरणादायी, मानवतावादी मूल्यों के अनुयायी आदि विविध पहलुओं से संपन्न एक आदर्श साहित्यकार और व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं ।''[7]

कर्दम जी परिवेश के अनुकूल अपने जीवन को दिशा देनेवाले हैं । उनके व्यक्तित्व का प्रभाव, उनके साहित्य पर भी दिखाई देता है । वे अपने परिवार से भी बहुत प्रभावित हैं । उनके चाचा हरपाल सिंह ने उन्हें श्रम, संघर्ष और संयम का महत्व बताया । वे ही कर्दम जी के प्रेरणास्त्रोत हैं । यही रहीं, वे गौतम बुद्ध, सन्त कबीर, सन्त रैदास आदि समाज सुधारकों से तथा डॉ.बाबा साहेब अम्बेड्कर से प्रेरित हैं और उनका प्रभाव कर्दम जी पर बहुत गहरा दिखाई पडता है ।

कर्दम जी के व्यक्तित्व को देखने से यह स्पष्ट होता है कि वे शिक्षा, स्वातंत्र्य और अनुशासन को महत्वपूर्ण मानते हैं तथा घनिष्ठ मित्रता को भी उच्च स्थान देते हैं ।

वे अनुशासन को जीवन में सर्वोत्कृष्ट मानते हैं और अनुशासन पालन को प्रगति की सीढी मानते हैं । उनकी संतान को देखने से यह साबित होता है कि वे अनुशासन को कितना महत्व देते हैं और कैसे उसका पालन करते हैं । उन्होंने अनेक समस्याओं को झेलते हुए भी, अनुशासन युक्त जीवन बिताने के कारण ही आज उच्च पदस्थ अधिकारी बने हैं । इसीलिए

''डगर से लेकर राजपथ तक के संघर्षशील यात्री के रूप में उनका जीवन उभरा है । ''[10]

जो लोग सदियों से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शोषण, भेदभाव और दमन के शिकार तथा मानवीय अधिकारों से वंचित रहे हैं, वे ही दलित हैं । दलित समाज में सदियों से सामाजिक, आर्थिक शोषण, अन्याय और उत्पीडन के विरुद्ध प्रतीकार और साथ ही आत्म सम्मान और स्वाभिमान से जीने की भावना का पैदा होना ही दलित चेतना है । दलित चेतना, दलित साहित्यकारों की रचनाओं में देखने को मिलती है ।

जयप्रकाश कर्दम जी का जन्म एक दलित परिवार में होने के कारण, दलित जीवन की समस्याओं को उन्होंने नजदीक से देखा और अनुभव भी किया । अपने इन्हीं अनुभवों को उन्होंने अपनी रचनाओं में रेखांकित किया । जो भोगता है, अपने जीवन के बारे में उसकी अभिव्यक्ति ही सत्य और प्रामाणिक हो सकती है । अतः स्वानुभूति, दलित साहित्य का एक बहुत बडा आधार है । यही नहीं, दलित लेखक सामाजिक या मनोवैज्ञानिक दबाव से मुक्त रहता है । इसीलिए उनकी अभिव्यक्ति, ज्यादा स्पष्ट, मुखर और सार्थक हो सकती है । दलितों ने जैसा जिया, भोगा, महसूस किया, वही साहित्य में अभिव्यक्त किया गया, क्योंकि राख ही जानती है, जलने की पीडा । जो जला नहीं, वह उस पीडा का अनुभव नहीं कर सकता ।

दलित लेखक सामाजिक या मनोवैज्ञानिक दबाव से मुक्त रहता है । इसीलिए उसकी अभिव्यक्ति ज्यादा स्पष्ट, मुखर और सार्थक हो सकती है । दलित साहित्य के बुनियादी सरोकारों को उजागर करने में, जिन दलित साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान

है, उन दलित साहित्यकारों में डॉ. कर्दम जी का जाना पहचाना नाम है । वे गौतमबुद्ध, कबीर, महात्मा फूले तथा अम्बेडकरवादी विचारों के अनुयायी हैं । इन्होंने आस्था के साथ दलित जीवन का यथार्थ चित्रण किया है ।

साहित्य - सृजन के संदर्भ में कर्दम जी कहते हैं -

''मेरा गाँव अम्बेडकरवादी विचारों से परिचित और प्रभावित एक बहुल गाँव है । आजादी के बाद की पीढी बाबा साहेब अम्बेडकर जी के विचारों से परिचित हुई तथा गाँव में बौद्ध धर्म और अम्बेडकर जी का प्रचार - प्रसार हुआ । बचपन से ही मैं इन विचारों के सम्पर्क में आया । सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यकलापों में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए मस्तिष्क में दलित प्रश्न कुलबुलाने लगे । व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना मन में पैदा होने लगी और जब लिखना शुरू किया तो स्वाभाविक रूप से ये सब बातें, ये प्रश्न मेरी रचनाओं का विषय बनने लगे । ''[11]

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कर्दम जी पर बाबा साहेब के विचारों का प्रभाव बहुत अधिक है और उसी से प्रेरणा लेकर, उन्होंने साहित्य सृजन किया ।

जयप्रकाश कर्दम जी एक श्रमसाध्य रचनाकार तथा अध्ययनशील व्यक्ति हैं । उन्होंने अपने जीवन के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहते है -

'' मैं मानता हूं कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त हमारा जीवन जीने केलिए है और सबको समान रूप से जीने का अधिकार और अवसर होना चाहिए । जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण, सदैव रचनात्मक रहा है । विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाये रखकर,हमें आगे बढने केलिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए । जीवन में सफलता केलिए परिश्रम, आत्मविश्वास तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का होना आवश्यक है । संघर्ष और आपदाएँ हमें मजबूती प्रदान करती हैं, हमें ताकत देती हैं । '' [12]

अतः कर्दम जी सकारात्मक विचारों को महत्व देनेवाले हैं तथा जीवन में परिश्रम, आत्मविश्वास तथा ईमानदारी को महत्वपूर्ण मानते हैं ।

कर्दम जी के बारे में डॉ.सुनील बनसोडे तथा श्री सचिन कांबले का विचार है - ''जयप्रकाश कर्दम साधारण तरीके से रहना और साधारण तरीके का खानपान पसंद करते हैं । उन्हें हरे पत्तेवाली सब्जियाँ, फल और दूध पसंद हैं । जयप्रकाश कर्दम सारे रहन - सहन और उच्च विचारों के पुरस्कर्ता हैं ।''[13]

1.2. *जयप्रकाश कर्दम जी का कृतित्व :*

डॉ. जयप्रकाश कर्दम एक बहुआयामी प्रतिभावाले साहित्यकार एवं चिंतक हैं । कविता, कहानी और उपन्यास लिखने के अलावा, दलित समाज की वस्तुगत सच्चाइयों को सामने लानेवाली अनेक निबंध व शोध पुस्तकों की रचना व संपादन भी उन्होंने किया है । उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान है - उनके संपादन में प्रति वर्ष निकलनेवाली दलित साहित्य वार्षिकी, जो दलित सोच और सृजन का एक बुनियादी आधार बन गयी है ।

1.2.1.*उपन्यास साहित्य :*

जयप्रकाश कर्दम जी ने दो उपन्यासों की रचना की - छप्पर और करुणा । उनके उपन्यासों का उद्देश्य जाति - पांति को तोडकर, समान समाज की रचना करना है ।

1.2.1.1. *छप्पर :*

कर्दम जी का उपन्यास **छप्पर** सन. 1994 में समता प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास पश्चिमी उत्तरप्रदेश में मातापुर नामक गाँव की कहानी है । जहाँ अधिकांश दीन - दरिद्र और कुछ सुखी - संपन्न ब्राह्मण - पुरोहित, ठाकुर - जमींदार रहते हैं, वहीं है एक घर या जिसे सिर्फ छप्पर कहें, के नीचे सुक्खा और रमिया अपने कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं । उनका बेटा चंदन शहर में पढ रहा है, जिसका विरोध, गाँव के सभी सवर्ण पंडे और ठाकुर साहब करते हैं । दूसरी ओर रमिया का सपना है कि उसका बेटा दारोगा या कलेक्टर बने, ताकि वह गाडी में घूम सके । सुक्खा और रमिया -

दोनों इस विरोध का सामना करते हैं । परिणाम स्वरूप उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया जाता है और एक दिन उनका छप्पर भी छीन लिया जाता है । यहीं से उपन्यासकार दलितों - शोषितों की संघर्ष गाथा आगे बढाता है । इसमें दलित जीवन के शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया गया है । **'छप्पर'** उपन्यास दलित जीवन के परिवेश को केन्द्र में रखकर, दलितों में सामाजिक जागृति के प्रगतिशील विचारधारा को प्रवाहित करता है ।

1.2.1.2. *करुणा :*

जयप्रकाश कर्दम जी का लघु उपन्यास 'करुणा' सन. 1986 में भारत - सावित्री प्रकाशन, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास मानवीय जीवन की घार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विवशताओं को दर्शाता है । इस उपन्यास के माध्यम से कर्दम जी ने समाज में उत्पन्न समस्याओं पर कडा प्रहार किया है । बुद्ध के मूल सिद्धांत, करुणा, मैत्री, बहुजन - हिताय, बहुजन - सुखाय आदि को पाठकों तक पहँचाने का प्रयास किया गया है ।आज के व्यस्त जीवन में यह लघु उपन्यास अत्यंत रोचक एवं सराहनीय है । इस उपन्यास में समता, स्वातंत्र्य, बन्धुता और न्याय जैसे मानवतावादी मूल्यों का प्रचार तथा प्रसार किया गया है ।

'' बुद्ध के सिद्दांतों में ऐसी ही उत्कट प्रेरणा है, जिन्हें अपनानेवाले सब लोग एक - दूसरे के साथ प्रेम और सद्भाव से रहते हैं । भगवान बुद्ध के सिद्धांतों में न्याय के प्रति आग्रह है । समता, मैत्री और भाईचारा - इन सिद्धांतों का मूल है । इसी से सम्पन्न समाज का निर्माण हो सकता है । भगवान बुद्ध के मध्यम मार्ग तो अपनाने से ही समाज समुन्नत एवं सुविकसित होता है । ''[14]

उक्त कथन से करुणा उपन्यास में निहित उद्देश्य स्पष्ट हुआ है ।

1.2.2. *कविता संग्रह :*

कर्दम जी ने दो कविता - संग्रहों की रचना की - गूँगा नहीं था मैं और तिनका - तिनका आग ।

1.2.2.1.*गूँगा नहीं था मैं :*

कर्दम जी का पहला कविता - संग्रह, 'गूँगा नहीं था मैं ' - का प्रकाशन सन.1999 में हुआ । इस काव्य - संग्रह में समाज में व्याप्त विषमता,जाति भेद आदि का चित्रण किया गया । कर्दम जी ने दलित वर्ग को महत्व देकर, उसकी उपेक्षा, वेदना, पीडा एवं असहायता को अपने काव्य का विषय बनाया । उन्होंने उपेक्षित दलित वर्ग को काव्य - रूप दिया । रूढि, परंपरा की आड में सवर्ण वर्ग ने दलितों की स्थिति पशु से भी बदतर बनायी । कर्दम जी ने इस काव्य-संग्रह में दलित वर्ग में स्थित अनेक समस्याओं का सजीव चित्रण किया ।

1.2.2.2. *तिनका - तिनका आग :*

कर्दम जी का दूसरा कविता - संग्रह, 'तिनका - तिनका आग ' का प्रकाशन सन. 2004 में हुआ । इसमें हमें भूख, सांप्रदायिकता, उत्पीडा और जाति - भेद का वर्णन मिलता है । इन कविताओं में परंपराओं के और प्रथाओं से मुक्त होने का आदर्श मिलता है । अतः कह सकते हैं कि कर्दम जी की कविताओं में परिवर्तन की गूँज है ।

1.2.3. *कहानी - संग्रह :*

कर्दम जी की कहानियाँ, दो संग्रहों में प्रकाशित किया गया - तलाश और खरोंच ।

1.2.3.1. *तलाश*

कर्दम जी पहला - संग्रह **'तलाश'** का प्रकाशन सन. 2005 में हुआ । इस संग्रह में कुल मिलाकर 12 कहानियाँ हैं, जो दलित चेतना और सामाजिक मूल्यों का जीता - जागता स्वरूप है । तलाश कहानी संग्रह की बारह कहानियाँ हैं - तलाश, साँग, नो बार, मोहरे, बिट्टन मर गयी , मूवमेंट, लाठी, जरूरत. जहर, कामरेड का घर, गँवार तथा शीत लहर ।

कर्दम जी दलित साहित्य के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं । हिन्दी दलित साहित्य की स्थापना केलिए जितना रचनात्मक संघर्ष उन्होंने किया, वह बेजोड तथा अविस्मरणीय है ।

दलित साहित्य को ऐसे साहित्यकर्मियों की तलाश है, जिनमें सच कहने का साहस एवं धैर्य हो । कर्दम जी को विषमतारहित एवं शोषणरहित समाज की तलाश है ।

तलाश कहानी के नायक रामवीरसिंह को केवल किराए घर की तलाश नहीं, बल्कि उसे ऐसे घर का तलाश है, जहाँ विभेद न हो । यह तलाश उसे थकाती जरूर है, लेकिन वह चंद सुविधाओं के बदले उपनी तलाश छोडने राजी नहीं । वे वही करते हैं, जो ठीक है । इस मामले में कहानी का नायक जाति के बंधनों का प्रतिनिधित्व करता है । उन्हें गुप्ता का मकान खाली करना तो मंजूर था, किन्तु दलित नारी रामवती से खाना बनवाना वे नहीं छोडते । यही इस कहानी का महत्वपूर्ण बिंदु है, जहाँ से अस्मिता की लडाई शुरू होती है । इसके बाद वे दफतर जाने के बजाय, नये मकान की तलाश में निकल पडते हैं । उसे ऐसे घर की तलाश है, जहाँ जाति का विभेद न हो ।

कर्दम जी की कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक शोषण संबंधी अनेक प्रश्न उठाती हैं । वर्ण, वर्ग रहित समाज रचना का स्वप्न इन कहानियों में दिखायी पडता है और समाज परिवर्तन की आवाज भी इन कहानियों में सुनायी पडती है ।

'सांग' नामक कहानी की नायिका चम्पा एक साधारण खेतीहर मजदूर है । जब शीला साँग देखने को उसे बुलाती है तो उसे अपने पति भुल्लन की याद आती है । एक हफ्ते से बीमार भुल्लन मुखिया से छुट्टी माँगता है । हफ्ते भर एक जगह पडे रहकर, वह ऊब चुका । अतः लाठी के सहारे थोडी देर साँग देखने आता है तो मुखिया के क्रोध का शिकार बन जाता है । मुखिया के मार - पीट से अंतिम साँस लेता है । चंपा को जब ये सारी बातें याद आती हैं तो उसमें अन्याय और शोषण के विरोध की चिनगारी पैदा होती है और वह एक निश्चय के साथ साँग देखने जाती है । जब मुखिया उस पर हाथ उठाने लगता है, तो गंडासे से उसके सिर पर प्रहार कर दो फॉक कर देती है । इस प्रकार एक अबला नारी सबला बनकर, अन्याय का प्रतिशोध लेती है ।

'नो बार' डॉ. कर्दम जी की बहु चर्चित कहानी है । मराठी भाषा के साथ - साथ अन्य भाषाओं में भी इसका अनुवाद किया गया । पढे - लिखे समाज की कथनी और करनी में कितना अंतर होता है, उसका जीता - जागता वर्णन इस कहानी में स्पष्ट दिखायी पडता है । अपने आपको प्रगतिशील कहनेवाले लोगों को यह कहानी बेनकाब करती है और असली चेहरा सामने लाती है । एक पिता के द्वारा अपनी बेटी की शादी केलिए अखबार में ऐसा विज्ञापन दिया गया - 'जाति - बंधन रहित अच्छा लडका चाहिए ।' किन्तु जब शादी निश्चित होने का समय आता है तो पिता अपनी बेटी से पूछता है कि लडके की जाति कौन सी है । कहानी में व्यंग्य के साथ - साथ वैचारिक विषमता का परिचय भी किया गया है ।

'मोहरे' एक ऐसी कहानी है, जिसमें सत्यप्रकाश नामक शिक्षक को जाति से दलित होने के कारण, हाशिए पर रखा जाता है । विद्या मंदिर जैसे पवित्र क्षेत्र में ऊँच - नीच का भाव नहीं होना चाहिए । किसी दलित का बुद्धिमान और परिश्रमी होना, गैर दलितों को पसंद नहीं होता । किसी न किसी घटना में उसे अटकाकर सबकी नजरों में गिराने का षडयन्त्र रचाया जाता है । आखिर उसका स्थानांतरण किया जाता है । यथा दलित होने की सजा उसे मिलती है ।

'बिट्टन मर गयी' कहानी में एक सवर्ण लडकी की शादी, गल्ती से एक दलित लडके के साथ होती है । जब सच पता चलता है तो लडकी के माता - पिता, उसे पति के पास नहीं भेजते । जाति की दीवार इतनी मजबूत है कि उसके सामने बिट्टन और उसका पति पराजित होते हैं । बाद में बिट्टन मुन्ना नामक युवक से भाग जाती है और वहाँ वह जलाकर मार दी जाती है । शादी के बाद भी मात्र जाति के कारण पति - पत्नी एक साथ नहीं रह सकते ।

मूवमेंट कहानी के द्वारा डॉ. कर्दम एक दलित स्त्री के मन की आवाज को स्पष्ट करते हैं । दलित आंदोलन में काम करनेवाले कार्यकर्ता स्त्री - पुरुष की बराबरी के बारे में भाषण

तो देता है । लेकिन पत्नी सुनीता को कभी अपने साथ नहीं ले जाता । इसीलिए सुनीता अपने पति से पूछती है -

''क्या यही प्रगतिशीलता है तुम्हारी कि बाहर जाकर अन्याय और असमानता के खिलाफ भाषण झाडो और खुद घर में असमानता का व्यवहार करो । यह मूवमेंट है तुम्हारा ?''[15]

कहानीकार का संदेश है कि मूवमेंट तभी पूरा होगा, जब अपने ही घर में जो कंधे से कंधा मिलाकर काम करना चाहता है, उसे भी साथ लेकर काम किया जाय ।

कर्दम जी की **लाठी** कहानी दलित जीवन का खुलासा है । दलितों की नयी पीढी में अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना पैदा हुई है । जब उसके अधिकार उसको नहीं दिये जाते या उससे छीने जाते हैं, तब वह क्रोध से भर जाता है और अपने हक की लडाई लडता है । **लाठी** कहानी का नायक फग्गन इसका प्रतिनिधि है । इसमें वह, लाठी का जवाब लाठी से देना चाहता है । भारतीय समाज की रगों में आज भी जाति - पांति का जहर दौड रहा है । मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि उसके भीतर इन्सानियत शेष नहीं रह गयी है । हरिसिंह एक दलित है । उसका खेत पुलिया के निकट मढैया के बदनी जाट के खेतों से लगा हुआ है । खेत केलिए पानी देने का प्रत्येक का एक दिन नियत होता है । जब हरिसिंह की बारी आती है, तो बदनी पानी न छोडकर, उसको लाठी से मारने लगता है । तब हरिसिंह का चाचा फग्गन, लाठी का जवाब लाठी से ही देना ठीक समझता है ।

'जरूरत' कहानी में बताया गया है कि हर एक व्यक्ति केलिए सेक्स एक जरूरत है, चाहे वह दलित हो या सवर्ण जाति का हो । शरीर केलिए प्रकृति से दिये गये कुछ धर्म होते हैं । उन जरूरतों में भेद - भाव या जाति - पाँति नहीं होते । अपनी जरूरत पूरी करने केलिए संगीता नामक सवर्ण लडकी, कहानी का नायक, जो दलित है, उसके पास आधी रात

के समय जाती है । सिर्फ अपनी सेक्स की भूख मिटाने केलिए संगीता दलित युवक के पास जाती है ।

'जहर' कहानी में विश्वंभर एक दलित है । वह तांगा चलाकर, गुजारा करता है । एक दिन उसके तांगे में एक पंडित बैठता है और दलितों के बारे में उपेक्षा की भावना व्यक्त करते हुए अनाप - शनाप बकता है । पंडित की बातों से उसके मन में छिपी जहर प्रकट होता है । इससे विश्वंभर की पीडा असहनीय होकर, विद्रोह के रूप में फूट पडती है और वह पंडित को बीच रास्ते में ही उतार देता है, जहाँ मनुष्य का संचार भी नहीं है । अतः विश्वंभर ईंट का जवाब पत्थर से देता है ।

'कामरेड का घर' कहानी ढोंगी मार्क्सवाद पर एक करारा व्यंग्य है । अभय तिवारी मार्क्सवादी है,किन्तु इसके बावजूद उसके संस्कार सनातनी है । उसकी कथनी और करनी में आकाश - पाताल का अंतर है । असलम के घर जाकर,तिवारी मांस भी खाता है ।लेकिन अपने घर में असलम को उसका टिफिन का डिब्बा खोलने नहीं देता, क्योंकि उसमें अंडे हैं । तिवारी का व्यवहार देखकर असलम को दुःख होता है । इस प्रकार तिवारी आचरणरहित मार्क्सवादी है ।

'गँवार' कहानी के द्वारा कर्दम जी यह कहना चाहते हैं कि शिक्षित व जागरूक दलित भी कभी - कभी जीवन की सच्चाई को समझते नहीं हैं । नयी पीढी सपनों की दुनिया में जीती है । सपनों से जमीन पर आने केलिए उन्हें काफी समय लगता है । यह पीढी पैसों को अधिक महत्व देती है । इन केलिए शिक्षा, योग्यता और बुद्धिमत्ता पैसों के सामने गँवार लगती है । इस कहानी में प्रभात, आभा नामक लडकी से शादी करना चाहता है । आभा के सपने गाडी, बंगला और पैसे देखते थे । प्रभात कुशाग्र और बुद्धिमान युवक था । किन्तु उसके पास उस समय गाडी, बंगला नहीं था और न अच्छी नौकरी भी । अतः एक गँवार कहकर, आभा उससे शादी करने केलिए इनकार कर देती है । बाद में ऊपरी चमक - धमक से आकर्षित होकर, आभा

किसी अन्य व्यक्ति से शादी करती है, जो थोडे ही दिनों में मर जाता है । उसके बाद रमेश नामक शादी - शुदा और शराबी व्यक्ति के साथ रहती है । यह जानकर प्रभात बहुत दुःखित होता है । अब प्रभात के पास गाडी, अच्छा मकान और अच्छी नौकरी है । किन्तु आभा के पास दुखों के सिवा कुछ नहीं है ।

'शीतलहर' कहानी में ऐसे लोगों के प्रति कर्दम जी आक्रोश व्यक्त करते हैं, जो खुले आकाश के नीचे सब सुविधाओं से वंचित व्यवस्था और प्रकृति की मार झेलते जीनेवाले हैं । चन्द्रप्रकाश ने द्वारका में एक फ्लैट खरीदा । एक बार अपनी पत्नी के साथ फ्लैट देखने गया । उस समय शीत लहर काफी थी । सडक के किनारे रहनेवाले लोगों की शीत लहर के कारण हुई अवस्था उसे बेचैन करती है । उसके मन में विचार आता है कि अपना फ्लैट खाली है, क्यों न इन लोगों को अपने घर में आश्रय दे । लेकिन सोसाइटी के लोग तथा उसकी पत्नी इसे नहीं मानते । यहाँ सामाजिक विसंगतियाँ स्पष्ट होती हैं । चन्द्रप्रकाश तो इन लोगों की सहायता करना चाहता है, लेकिन कर नहीं पाता । व्यवस्था के साथ - साथ प्रकृति भी इन लोगों के खिलाफ होती है । अतः हमारे पास इन लोगों के प्रति सिवाय सहानुभूति है ।

1.2.3.2. ***खरोंच :***

कर्दम जी की कहानियों का द्वितीय संग्रह **खरोंच** है, जिसका प्रकाशन स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली के द्वारा सन. 2014 में हुआ । इसमें कुल मिलाकर 12 कहानियाँ हैं । वे हैं - सूरज, छिपकली, खरोंच, पेंशन, हाउसिंग सोसाइटी, मजदूर खाता, रास्ते, मानीटर, गोष्ठी, पगडी, मंगलसूत्र तथा मंदिर ।

'सूरज' कहानी का नायक सूरज, कलाशाला में अभी नया विद्यार्थी है । इसलिए कुछ डरता था । सुमन लता से 'ऐ लव्यू 'बोलने केलिए सीनियर्स उसे तंग करते हैं । धीरे - धीरे सुमन और सूरज का परिचय बढने लगा । सुमन उसमें धीरज बाँधने लगी ।

उससे सूरज कलाशाला में अपना स्थान जमाने लगा । डॉ. अम्बेडकर जयंती के समय अनेक दलित विद्यार्थियों को एकत्रित करने में वह सफल हुआ ।जयंती कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया । इस प्रकार सूरज अपने लिए एक स्थान रखने में सफल हुआ । इसका परिणाम यह निकला कि सूरज की मृत्यु हो गयी और उसे आत्महत्या का रूप दिया गया । दलित छात्र तो जोश में नारे लगाने लगे - ''यह दलित दमन की सत्ता है - मौत नहीं, यह हत्या है ।'' सुमन भी सबके सामने कहती है कि सूरज, आत्महत्या करनेवाला कायर नहीं । इस प्रकार कर्दम जी संदेश देते हैं कि मौत का भी धीरज से सामना करना चाहिए ।

' छिपकली ' कहानी में एक छोटी घटना का वर्णन किया गया है । इसमें सरवन एक अनुशासन बद्ध विनम्रतापूर्ण नौकर है । साहब जैसे ही घंटी बजाते, वह तुरंत साहब के सामने हाजिर हो जाता था और साहब जो भी काम करने को कहते, वह पूरी मस्तौदी से कर देता । उसके साथ - साथ ईमानदारी भी बरतता था । सरवन को एक कमजोरी थी कि वह छिपकली से डरता था । भूत - प्रेत से तथा जंगली जानवरों से तथा साँप से भी नहीं डरता था । साहब के कमरे में छिपकली आयी तो उन्होंने उसे भगाने केलिए सरवन से कहा । यह सुनते ही वह सतर्क सा हो गया । छिपकली की बात सुनते ही उसका शरीर रोमांचित हो गया । पर साहब की आज्ञा का पालन करना ही है । अतः अपनी सारी शक्ति बटोरकर, उसने अपना हाथ छिपकली की ओर बढाया और उसकी पूँछ पकडकर, एक झटके में उसे खिडकी से बाहर फेंक दिया । यह काम करने केलिए सरवन को कुछ क्षण ही लगे । लेकिन इस थोडे ही समय में उसका सारा शरीर गीला - गीला हो गया, फिर भी उसने साहब की आज्ञा का पालन किया ।

खरोंच : रंगलाल एक दफ्तर में नौकरी करता था । उस केलिए घर से दफ्तर जाना और आना सबसे कठिन काम था । दफ्तर में सब अफसरों के अपने - अपने कार हैं । वे कारों से ही दफ्तर आते हैं । लेकिन अफसर होकर भी रंगलाल के पास कार नहीं है ।

दफ्तर के बहुत से लोग उसे कंजूस समझने लगे । आजकल कार के न होने से सामाजिक पिछडेपन से जोडकर देखा जाएगा । अतः रंगलाल ने आर्थिक कमी होने पर भी बैंक से ऋण लेकर, कार खरीदने का निश्चय कर लिया, क्योंकि आजकल कार बडप्पन का चिह्न है ।जब रंगलाल नयी कार से दफ्तर पहुँचा तो लोग कौतूहल से उसकी ओर देखने लगे । कुछ लोगों की दृष्टि जिज्ञासा भरी थी कि उसके पास कार कैसे आ गयी तो कुछ लोगों की दृष्टि में ईर्ष्या थी कि उसके पास कार क्यों आ गयी । रंगलाल ने दफ्तर में मिठाइयाँ भी बाँटी । लेकिन लंच के समय उसके पी.ए. ने कहा कि कार के खरोंच लग गये । यह सुनकर रंगलाल सन्न रह गया । वह महसूस किया कि एक दलित होने के कारण, सब लोग उसे हीन दृष्टि से देखते थे तथा उसके प्रति द्वेष भाव रखते थे । इन्हीं में से किसी एक व्यक्ति ने कार में खरोंच के जरिए, अपने मन के जातीय द्वेष और घृणा का जहर उगला था । अतः रंगलाल ने महसूस किया कि खरोंच कार से ज्यादा उसके कलेजे पर लगी थी, जो ज्यादा बडी और गहरी थी ।

पेंशन : रुक्मिणी की बहू बच्चे को जन्म देकर, मृत्यु की गोद में चली गयी । कमानेवाले बेटे की भी अकस्मात मौत से रुक्मिणी का हाल दूभर बन गया । वह कभी भी कदम बाहर नहीं रखा था । पोते अविनाश के पालन - पोषण का भार उस पर पडा । अतः वह गन्ने के खेतों में काम करके जीविका चलाने लगी । रुक्मिणी के चले जाने के बाद अविनाश देर से उठता था और स्कूल जाने में भी देर होने लगी । इसलिए वह स्कूल जाना बंद कर दिया और बुरी सांगत्य से बिलकुल बिगडने लगा । उसको सही रास्ते पर लाने केलिए प्रयत्न करके रुक्मिणी विफल हो गयी ।एक दिन अविनाश खूब शराब पीकर आता है और दोनों में खूब संघर्ष होता है । इसका फल यह निकला कि अविनाश के हाथों रुक्मिणी की हत्या की गयी । अविनाश इतना विकृत बन गया कि दादी का पेंशन लेने केलिए उसका अंगूठा काटकर, फ्रीजर में रखता है और तीन महीने पेंशन भी लेता है । यहाँ, पेंशन बना हत्या का कारण ।

पुलिस ने अविनाश पर हत्या का इल्जाम रखकर,जेल में रख दिया ।

हाउसिंग सोसाइटी : विजय महतो, पचास साल का व्यक्ति है । सरकारी नौकरी में उसके केवल दस साल और बचे हैं । लेकिन वह अभी तक अपने लिए घर नहीं बना पाया था । वेतनभोगी लोगों के सामने जो कठिनाइयाँ होती हैं, वही उसके सामने भी थीं । वह अनेक वर्षों से आर.के.पुरं. में सरकारी क्वार्टर में रहता है । विजय महतो की पत्नी भी चाहती थी कि जल्दी से उनका भी अपना मकान हो जाय । वह सलाह देती है कि महतो भी किसी हाउसिंग सोसाइटी के सदस्य बने । इसकेलिए वह बहुत प्रयत्न करता है । एक दिन केन्द्रीय सरकार की कर्मचारियों की हाउसिंग सोसाइटी के सदस्य बनने केलिए विज्ञापन देखकर, महतो फोन करता है तो वे समझते हैं कि वे विजय मेहता हैं । पर जब वे जानते हैं कि वे मेहता नहीं, महतो हैं और दलित हैं, तब वे मेंबरशिप देने में इनकार करते हैं । जब वे जाति के कारण मेंबरशिप देना मुश्किल बताते हैं तो महतो कानून के द्वारा लडने को भी तैयार होते हैं । वे चाहते हैं कि मेंबरशिप पाने केलिए वे कुछ भी करने केलिए निश्चय करते हैं और अपने निर्णय पर अडिग रहते हैं ।

मजदूर खाता : रामलाल शहर के एक फाक्टरी में मजदूर हैं । उसकी पत्नी बेटे के साथ गाँव में रहती है । एक दिन रामलाल की पत्नी फोन में बताती है कि बेटे की तंदुरुस्ती ठीक नहीं है । शहर के डाक्टर के पास जाने केलिए उसके पास पैसे नहीं हैं । रामलाल उसे आश्वासन देता है कि वह किसी न किसी तरह पैसे भेजेगा । वह अपने फाक्टरी मालिक से पूछकर बैंक में जाता है और पैसे देने केलिए मांगता है । बैंकवाले कहते हैं कि उसको शनिवार ही पैसे देंगे ।रामलाल की बात सुनकर फाक्टरी का मालिक स्वयं बैंकवालों से पूछने केलिए रामलाल के साथ आते हैं । बैंकवालों की जवाब सुनकर वे अवाक हो जाते हैं । वे कहते हैं कि मजदूर लोगों केलिए शनिवार ही पैसे देंगे । क्योंकि बाकी दिनों में बडे - बडे पैमाने बैंक में आते हैं । ऐसे लोगों के आते समय मजदूर लोग भी आते हैं तो बैंक की इज्जत मिट जाएगी ।

अतः उन केलिए केवल शनिवार ही पैसे दिये जाएँगे । क्योंकि ये लोग गंदे होते हैं । इनके कपडे मैले - कुचले और तेल - चीकट में सने होते हैं । अगर वे बैंक में होने से बाकी कस्टमर, जो साफ - सुथरे कपडे पहनकर आते हैं, असहज महसूस करते हैं । इससे बैंक के बिजिनेस पर प्रभाव पडता है । इसीलिए इन लोगों केलिए शनिवार का दिन निर्धारित किया गया है ।यह सुनकर फाक्टरी मालिक क्रोध से कहते हैं -

'यह भेद भाव गलत है ।देश के सब नागरिक समान हैं । सबको समानता का अधिकार है ।'[16]

वे यह शिकायत बैंक के सी.एम.डी. और रिजर्व बैंक तक ले जाना चाहते हैं । वे तो रामलाल को पैसे देकर, गाँव भेजने को कहते हैं और बैंकवालों के व्यवहार पर अपना दुःख व्यक्त करते हैं ।

रास्ते : दीपक, गाँव में रहनेवाला है, जो शहर में पढने केलिए आता है । वह अंग्रेजी न बोल पाने के कारण, सब विद्यार्थी उसकी मजाक उडाते हैं । इसलिए वह दृढता के साथ अंग्रेजी में बोलना चाहता है । इसका अभ्यास करने केलिए जंगल में जाकर, पेडों से बातें करने लगता है । थोडे ही दिनों में उसमें आत्मविश्वास बढता है । अम्बेड्कर स्टूडेन्स फेडरेशन के गाइड कैम्प में दीपक और कल्पना की पहली मुलाकात होती है ।फेडरेशन का अध्यक्ष ब्रह्मसिंह पी.एच.डी. का शोधार्थी है । विश्वविद्यालय में होनेवाली चुनावों की जानकारी देकर, पूरी ताकत के साथ चुनावों में उतरने की सलाह देता है । कल्पना के आग्रह पर, दीपक सचिव पद केलिए चुनावों में भाग लिया । लेकिन वह हार गया । फिर भी अन्य उम्मीदवारों को कडी टक्कर दी । इस प्रकार वह दलित छात्रों का तो ' हीरो ' बन गया । कुछ दिनों के बाद दीपक के पिताजी की मृत्यु हो जाती है तो वह पढाई बंद कर देना चाहता है, क्योंकि उसे अपने परिवार का देखबाल करना होगा । कल्पना उसकी मदद करने केलिए तैयार होती है और संघर्ष झेलने का रास्ता बताती है । पढाई अधूरी छोडने से दीपक का भविष्य नाश दो जाएगा । अपने उज्ज्वल

भविष्य को अभाव और शोषण की भट्टी में झोंकना अकलमंदी नहीं है । कल्पना की सलाह से दीपक को अच्छा रास्ता मिल जाता है और वह आत्मविश्वास से आगे बढना चाहता है ।

मानीटर : रामस्वरूप राजमिस्त्री था और आसपास के गाँवों में राजागिरी का काम करता था । सतीश इन्टरमीडिएट के विज्ञान का छात्र था । वह अपनी कक्षा का सबसे बडा होशियार छात्र तथा मानीटर था । उसका सपना इंजनीयर बनने का था । किन्तु पिताजी की मृत्यु से उसका सपना अधूरा सा हो गया । परिवार के पालन - पोषण केलिए सतीश को मजदूरी करना ही एकमात्र साधन था । अतः वह रामस्वरूप के साथ जाकर, मजदूरी का काम करता था और रात के समय पढता था । एक बार उसकी कक्षा के कुछ विद्यार्थी, उसे मजदूरी करना देखकर, व्यंग्य से कहते हैं कि मानीटर मजदूरी का काम कर रहा है । लेकिन सतीश आत्मविश्वास से कहता है कि गरीब आदमी की कोई औकात नहीं होती । मजदूरी करना वह गलत नहीं मानता । कक्षा में अध्यापक के द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी, एक मानीटर के रूप में पूरा करता है । सतीश की बातों से उसके मित्र, अपने को छोटा महसूस करने लगे, कयोंकि मजदूरी करना कोई पाप नही है ।

गोष्ठी : डॉ.के.आर. गौतम एक अति साधारण स्तर के साप्ताहिक पत्र के संपादक थे । उनके संपादकीयों में न कोई दृष्टि होती थी, न विचार, न दिशा । दूसरे व्यक्ति बी.एस. निम थे, जिन्होंने कभी कुछ नहीं लिखता था । लेकिन वह एक स्वयंभू दलित लेखक थे । तीसरे एस. पी. तरुण थे, जो यदा - कदा लिखते थे । इस समूह के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक और इस समूह के नेता थे, डॉ. सुमन समीपी । दलित लेखक के रूप में उनकी पहचान भी थी । विद्वान दिखने का या स्वयं को विद्वान प्रदर्शित करने का उनमें एक फोबिया था और डॉ. समीपी इस फोबिया के सबसे बडे शिकार थे । सब लोग स्वयं को डॉ. भीमराव अम्बेड्कर का अनुयायी कहते हैं । एक दिन डॉ.समीपी के घर में इन सबकी गोष्ठी हुई । इसमें कुमार आदित्य भी भाग

लेते हैं, जो दलित साहित्य की संगोष्ठियों तथा सदस्यों में भाग लेते हैं ।उन सबकी चर्चा का विषय दलित है । कुमार आदित्य सबको यह बताना चाहते हैं - हमें जाति व्यवस्था का विरोध करना चाहिए । इस केलिए एक ही जवाब है कि भंगी या चमार जैसी जातियों में बच्चों की शादी करना । बाबा साहेब ने सदैव जाति भेद की दीवारों को तोडने पर बल दिया था । अतः उनकी बातों को मानने केलिए जाति के बंधनों को तोडना है और अंतर्जातीय विवाहों का समर्थन करना है । इस प्रकार उनकी गोष्ठी समाप्त होती है ।

पगडी : सरबतिया का सपना आज पूरे होनेवाला है । कई दिनों से वह अपने बेटे की शादी करना चाहती थी । आज उसकी सगाई है । घर को संभालने का काम वही करती थी । सरबतिया का पति रामसिंह, निठल्ला, शराबी और निहायत और गैर - जिम्मेदार था । सरबतिया मजदूरी करने जाती तो रामसिंह दिनभर इधर - उधर घूमता फिरता है और शाम को शराब पीकर घर आता है । सरबतिया की कमाई से ही परिवार की आजीविका चलती है ।उसने ही अपनी कमाई से मकान बनवाया और बच्चों को पढाया - लिखाया था ।गाँव भर में उनके परिवार की पहचान सरबतिया के नाम से थी - सरबतिया का परिवार । बेटे केलिए वधू को सरबतिया ही पसंद करती है ।

पंच एकत्र हो गये । पंचों में मास्टर प्रेमसिंह सबसे बुजुर्ग थे । उन्होंने सगाई का काम शुरू किया । लडकीवालों में एक व्यक्ति कहता है कि वे गरीब हैं । लडकी के अलावा उनके पास कुछ नहीं है, सिर्फ मोहब्बत का खजाना है । उसने लडके को अंगूठी पहनाकर, लडकेवालों को कपडे देता है । अब सिर्फ पगडी बाकी है तो चर्चा होती है कि पगडी किसको बाँधना है । चर्चा का फल यह निकलता है कि सरबतिया ही घर का मुखिया है, क्योंकि वही सारे परिवार का बोझ उठाती है । रामसिंह कुछ नहीं करता । अतः स्त्री होने पर भी सरबतिया ही पगडी बाँधने लायक है । पंच भी इस बात को मानते हैं और पगडी बँधवाने केलिए

सरबतिया को बुलाते हैं तो वह उनके आगे खडी होती है ।

मंगलसूत्र : प्रशांत की एक बडी इच्छा थी कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय में हिन्दी पढाने का अवसर मिले तो वह भी विदेश जाय । एक दिन उसका सपना पूरा हो गया । सभी परिचितों से प्राप्त आवश्यक जानकारी और सुझावों से प्रशांत को अपनी तैयारियाँ करने में बहुत सुविधा हुई । वह अपने परिवार को भारत में छोडकर, अकेला ही विदेश जा रहा था । वहाँ जाने के बाद बहुत जल्दी ही वहाँ के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ घुल - मिल गया था । दस दिनों के बाद वहाँ की एक हिन्दी संस्था की ओर से उसके स्वागत में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें बडी संख्या में हिन्दी लेखक, अध्यापक और हिन्दी प्रेमी शामिल हुए थे । उसने अपने भाषण में दोनों देशों के गहरे सांस्कृतिक और रक्त संबंधों का उल्लेख करते हुए, इसमें हिन्दी के योगदान की चर्चा की थी । उसके व्यक्तित्व और विचारों से बहुत लोग प्रभावित हुए । उनमें से एक थी, सुगुणा । दोनों एक - दूसरे का परिचय आपस में करते हैं । सुगुणा कभी - कभी फोन में प्रशांत की पूछताछ करती है । सुगुणा, उसका पति दिनेश और प्रशांत सैर - सपाटे में भी जाते हैं । सुगुणा कभी - कभी अकेले भी प्रशांत से मिलने आती थी । दोनों में एक - दूसरे के प्रति आकर्षण बढ गया और शारीरिक रूप से भी एक होना चाहते हैं । तब सुगुणा अपना मंगलसूत्र निकालना चाहती है, क्योंकि भारत में मंगलसूत्र केलिए पवित्र भाव है । इस प्रकार पराये व्यक्ति से शारारिक संबंध रखते समय मंगलसूत्र पहनने से वह अपवित्र बन जाएगा ।अतः मंगलसूत्र मेज पर रखती है और प्रशांत के साथ बिस्तर पर फिसल जाती है । विदेश में रहने के कारण, सुगुणा वहाँ की संस्कृति अपनाती है । लेकिन उसे भारतीय संस्कृति की याद आकर,मंगलसूत्र निकालती है ।

मंदिर : रंगलाल सरकारी दफ्तर में अधिकारी है । वे अभी एम.आई.जी. फ्लैट में नये - नये आये हैं । नये फ्लैट में आने के अगले दिन पडोस में रहनेवाले शर्मा जी कॉलनी

के कुछ अन्य लोगों के साथ रंगलाल के घर आते हैं और कहते हैं - ''कालनी में भगवान का मंदिर बनवा रहे हें। इस केलिए चंदा दीजिए। '' लेकिन रंगलाल कहते हैं कि कालनी में ही तीन मंदिर हैं तो और एक मंदिर की क्या जरूरत है ? यही नहीं,बच्चों के खेलने केलिए जहाँ पार्क रखना था, उसे कब्जा करके, ये लोग मंदिर बना रहे हैं। ऐसा करना तो गैर कानूनी है और अनैतिक है। वे कहते हैं - ''मैं एक सरकारी अधिकारी हूँ और मैं किसी गैर - कानूनी काम का समर्थन नहीं कर सकता। '' ऐसा कहकर, रंगलाल ने अपना अंतिम निर्णय सुना दिया।

1.2.4. *अन्य रचनाएँ*

1.2.4.1.*बाल साहित्य*

1. महान बौद्ध चालाक
2. मानवता के दूत
3. बुद्ध की शरणागत नारियाँ
4. बुद्ध और उनके प्रिय शिष्य
5. बुद्ध का समय
6. बौद्ध दार्शनिक
7. बौद्ध गाथाएँ
8. डॉ. अम्बेड्कर का बचपन
9. डॉ. अम्बेड्कर और उनके समकालीन
10. संतों की दुनिया
11. आदिवासी देव कथा - लिंगो
12. हमारे वैज्ञानिक - सी.वी.रामन

1.2.4.2.*बाल उपन्यास*

1. श्मशान का रहस्य

1.2.4.3. *आलोचना विचार प्रबंध :*

1. वर्तमान दलित आंदोलन
2. अम्बेड्करवादी आंदोलन : दशा और दिशा
3. डॉ. अम्बेड्करवादी : दलित और बौद्ध
4. हिन्दुत्व और दलित : कुछ प्रश्न और धर्म विचार
5. इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन छ साहित्य एवं समाज चिंतन
6. दलित विमर्श : साहित्य के आइने में
7. बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ
8. हिन्दी दलित साहित्य में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना
9. दलित साहित्य का दर्शन

1.2.4.4. *शोध प्रबंध*

1. राग दरबारी का समाज शास्त्रीय अध्ययन

1.2.4.5.*संपादित पुस्तकें*

1. जाति - एक विमर्श
2. बौद्ध धर्म और दलित
3. गुलामगिरी

1.2.4.6. *अनूदित पुस्तकें*

1. चमार ('दि चमार्स ' का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद)

1.2.4.7. *पत्र - पत्रिकाओं से जुडाव*

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वारणासी की त्रैमासिक शोध आलोचना पत्रिका नया मानदंड के दलित चेतना
   'दलित साहित्य' व 'दलित आत्म कथा' विशेषांकों का सम्पादन
2. दलित साहित्य (वार्षिकी) का 1999 से निरंतर सम्पादन

1.2.5. *अन्य विवरण*

- अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अनेक संगोष्ठियों में शोध - निबंधों का व्याख्यान
- 'छप्पर' उपन्यास मराठी एवं तेलुगु में अनुदित
- मराठी, मलयालम, तेलुगु, पंजाबी, गुजराती, बंगला व अंग्रेजी में रचनाएँ अनूदित
- राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ, कविताएँ, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, समीक्षाएँ एवं स्मृतिलेख आदि निरंतर प्रकाशित
- अनेक सम्पादित पुस्तकों तथा स्मारिकाओं में रचनाएँ संग्रहित
- दूरदर्शन, आकाशवाणी के कई चैनल, केन्द्रों से विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत वार्ताएँ, आलेख, कविताएँ, साक्षात्कार आदि प्रसारित
- सदस्य - हिन्दी अकादमी, दिल्ली

1.2.6.*निष्कर्ष :*

डॉ. जयप्रकाश कर्दम के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विस्तृत अध्ययन करने के बाद यह समझ में आता है कि वे सीदा - सादा जीवन बितानेवाले, अनेक कष्टों को झेलकर आज उन्नत स्थिति पर रहनेवाले महान व्यक्ति हैं । इनके व्यक्तित्व पर बाबा साहेब अम्बड्कर, गौतम बुद्ध, संत कबीर तथा संत रैदास का प्रभाव दिखाई पडता है । वे शिक्षा, समता और स्वातंत्र्य को जीवन में महत्वपूर्ण कडी मानते हैं । उनके मन में सामाजिक व्यवस्था के परंपरागत विचारों के प्रति विद्रोह की भावना प्रज्वलित हुई दिखायी पडती है । उनके साहित्य सृजन का प्रधान आधार बाबा साहेब के विचार ही हैं । एक दलित होने के नाते, दलितों की मानसिक वेदना का स्वयं अनुभव करके, उसका सच्चा रूप अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने में वे सफल हुए हैं ।

कर्दम जी अपनी रचनाओं के द्वारा दलितों में सामाजिक जागृति के प्रगतिशील

विचारधारा को प्रवाहित करते हैं । साथ ही मानवतावादी मूल्यों से समाज का नव निर्माण करना चाहते हैं । कर्दम जी की कहानियों के बारे में विचार करने से स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियों में समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, न्याय आदि मूल्यों को महत्व दिया गया है ।आजकल समाज में मूल्यों का जो ह्रास हो रहा है, उनका पुनरुत्थान करने में कर्दम जी की कहानियाँ साक्षीभूत होती हैं । उनकी सारी रचनाओं का प्रधान उद्देश्य दलितों का उद्धार है । दलित चेतना के साथ - साथ मूल्यों का महत्व समाज को व्यक्त करना ही उनके कृतित्व का प्रधान लक्ष्य है । जीवन में सफलता पाने केलिए परिश्रम, आत्मविश्वास तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का होना आवश्यक माननेवाले महान लेखक हैं ,डॉ. जयप्रकाश कर्दम । इक्कीसवीं सदी के दलित लेखकों में उनका स्थान अद्वितीय है ।

संदर्भ - सूची

1. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - श्री नितीन गायकवाड - पृ. 2

2. मेरे संवाद(साक्षात्कार) - जयप्रकाश कर्दम - पृ. 10.

3. वही - पृ. 11.

4. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - श्री नितीन गायकवाड - पृ. 3

5. मेरे संवाद(साक्षात्कार) - जयप्रकाश कर्दम - पृ. 13

6. वही - पृ. 13

7. वही - पृ. 88

8. संवाद पर संवाद - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - सम्पादक - रूपचन्द गौतम - पृ. 22

9. कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन - डॉ.सुनील बनसोडे और श्री.सचिन कांबले पृ.12

10. डॉ. जयप्रकाश कर्दम : छप्पर पुस्तक के फ्लैप से उद्धृत

11. वही

12. वही

13.कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन - डॉ.सुनील बनसोडे और श्री.सचिन कांबले पृ.12

14.करुणा - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - पृ. 71

15. मूवमेन्ट - पृ. 88 (तलाश - कथा संग्रह)

16. मजदूर खाता - पृ. 52 (खरोंच - कथा संग्रह)

दूसरा अध्याय

डॉ. कोलकलूरि इनाक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

दूसरा अध्याय
डॉ. कोलकलूरि इनाक जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.0. भूमिका :-

साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव पडता है । लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उसके साहित्य में होती है ।साहित्य में ही साहित्यकार के जीवन का प्रतिबिंब नजर आता है । रचनाकार के लेखकीय व्यक्तित्व के गठन एवं विकास में जिन महत्वपूर्ण पहलुओं का योगदान होता है,उनका विवेचन - विश्लेषण होना आवश्यक है । डॉ.सरेज मार्कण्डेय का कथन है - ''किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है । अतएव व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है ।व्यत्वित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचायक न हो, अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं, मानसिक, सांस्कृतिक पूंजीभूत रूप है ।'' [1]

पद्मश्री आचार्य कोलकलूरि इनाक जी तेलुगु साहित्य केलिए अपूर्व वरदान जैसे हैं ।वे बहुमुख प्रतिभाशाली हैं । तेलुगु साहित्य की दुनिया में विनय, ज्ञान संपन्न, विविध क्षेत्रों में अद्वितीय रचना सम्राट आचार्य कोलकलूरि इनाक जी कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, राष्ट्रीय कवि, उत्तम अध्यापक, विश्वविद्यालय कुलपति तथा देश - विदेश में कीर्तिपताका फहरानेवाले महान ज्ञानी हैं । वे समाज में बढती हुई विषमताओं का खंडन करते हैं । आजकल समाज में मानवीय मूल्यों का जो ह्रास हो रहा है, उसके प्रति अपना दु:ख प्रकट करते हैं । एक दलित होने के नाते अपने बचपन से उन्होंने जिन असमानताओं का सामना किया, उनका जीता - जागता स्वरूप अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने में वे शत - प्रतिशत सफल हुए ।

डॉ. के. आनंदराव का कथन है - '' समाज में जो समस्याएँ हैं, उनका जीता - जागता वर्णन करने के साथ - साथ, उनके सुझाव बताकर, आम जनता को भी मार्ग - निर्दोशन करनेवाले महान कथाकार हैं, आचार्य कोलकलूरि इनाक ।'' [2]

2.1. *पद्मश्री आचार्य कोलकलूरि इनाक जी का व्यक्तित्व :*

2.1.1. *जन्म और बचपन :*

दलित जाति का यश दश -दिशाओं में प्रचार करनेवाले इनाक जी का जन्म गुंटूर जिले के वेजेन्ड्ल नामक गाँव में एक दलित परिवार में सन. 1939 में हुआ । जन्म का दिनांक किसी को ठीक - ठीक मालूम नहीं है । उनकी बेटी डॉ. मधुज्योती कहती हैं -

''पाठशाला में प्रवेश के समय उनका जन्म दिन जुलै महीने का एक दिनांक लिखा गया । तभी से इनाक जी का जन्म दिन जुलै महीने के एक तारीख को ही मनायी जा रही है ।'' [3]

वेजेन्ड्ल गाँव गुंटूर जिले से 12 किलोमीटर दूरी पर है । माँ वीरम्मा (विश्रांतम्मा) और पिता रामय्या केलिए वे प्रथम संतान थे । बचपन में वे इतने तंदुरुस्त रहते थे कि सरकार की ओर से तंदुरुस्त बच्चों केलिए रखी गयी प्रतियोगिता में उनको प्रथम स्थान मिला । जैसे फूल खिलते ही खुशबू आती है, वैसे ही इनाक जी बचपन से ही प्रतिभा संपन्न तथा विवेकशील साबित हुए । **इनाक** शब्द का अर्थ है - भगवान के साथ चलनेवाला व्यक्ति । उनका बचपन माता - पिता के अविरल प्रेम से बीता । माता ने बच्चे को तंदुरुस्त रखने केलिए बहुत जागरूक रहती थी । इनाक जी के एक बहन और एक छोटे भाई थे । पति
की मृत्यु के बाद विश्रांतम्मा को तीनों बच्चों के पालन - पोषण केलिए अनेक कष्ट झेलने पडे ।

2.1.2. *शिक्षा एवं नौकरी* :

2.1.2.1. *शिक्षा :*

माता - पिता अनपढ हैं, किन्तु अपने बच्चों को खूब पढाने की आकांक्षा है । माता को किसी ने खबर दिया कि गुंटूर में देवदास नामक व्यक्ति ने दस विद्यार्थियों को छठी कक्षा में शामिल कराने केलिए पढा रहा है । माता ने देवदास के पास जाकर विनती की कि वे इनाक को भी पढावें । माता की तीव्र अभिलाषा के कारण आन्ध्र लूथरन क्रिस्टियन

मिषन स्कूल में छठी कक्षा की प्रवेश परीक्षा में इनाक जी उत्तीर्ण हुए और उसी पाठशाला में दसवीं कक्षा तक शिक्षा पूरी की । जब वे नौवीं कक्षा में थे, तब पिताजी की मृत्यु हो गयी । फिर भी उनकी माँ ने अनेक कष्ट सहकर, उनको पढाने लगी । उसकी एक ही आकांक्षा थी, कि अपना बेटा मजदूर न बने और खूब पढकर उच्च स्थिति प्राप्त करे । उन दिनों वे इतने गरीब थे कि घर में सब केलिए खाना भी नहीं मिलती थी । इसलिए इनाक जी ने स्वयं विद्यार्थियों के सामाजिक कल्याण के छात्रावास के संरक्षक के पास जाकर कहा -

''मुझे पढने की शौक है । घर की स्थिति इतना भयंकर है कि सबको भरपेट भोजन भी नहीं मिलता । अतः अगर आप छात्रावास में आवास देते हैं तो पढूँगा ।''[4]

इस प्रकार वे स्वयं छात्रावास में रहने के बजाय, अपनी बहन और छोटे भाई को भी छात्रावास में बुला लिया । माँ ने शिक्षा रूपी दीप में अनुभव रूपी तेल भरकर, ऐसी अनंत ज्योति जलायी, जो आज तक उज्वल बनकर प्रकाश देती ही रही ।

आन्ध्र क्रिस्टियन कलाशाला में इनाक जी ने इन्टरमीडिएट पूरा किया । कलाशाला में भर्ती होने केलिए उनके पास पैसे नहीं थे । अतः वे मजदूर बनकर, रात के समय भी काम करते थे । इस प्रकार अनेक कष्ट झेलकर इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण हुए । इतने कष्टों में जिंदगी बिताने के कारण ,वे पैसों का मूल्य खूब जानते हैं । इसलिए एक पैसा भी व्यर्थ नहीं करते हैं । इनाक जी ने सन. 1956 में आन्ध्र विश्वविद्यालय में बी.ए. आनर्स में प्रवेश किया । उस समय विश्वविद्यालय में जाति - भेद का भाव बहुत अधिक था । ब्राह्मण विद्यार्थियों को उच्च स्थान और दलितों को निम्न स्थान प्राप्त था । दलितों की स्थिति इतना दयनीय थी कि अध्यापक भी उनको कम अंक देते थे । ऐसी स्थिति में भी सारी चुनौतियों का सामना करके, उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की ।

पी..एच.डी.. करना उनका सपना था । उसे पूरा करने केलिए उनको .नौ वर्षों का .समय लगा । उन .दनों .ऐसा कोई .सहृदय .आचार्य नहीं .था , जो एक दलित को

पी.एच.डी. में स्थान दें ।ऐसी स्थिति में भी इनाक जी ने अपने प्रयत्न नहीं छोडे । आखिर श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ.जी.एन.रेड्डी की कृपा से उनको सन. 1968 में कोराड महदेव शास्त्री के यहाँ सन. 1972 में पी.एच.डी.पूरी हुई और सन.1974 में गवर्नर के हाथों उपाधि स्वीकार की । उन दिनों एक दलित को इस दिशा में कामयाबी होना तो आश्चर्य की बात थी । ये सब इनाक जी के दृढ संकल्प और प्रयास का फल ही है ।

2.1.2.2. *नौकरी :*

इनाक जी ने गुंटूर के ए.सी. कोलेज में बी.ए.डिग्री की उपाधि प्राप्त करने के बाद, उसी कलाशाला में ट्यूटर के रूप में नौकरी में प्रवेश किया । कालांतर में उसी कलाशाला के अध्यापक बन गये । उसके बाद चित्तूर , काकिनाडा तथा अनंतपुर की सरकारी कलाशालाओं में अध्यापक की नौकरी की । अनंतपुर में रहते समय वे एक कवि तथा लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए । उन्होंने छोटी ही उम्र में नौकरी प्राप्त करके अनेक विवक्षताओं का सामना किया । अगस्त 16 सन. 1974 में तिरुपती के श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में अध्यापक बने । इस सिलसिले में जो साक्षात्कार हुआ, उसके बारे में इनाक जी का अनुभव बताते हुए, उनकी बेटी का कथन है -

''यह साक्षात्कार, पिताजी केलिए युद्ध - क्षेत्र जैसा था । प्रतियोगिता बहुत जटिल था । 30 लोग प्रतियोगिता में भाग लिए । बडे - बडे विद्वानों के सामने पिताजी छोटी उम्रवाले थे । फिर भी धीरज से पद्मव्यूह में अभिमन्यु की तरह, उन्होंने साक्षात्कार का सामना किया और उसमें सफल भी हुए । '' [5]

इनाक जी ने स्वयं कहा - ''पद्मव्यूह में प्रवेश करके, अभिमन्य जीत नहीं सका । पर मैं ने जीत लिया । '' [6]

इनाक जी के दृढ चित्त केलिए यह सच्चा सबूत है । इसके बाद उन्होंने अनंतपुर के श्री कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय के आचार्य बने ।

उपकुलपति बनना इनाक जी का सपना था । एक दलित होने के नाते इतनी उन्नत पदवी प्राप्त करना उन दिनों बहुत मुश्किल की बात थी । नौ वर्षों की निरंतर

अभिलाषा और प्रयत्न के बाद श्री नंदमूरि तारक रामाराव और श्री नारा चंद्र बाबु नायुडु जी के सौजन्य से सन.1998 में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के उपकुलपति पदवी से विभूषित हुए । उपकुलपति बनने के बाद उन्होंने विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा अध्यापकेतरों केलिए उपयुक्त अनेक अभिवृद्धि कार्यक्रम किये । इसके अलावा उन्होंने अनेक विभागों के सदस्य बनकर, अपनी सेवाएँ प्रदान की । यू.जी.सी., ए.पी.पी.एस.सी.,एन.सी.टी.ई., एस.सी.एस.टी. कमिटी आदि के सदस्य बने । यही नहीं, उनकी भाषण पटिमा वर्णनातीत है ।अगर वे भाषण देना शुरू करते हैं तो श्रोता सम्मोहित हो जाते हैं । अनेक जातीय, अंतर्जातीय सदस्यों में भाग लेकर प्रपत्र समर्पित करना ही इसका सबूत है ।

2.1.3. *विवाह और संतान :*

बी.ए.आनर्स परीक्षा के उत्तीर्ण होने के बाद सन.1962 में इनाक जी ने अनंतपुर के सरकारी आट्र्स कलाशाला में तेलुगु अध्यापक बने । उस समय कंदिकट्ल भागीरथी लैजन अफसर की नौकरी करती थी । उसी समय इनाक जी का उपन्यास 'अनाथ' आन्ध्र प्रभा दैनिक में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित किया गया और उत्तम उपन्यास का पुरस्कार भी दिया गया । दफ्तर के कर्मचारियों को प्रेरणात्मक भाषण देने केलिए भागीरथी ने इनाक जी को आमंत्रित किया।इसके बाद दोनों का परिचय दृढ होने लगा ।

भागीरथी को तेलुगु भाषा पर अत्यंत रुचि थी । इसलिए उसको तेलुगु पढाने केलिए इनाक जी उनके घर जाते थे । धीरे - धीरे दोनों एक - दूसरे से आकर्षित हुए । किन्तु उनके विवाह केलिए दोनों परिवार के लोगों ने इनकार कर दिया । आखिर इनाक जी के मामा ने भागीरथी को दत्तक लेकर, दोनों का विवाह कर दिया । प्रेम और अनुराग रूपी मूलधन से दोनों का वैवाहिक जीवन शुरू हुआ । उनकी दो बेटियाँ और दो बेटे हुए ।आशा ज्योति उनकी प्रथम संतान है ।अब वे बेंगलूर विश्वविद्यालय में तेलुगु आचार्य के रूप में नौकरी कर रही हैं । उनका प्रथम पुत्र श्रीकिरण हैदराबाद के वैजाग स्टील प्लांट में सीनियर मैनेजर का काम करते हैं । तीसरी संतान डॉ.मधुज्योती हैं, जो श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय,

तिरुपति के तेलुगु विभाग के आचार्य हैं । चौथा संतान सुमकिरण श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में आचार्य का काम करते हैं । उनके दामाद और बहुएँ भी नौकरी करती हैं । चारों संतान की दो - दो संतान हैं । सब अपने - अपने जीवन से संतुष्ट हैं । बच्चों के देखबाल करने केलिए भागीरथी ने आठ वर्षों की छुट्टी ले ली । माँ - बाप होने के नाते दोनों ने अपने कर्तव्य का ठीक - ठीक पालन किया । इनाक जी ने जो अनुशासन अपनी संतान को सिखाया, वही आज उनकी उन्नत स्थिति का कारण बना ।

इनाक जी की पत्नी भागीरथी ने उनके जीवन के सुख - दुख के हर क्षण में साथी रही । अनंतपुर के तपोवन में मकान का निर्माण करने में इनाक जी सफल हुए । सन. 1998 इनाक जी की पत्नी भागीरथी ने उनके जीवन के सुख - दुख के हर क्षण में साथी रही । अनंतपुर के तपोवन में मकान का निर्माण करने में इनाक जी सफल हुए । सन. 1998 में उनकी पत्नी की तबीयत बिगड गयी । छब्बीस फरवरी के दिन, जो उनका जन्म दिवस भी था, अंतिम साँस छोड दी । जीवन के हर एक उतार - चढाव में गंभीर रहनेवाले इनाक जी, पत्नी की मृत्यु से बहुत दुखित हुए ।

इनाक जी को अपनी माँ और पत्नी पर जो प्रेम था, वह वर्णनातीत है । अतः उन दोनों के नाम पर अपने गाँव वेजेन्ड्ला में एक स्मृति भवन का निर्माण किया । निचले तले में कोलकलूरि विश्रांतम्मा विवाह मंडप, पहली मंजिल में कोलकलूरि भागीरथी का शोध -ग्रंथालय और दूसरी मंजिल में एक कमरा है । विवाह जैसे शुभकार्य तथा सरकारी कार्यक्रमों केलिए यह भवन मुफ्त में ही दिया जाता है । ग्रंथालय में अनेक पुस्तकें हैं, जो शोध विद्यार्थियों केलिए बहुत उपयुक्त हैं ।शोध विद्यार्थियों को वहाँ ठहरने केलिए आवास का प्रबंध भी है । अतः शोध विद्यार्थी दो - तीन दिनों केलिए वहाँ रहकर, ग्रंथालय का उपयोग करके अपना ज्ञान बढा सकते हैं । इनाक जी का एक ही लक्ष्य है कि अनेक लोग इस स्मृति भवन का उपयोग करें, ताकि उनकी माँ और पत्नी का नाम चिरस्थायी रहे । इस भवन के कार्य निर्वाह केलिए जो खर्च होता है, उसे भी स्वयं इनाक जी ही भरते हैं ।

इनाक जी बचपन में अनेक कष्ट झेलकर, जाति - विवक्षता के शिकार बनकर, अनेक उतार - चढाव का अनुभव करके आज हैदराबाद में शांति पूर्ण जीवन बिता रहे हैं । हर महीने में एक या दो बार वेजेन्ड्ला जाकर, स्मृति भवन में आराम लेकर, प्रशांत मन से फिर हैदराबाद वापस आते हैं ।

2.1.4. *साहित्य जगत में पदार्पण :*

इनाक जी जब बी.ए.आनर्स की कक्षा में पढते थे, तभी साहित्य जगत में उनका पदार्पण हुआ । उस समय उन्होंने छोटी - छोटी कविताएँ तथा कहानियाँ लिखकर पत्रिकाओं को भेजते थे । सन. 1998 में उनका नाटक **दृष्टि** केलिए आलइन्डिया रेडियो का द्वितीय पुरस्कार मिला । आन्ध्र विश्वविद्यालय में भी उत्तम नाटक, कहानी और कविताओं केलिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए । इस प्रकार विजय शंख बजाकर उन्होंने साहित्य जगत में और आगे बढ गये । जब अनंतपुर के आट्र्स कलाशाला में नौकरी करते थे, उस समय लेखक के रूप में उनको पहचान मिला ।वे बहुमुख प्रतिभाशाली हैं । कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबंध आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा दिखाकर, एक उत्तम रचनाकार के रूप में तेलुगु साहित्य में अपनी कीर्तिपताका फहराये । नाटकों में अभिनय करने के साथ - साथ कुछ नाटकों का निर्देशन भी किया ।

2.1.5. *पुरस्कार एवं सम्मान :*

इनाक जी आधुनिक समाज के प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं । उनको अनेक पुरस्कार तथा गौरव प्राप्त हुए ।

2.1.5.1. **शिक्षा, साहित्य तथा सामाजिक कार्यकलापों से संबंधित पुरस्कार :**

- जूलूरि नागराजराव साहित्य पुरस्कार - श्री कलानिकेतन,हैदराबाद - 1977
- उत्तम अध्यापक - आन्ध्रप्रदेश सरकार से - 1993
- उत्तम शिक्षक पुरस्कार - आल इंडिया असोसिएषन, आन्ध्रप्रदेश - 1994
- राष्ट्रीय समग्रता पुरस्कार - आन्ध्रप्रदेश सरकार - 1994

- अंबेड्कर राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार - राष्ट्रीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली - 1997
- उत्तम शैक्षिक पुरस्कार - दिल्ली तेलुगु असोसिएषन,नई दिल्ली - 1998
- पैडि लक्ष्मय्या साहित्य पुरस्कार - रसमई, हैदराबाद - 1998
- राष्ट्रीय कवि - भारत सरकार - 1999
- साहित्य पुरस्कार - मद्रास तेलुगु अकादमी - 2001
- सुगुणमणि साहित्य पुरस्कार - हैदराबाद - 2004
- मैत्री भाषा विशिष्ट पुरस्कार - अधिकार भाषा संघ, आन्ध्रप्रदेश - 2004
- तेलुगु भाषोत्सव पुरस्कार - अधिकार भाषा संघ, आन्ध्रप्रदेश -2004
- आजीवन पुरस्कार - सिद्धार्थ कलापीठं, विजयवाडा - 2006
- विश्वविद्यालय प्रतिभा पुरस्कार - आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय - 2007
- एन.टी.आर.ललित कला पुरस्कार - एन.टी.आर.फौंडेषन ट्रस्ट - 2008
- दुव्वूरि रमणम्मा पुरस्कार - डी.आर.डब्लू.कलाशाला, गूडूर - 2009
- तेलुगु शाखा स्वर्णोत्सव पुरस्कार - श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय - 2009
- मल्लेमाला साहित्य पुरस्कार - मल्लेमाला ट्रस्ट, कडपा - 2010
- तेलुगु भारती पुरस्कार - सी.जी.ब्रौन अकादमी, हैदराबाद - 2010
- पद्मश्री उपाधि - भारत सरकार (राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के हाथों से) - 2014

2.1.5.2. *उपाधियाँ :*

- आन्ध्रश्री - सरस्वती पत्रिका - 1961
- कला सरस्वती - कला वेदिका, हैदराबाद - 1985
- साहिती सम्राट - कलारवं, हैदराबाद - 1991
- कथक चक्रवर्ती - जाषुवा समिति, विनुकोंडा - 1999
- कोलोनेल - निर्देशक, एन.सी.सी.संचालकालय - 2001

2.1.5.3. विदेशी पर्यटन :

आन्ध्रप्रदेश तथा नई दिल्ली सरकारों की ओर से डॉ. इनाक जी ने सिंगपूर, मलेषिया, मारिषस, जोर्डान, जेरूसलेम, केनडा, अमेरिका आदि देशों में पर्यटन किया और अनेक सभाओं में भाग लेकर, जोरदार भाषण दिया ।

2.1.6. *व्यक्तित्व के विविध पहलू :*

पद्मश्री कोलकलूरि इनाक जी अनुशासन का मूर्त रूप हैं । एक दलित को समाज निम्न दृष्टि से देखता है । अतः उन्होंने अपने को एक बहुमुख प्रतिभाशाली साबित किया, ताकि समाज उनका आदर करे । उनकी बेटी मधुज्योती का कथन है -

''अगर कोई दलित,समाज में अपना स्थान साबित करना चाहता है तो वह सबसे बढकर महान ज्ञानी होना चाहिए । वह अन्य किसी ज्ञानी से कम नहीं होना चाहिए ।'' [7]

इनाक जी के जीवन से यह स्पष्ट दिखाई पडता है कि समाज में अपने लिए एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करने केलिए उन्होंने कितना परिश्रम किया । वे जो भी करना चाहते हैं, वही करके दिखाते हैं । वे अपने संकल्प सिद्दि पर अडिग रहते हैं । उन्होंने जिस अनुशासन का पालन किया, वही अपने बच्चों के तथा विद्यार्थियों को सिखाया ,जो उनके उज्ज्वल भविष्य का कानण बना ।

2.2. *इनाक जी का कृतित्व :*

तेलुगु साहित्य गगन के चमकनेवाले नक्षत्र जैसे इनाक जी की प्रतिभा अद्वितीय है । उनका साहित्य - लेखन अनेक क्षेत्रों में हुआ । कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबंध आदि क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा अनवरत है ।

इनाक जी की बेटी आशा ज्योती कहती हैं -

''आचार्य इनाक जी का सारा साहित्य, उन्हीं का प्रतिबिंब है, जो उन्होंने स्वयं अपने जीवन में अनुभव किया । समाज की दुर्बलता के प्रति सहानुभूति, मनुष्य की वेदना आदि आचार्य इनाक जी को कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार, आलोचक तथा शोधार्थी बनने के प्रेरक बने ।'' [8]

श्री ताल्लूरि लाबन बाबू का कथन है - ''श्री कोलकलूरि इनाक जी की रचनाओं की विशेषता यह है कि वे पाठकों केलिए चश्मे जैसे हैं । जो समाज को देख नहीं सकते या पढ नहीं सकते, ऐसे पाठकों केलिए वे चश्मे के बराबर हैं । ये चश्मे रखकर पाठक समाज का अध्ययन कर सकता है । '' [9]

2.2.1. *उपन्यास साहित्य :*

इनाक जी के विचारों, समाज की असमानताओं के प्रति उनका दृष्टिकोण, दलित नारी के समर्थन की भावनाओं आदि के साकार रूप हैं उनके उपन्यास । इनाक जी के उपन्यास हैं -

समता	-	1960
अनाथा	-	1961
सौभाग्यवती	-	1966
सोंदर्यवती	-	1968
एक्कडुंदि प्रशांति	-	1969
इरुललो विरुलु	-	1972
रेंडु कल्लु - मूडु काल्लु	-	1972
सरकारु गड्डि	-	2007
अनंत जीवनं	-	2007

उनके उपन्यास अनंतपुर की दुस्थिति के प्रतिबिंब जैसे हैं । अकाल के कारण, किसानों की दुस्थिति का वर्णन **सरकारु गड्डि** में किया गया है तो अधिक वर्षा के कारण होनेवाले परिणामों का वर्णन **अनंत जीवन** नामक उपन्यास में किया गया ।**अनाथ** नामक उपन्यास केलिए सन.1961 में आन्ध्रप्रभा पत्रिका का तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

2.2.2. *कहानी साहित्य :*

सामाजिक जीवन को पाठक के हृदय तक ले जानेवाली वर्तमान साहित्य प्रक्रिया कहानी है । तेलुगु साहिती जगत में इनाक जी केलिए प्रत्येक स्थान है । वे सामाजिक

दृष्टि रखनेवाले कथाकार हैं ।उन्होंने समाज के दुःख, जोश, गरीबीपन,मानवीय मूल्यों के विघात के प्रति आक्रोश आदि व्यक्त करने केलिए अपनी कहानियों को आधर बनाया । अतः उनके साहित्य में कहानी रीढ की हड्डी के बराबर है । इनाक जी ने लगभग २०० कहानियाँ लिखीं । इनकी कहानियाँ संग्रहों के रूप में प्रकाशित की गयीं ।

गुलाबि नव्विंदि	- 1960
भवानी	- 1969
इदा जीवितं	- 1976
ऊरबावि	- 1983
सूर्युडु तलेत्ताडु	- 1989
अस्पृस्यगंगा	- 1999
कट्टडि	- 2007
कोलुपुलु	- 2007
काकि	- 2009

ऊरबावि कहानी संग्रह केलिए तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद से सन. 1986 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ । मानव जीवन केलिए सच्चाई ही मूल सूत्र है । उसी मार्ग में चलकर, सामाजिक उन्नति को पहचानकर, निर्भीक रूप से संदेश देनेवाले महान कहानीकार इनाक जी हैं । उनकी पहली कहानी **उत्तर** सन. 1954 में आन्ध्र क्रिस्टियन कलाशाला की पत्रिका में छापा गया । इस कहानी में एक गरीब व्यक्ति की वेदना व्यक्त की गयी है, जो पूँजीपती से शोषित था । दूसरी कहानी है - **लोकं पोकडा** । इसमें एक मालिक अपने नौकर को शहर भेजकर, उसकी पत्नी को अपने वश में कर लेता है । यह घटना नौकर अपनी आँखों से देखता है । इसमें पूँजीवादी समाज के प्रति विरोधी भावना व्यक्त होती है । डॉ. लक्ष्मीनारायण कहते हैं -

''इनाक जी की कहानियों में पीडा, शोषण आदि के प्रति विरोधी भावना व्यक्त की गयी है और साथ - साथ आदर्शवादी तत्व भी दिखायी पडते हैं । इनकी कहानियों में सामाजिक मूल्यों का भी समर्थन किया गया है ।'' [10]

इदा जीवितं कहानी में स्त्री - पुरुष के बीच रहनेवाली आर्थिक दुर्बलता का वर्णन किया गया है । व्यक्तियों के बीच छिपे हुए स्वार्थ का चित्रण **प्रमादं** कहानी में किया गया है ।दोस्तों के बीच होनेवाले अटूट संबंध का विश्लेषण **मच्च तोलिगिंदि** कहानी करती है ।

अगरोत्ति कालिपोइंदि - कहानी में संदेश दिया गया है कि समस्याओं का परिष्कार आत्महत्या नहीं है । व्यक्तियों के बीच प्रेम बने रहने केलिए रक्त संबंध, विवाह संबंध और स्नेह संबंध का महत्व बताना ही रचनाकार का उद्देश्य है ।

सन.1960 के बाद इनाक जी ने सामाजिक समस्याओं के प्रति अपनी दृष्टि डाली । कहानी ऐसी होनी चाहिए, जो पाठकों के मन पर अपना असर डाले । इनाक जी ने नारी चेतना से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखीं । **पंदिरि लेनि तीगा** - कहानी में बताया गया है कि मृत्यु समस्याओं का परिष्कार नहीं है । नारी को रसोई घर तक सीमित रखना, दहेज की वेदना, विलास पूर्ण जीवन आदि समस्याओं से नारी को मुक्त करने केलिए आवश्यक सूत्र कहानीकार ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया ।

इनाक जी दलित नारी चेतना के अभिलाषी हैं । उनकी कहानी **ऊरबावि** इस केलिए सच्चा सबूत है । व्यथा से संपन्न दलित जीवन से मुक्ति पाना ही **सूर्युडु तलेत्ताडु** कहानी का सारांश है । भूख मिटाने केलिए एक दलित को कितना कष्ट सहना पडता है - इसका वर्णन **आकलि** कहानी में किया गया है ।

एक दलित होने के नाते इनाक जी ने जाति - भेद की विवक्षता के प्रत्यक्ष साक्षी बने । उनके जीवन में जो घटनाएँ घटीं, उन्हीं का प्रतिबिंब उनकी कहानियों में दिखायी पडता है । डॉ. लक्ष्मीनारायण का कथन है -

''जीवन के अर्थ को समझने केलिए जीवनानुभव काफी नहीं है ।उस केलिए कुछ सामाजिक सिद्धांतों की आवश्यकता है ।'' [11]

इसी उद्देश्य से इनाक जी ने कुछ कहानियाँ लिखीं । वे हैं - संस्करण, एदि गम्यं, इदें न्यायं, आदि । इनकी कहानियों का लक्ष्य है - दलित शोषण के विरुद्ध लडना ।

अपने मालिक वीरन्ना से किये गये अन्याय का बदला लेना ही नागलिंगं का उद्देश्य है ।इसी उद्देश्य से लिखी गयी कहानी है, **तल लेनोडु** । डॉ.रघुराम अपने गुरु से सभी उत्तम लक्षण सीखता है । जब गुरु के बेटे को नौकरी देने केलिए अच्छा अवसर मिलता है, तब डॉ.रघुराम के मन में नैतिक - अनैतिक के बीच संघर्ष चलता है । यही **क्षमाभिक्ष** कहानी का सारांश है ।

कट्टडि कहानी साहित्य जगत में इनाक जी की कीर्ति पताका फहरानेवाली कहानी है । निम्न जातियों के उद्धार केलिए ये कहानियाँ पथ - प्रदर्शक के बराबर हैं । समाज में अस्पृश्य माने जानेवाले कुछ जातियों के अस्तित्व को स्थिर रखने का प्रयत्न **अस्पृश्य गंगा** नामक कहानी में किया गया । भूख के कारण मानव संबंध भी टूट जाते हैं और मित्र भी शत्रु बन जाते हैं । ऐसी विवशता का दर्शन **कोलिमि** कहानी से होता है । नारी को भी आर्थिक स्वावलंबन चाहिए । इसी का समर्थन करते हुए, दहेज रूपी राक्षसी व्यथा का खंडन **इदी कथा** में किया गया है ।

विष्णु भगवान के दशावतारों का लक्ष्य दुष्टों का नाश और सज्जनों की रक्षा । इसी भावना का समर्थन **पोट्ट पेगुलिब्बंदिगोडु** कहानी में इनाक जी करते हैं । जिस प्रकार का व्यवहार भगवान नरसिंह मूर्ति हिरण्यकश्यप से करता है, वैसा ही व्यवहार मुखिया के प्रति इब्बंदिगोडु करता है । इसी भावना से लिखी गयी और एक कहानी है, **गोडु दोंगा** । जब अन्याय बढ जाता है, तब एक निर्बल भी सबल बनकर धीरज से अन्याय का सामना करता है । अन्याय करनेवाले रेड्डी से एक वचन में बोलकर,ओबुलेसु अपनी धीरता **एदि आयुधं** कहानी में प्रकट करता है ।

गुडि कहानी में बताया गया है कि अच्छे लोगों को ही मंदिर में स्थान मिलता है । आंजनेयुलु पेद्दम्मा मंदिर का पुजारी है, जो रंगय्या नाम से पुकारा जाने लगता है । लोगों का विश्वास है कि उसके हाथ से सिंधूर लेने से मन की इच्छा पूरी होती है । राजनैतिक नायक उसके हाथों से सिंधूर लेना चाहता है । लेकिन रंगय्या इनकार करता

है । क्योंकि अधिकतर राजनैतिक नायक अपने वादे नहीं निभाते । यही भावना **जिंदाबाद** कहानी में भी बताया गया है कि चुनाओं के पहले जो वादे करते हैं, उनको जीतने के बाद नहीं निभाते । **पल्टी** कहानी से यह पता चलता है कि उन्नत पद प्राप्त होने से अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए । **दोंगा** कहानी में बताया गया है कि परिस्थितियों के प्रभाव से भी कुछ लोग चोर बन जाते हैं । अपनी बूढी पत्नी केलिए ही 90 वर्षों का एक वृद्ध चोर बनता है । कवि संदेश देते हैं कि अगर लोग उसकी सहायता करते हैं तो वह चोर नहीं बनता । **अमृतं** कहानी की रमा विवाह विच्छेद नारी है । वह एक दवाखाने में काम करती है । रवि उससे विवाह करने केलिए तैयार होता है । यहाँ इनाक जी दूसरी शादी का समर्थन करते हैं । **गृह हिंसा** कहानी से पता चलता है कि कानूनों से डरने की जरूरत नहीं । गलत फहमी से कुछ लोग मुश्किल में पड जाते हैं । इस कहानी में कृष्ण मूर्ति गृह हिंसा कानून से डरकर,पत्नी पर इतना प्रेम दिखाने लगता है, कि वह खीज जाती है । अतः कहानीकार उपदेश देते हैं कि कानूनों को ठीक - ठीक समझना चाहिए ।

इनाक जी ने लगभग दो सौ कहानियाँ लिखीं । उनकी सारी कहानियाँ कुछ संग्रहों में प्रकाशित की गयीं । उन्हीं कहानियों में से चुनकर अब **दलित कथलु** नाम से एक कहानी संग्रह प्रकाशित किया गया । इसमें दलित चेतना से संबंधित कहानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं ।इनाक जी की कहानियों में भाव - सौंदर्य दिखायी पडता है और उन्होंने कथा चेतना को जन्म दिया । उनसे युवा - रचनाकारों को ऐसी प्रेरणा मिलती है, जो वर्णनातीत है ।समाज में निम्न जातियों की स्थिति को समझकर,उनको उन्नत शिखरों पर चढने की प्रेरणा देनेवाले महान लेखक पद्मश्री कोलकलूरि इनाक जी हैं , जो तेलुगु साहित्य - गगन में देदीप्यमान नक्षत्र के बराबर हैं ।

2.2.3. *नाटक - साहित्य :*

इनाक को नाटक - रचना में भी विशिष्ट स्थान है । उन्होंने नाटकों की रचना करने के साथ - साथ अभिनय भी करते थे । इस प्रकार एक कलाकार के रूप में भी वे अपना स्थान स्थिर रखते हैं ।

उनके नाटक हैं -

दृष्टि	-	1960
जैहिन्द	-	1963
की	-	1968
कोलकलूरि नाटक साहित्य	-	1983
मुनिवाहनुडु	-	1983
ज्योति	-	1984
अभ्युदयं	-	1985
साक्षि	-	1988
अम्मा	-	1999

2.2.4. *कविता संग्रह :*

डॉ. इनाक जी बहुमुख प्रतिभा संपन्न लेखक हैं । उन्होंने अनेक कविताओं की भी रचना करके तेलुगु साहित्य - भंडार को भर दिया । उनकी कविताएँ हैं -

आश ज्योति	-	1972
षरा मामूले	-	1979
कुलं - धनं	-	1985
नन्नु कलगननिव्वंडि	-	1999
कलल कार्खाना	-	2008
त्रिद्रव पतकं	-	2008
चेप्पुलु	-	2008
आदि आन्ध्रुडु	-	2009
मेरुपुल आकाशं	-	2010

इनाक जी ने अंग्रेजी में भी **वाइस आफ सैलेन्स** नामक कविता लिखकर अपनी प्रतिभा प्रकट की ।

2.2.5. *अनुसंधान के क्षेत्र में अनुभव :*

डॉ. इनाक जी ने पी.एच.डी. के बाद तेलुगु भाषा के इतिहास पर और एक शोध प्रबंध लिखे । उन्होंने दस लघु शोध - प्रबंध और दस उच्च शोध - प्रबंध पूरा किए । उनके निर्देशन में 35 पी.एच.डी. उपाधियाँ, 18 एम.फिल की उपाधियाँ प्रदान की गयीं ।उनके लगभग 130 शोघ -प्रपत्र प्रकाशित हुए । उन्होंने अनेक जातीय - अंतर्जातीय संगोष्टियों में भाग लेकर 180 प्रपत्र प्रदान किए । यही नहीं, विविध कार्यक्रमों में, कलाशालाओं में, विश्वविद्यालयों में उन्होंने लगभग 160 से ज्यादा भाषण दिये । उनके भाषण में सबको मंत्रमुग्ध करने की शक्ति है ।

आलोचना के क्षेत्र में भी उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किये ।इस क्षेत्र में उनकी 15 पुस्तकें प्रकाशित हुईं ।उनके साहित्य पर अनेक शोध विद्यार्थी पी.एच.डी. और एम.फिल.
कर रहे हैं । अभी तक 9 पी.एच.डी. और 10 एम.फिल. शोध - प्रबंध पूरे हुए और 10 से ज्यादा शोध कार्यक्रम अब चल रहे हैं । यही नहीं, उनके साहित्य पर अनेक संगोष्टियाँ भी चलायी गयीं ।

2.2.6. *अनुवाद साहित्य :*

प्रो.इनाक जी ने अनुवाद के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय कार्य किये । उन्होंने बैबिल का अनुवाद तेलुगु में किये । उसके प्रकाशन का कार्य अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय बैबिल अनुवादकों ने ले लिया ।

इनाक जी के साहित्य का अनुवाद अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल तथा कन्नड भाषाओं में किया गया । **मुनिवाहनुडु** नाटक अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल तथा कन्नड भाषाओं में किया गया । उनकी 17 कहानियाँ अंग्रेजी में, 7 कहानियाँ हिन्दी में, 21 कहानियाँ कन्नड भाषा में, 27 कहानियाँ तमिल भाषा में अनूदित किये गये । उनकी अंग्रेजी कविताओं का संग्रह

वाइस आफ सैलेन्स की कुछ कविताओं का अनुवाद साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उप अध्यक्ष प्रो.एस.एस.नूर ने पंजाबी भाषा में किया ।

2.3. *निष्कर्ष :*

आचार्य कोलकलूरि इनाक जी सामाजिक दृष्टि रखनेवाले कथाकार हैं । वे समाज के दु:ख, जोश, गरीबीपन, मानवीय मूल्यों के विघात के प्रति आक्रोश व्यक्त करने केलिए अपनी कहानियों का आधार लिया । उनके साहित्य में ' कहानी ' रीढ के बराबर है ।

श्री ताल्लूरि लाबन बाबू का कथन है - '' श्री कोलकलूरि इनाक जी की रचनाओं की विशेषता यह है कि वे पाठकों केलिए चश्मे के बराबर हैं, जो समाज को देख नहीं सकते या पढ नहीं सकते । ये चश्मे रखकर,पाठक, समाज का अध्ययन कर सकता है '' । [12]

आचार्य इनाक जी का सारा साहित्य, उन्हीं का प्रतिबिंब है, जो उन्होंने स्वयं अपने जीवन में अनुभव किया । समाज की दुर्बलता के प्रति सहानुभूति, मनुष्य की वेदना आदि उनको कवि, रचनाकार,नाटककार, निबंधकार, कहानीकार, उपन्यासकार,आलोचक तथा शोधार्थी बनने के प्रेरक बने ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. इनाक जी, समाज में निम्न दृष्टि से देखे जानेवाले दलित होकर भी,अपने लिए उन्नत स्थान रखने में सफल - सिद्ध हुए । अपने जीवन में आये उथल - पुथल का सामना करके, एक आदर्श व्यक्ति के रूप में जिंदगी बिताकर, अनेक लोगों केलिए स्फूर्तिदायक बने । अत: उनके व्यक्तित्व से पता चलता है कि अपनी बात पर अडिग रहनेवाले समर्थ व्यकित हैं, पद्मश्री केलकलूरि इनाक ।

संदर्भ - सूची

1. निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ - डॉ.सरोज मार्कंडेय - पृ. 12

2. आचार्य कोलकलूरि इनाक कथलु - वस्तु वैविध्यं - डॉ. के. आनंद राव - पृ. 17.

3. नान्न - आचार्य कोलकलूरि मधु ज्योति - पृ. 24.

4. वही - पृ. 73

5. वही - पृ. 73

6. वही - पृ. 74

7. साहित्य समालोचनं - डॉ.कोलकलूरि आशा ज्योती - पृ. 108

8. वही - पृ. 109

9. कथा रचइतल्लो आदर्शप्रायुडु कोलकलूरि - ताल्लूरि लाबन बाबू - पृ.3
(आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं)

10. तेलुगु कथानिका साहित्यंलो इनाक स्थानं - डॉ. के ळक्ष्मीनारायण
(आचार्य कोलकलूरि इनाक षष्टि पूर्ति संचिका - पृ. 103)

11. वही - पृ. 105

12. कथा रचइतल्लो आदर्शप्रायुडु कोलकलूरि - ताल्लूरि लाबन बाबू - पृ.4
(आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं)

तीसरा अध्याय

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

तीसरा अध्याय

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

3.0. *प्रस्तावना :*

हम भारतीय हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं । हमारे पूर्वजों, ऋषियों, मनीषियों तथा महापुरुषों ने जो परंपराएँ, आदर्श तथा मूल्य स्थापित किये हैं, उनमें से बहुत से आज तक कायम हैं । हमारी सभ्यता और संस्कृति की कुछ विशेषताएँ हैं - बडों की इज्जत करना, सभी से सम्मानजनक व्यवहार करना, गरीबों तथा दुखियों की सहायता करना, झूठ नहीं बोलना, किसी को धोखा नहीं देना,हमारे आदर्शों में शामिल हैं । वे आदर्श, परंपराएँ, मूल्य, मर्यादाएँ हमारी संस्कृति के अटूट हिस्से हैं । मानव - जीवन की सार्थकता मूल्य परायण जीवन बिताने में हैं । ये मूल्य ही किसी भी समाज, जाति, देश या राष्ट्र की गरिमा के परिचायक होते हैं । वहाँ की सांस्कृतिक महिमा की आधार - भूमि, वहाँ के ये जीवन्त मूल्य ही होते हैं ।

3.1. *मूल्य : व्युत्पत्यार्थ :*

'मूल्य' शब्द संस्कृत की मूल धातु में 'यत' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अभिप्राय है - किसी वस्तु के विनिमय में दिया जानेवाला धन, दाम, बाजार भाव आदि । [1]

'मूल्य' का यह शाब्दिक अर्थ अर्थशास्त्रीय संदर्भ की ओर संकेत करता है । यह सत्य है कि 'मूल्य' शब्द अपने प्रारंभिक काल में केवल अर्थ शास्त्र के अर्थ के रूप में ही प्रयुक्त होता था । परन्तु समय परिवर्तन के साथ - साथ ' मूल्य 'शब्द भी विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त होनेवाला है । मूल्य अंग्रेजी के **' Values'** शब्द का पर्याय है । **'Value'** शब्द लैटिन भाषा के **'Valere'** से बना है, जिसका अर्थ अच्छा, सुन्दर,**(' Well ')** होता है । विभिन्न विद्वान 'मूल्य' या 'वैल्यू' शब्द का संबंध दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, समाज विज्ञान, अर्थ शास्त्र, सौन्दर्य शास्त्र राजनीति विज्ञान, मानविकी आदि विभिन्न ज्ञान शाखाओं के साथ मानते हैं ।

अतः मूल्य शब्द की आवश्यकता, प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयोग होता है । यही कारण है कि इस शब्द के अर्थ के संबंध में अधिक सतर्कता अपेक्षित है । यद्यपि परिस्थितियों और संदर्भ,मूल्य के स्वरूप को प्रभावित करती हैं,परंतु शाश्वत मूल्य ज्यों के त्यों ही रहते हैं ।

'' आज मनुष्य पुराने विचारों को काल - बाह्य समझने लगा है । प्राचीन मूल्य अस्वीकृत हो रहे हैं और नये - नये मूल्य स्वीकार किये जा रहे हैं ।''[2]

'' मूल्य हमारी निजी अभिवृद्धि का वह कार्य है, जो नसर्ग और मनुष्य के बीच होनेवाले संघर्ष के परिणाम स्वरूप शेष बचता है । अर्थात जिसकी उपयोगिता एक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र अथवा विश्व केलिए उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण परिग्रहण है और साथ ही वह आस्तिक तथा निर्धारक प्रवृत्ति भी है । मूल्य स्वयं एक व्यवस्था है और 'मूल्य' की भी अपनी एक प्राकृतिक व्यवस्था है ।''[3]

3.2. *मूल्य - परिभाषा एवं स्वरूप :*

''मूल्य, व्यक्ति का जीवन संबंधी दृष्टिकोण है, जो समाज के साथ मिलकर विकसित होता है । मूल्य एक ऐसी धारणा है,जो मूल्यतः व्यक्ति के जीवन में पनपती है ।परंतु जिसका विकास समाज की ओर होता है,जो समाज में आचरण -व्यवहार संबंधी मान्यताओं, विश्वासों और अभिलाषाओं को तोलती है, उनका मानदंड करती है । 'मूल्य' जन समाज की वह रीढ है, जिसके बल पर समाज अस्तित्ववान होता है । किसी समाज की संस्कृति का अध्ययन उस समाज में प्रचलित मूल्यों के आधार पर ही संभव है ।''[4]

'' मूल्य ही समाज को सही दिशा देते हैं । अतः मूल्य पथ - प्रदर्शक भी हैं । मूल्य का जीवन व समाज से इतना घनिष्ट संबंध होने के कारण विभिन्न विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयत्न किया है । यथा - नगेन्द्र के अनुसार - ''मूल्य उस गुण या गुण समुदाय का नाम है,जो किसी पदार्थ को अपने लिए या अपने परिवेश केलिए सार्थकता का निर्धारण

करता है । पदार्थ का गुण होने के कारण, मूल्य की सत्ता वस्तुपरक है, किन्तु प्रमाण सापेक्ष होने के कारण वह व्यक्तिपरक है ।'' [5]

जगदीश गुप्त के अनुसार - ''जो वस्तु मानव मन में प्रसाद, प्रेरणा, सार्थकता, अपूर्ति तथा परितोष की अनुभूति उत्पन्न कराने में सक्षम होती है, वही मूल्यवान प्रतीत होने लगती है ।''[6]

ओमप्रकाश सारस्वत के अनुसार - ''मूल्य के श्रेष्ठ आचरणीय मान्यताएँ हैं, जो समाज की हित कामना से युक्त होती हुई उसे गति, प्रेरणा व दिशा देती हैं, जिसका समाज के चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है ।''[7]

बृहत सूक्ति कोश की शुक्र नीति में कहा गया है -

'' करुणादि समायोगात्पदार्थ वस्तुभवेत भुवि ।
येन व्ययेन संसिद्धि स्तद् व्ययस्तस्य मूल्यकाम ।''[8]

रोहित मेहता के अनुसार - '' मूल्य न तो किसी मशीन द्वारा उत्पादित वस्तु है, न ही किसी सरकार द्वारा निर्मित कानून । मूल्य तो जीवन के प्रति एक गुण है, अन्तदृष्टि है, एक अवधारणा है और दृष्टिकोण है ।'' [9]

'A value is not a Commodity manufactures by machines nor is it established by a Government fail. It is a quality an insight, an attitude, an outlook towards life.'

परिभाषाओं और विविध मंतव्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल्य एक ऐसी धारणा है, जो जीवन को गति प्रदान करके, मानव को विशिष्ट आचरण के माध्यम से आत्मोपलब्धि की ओर अग्रसर करके, बाह्य और आन्तरिक रूप से मानव जीवन को समृद्ध, सुन्दर और गतिमान बनाते हुए आदर्श प्रस्तुत करती है । जो वस्तु व्यक्ति के मन को शांति देकर, उसकी प्रेरणा बनती है और आप में सार्थक महत्व रखती है, वह मूल्यवान है । यानी, किसी वस्तु की केन्द्रीय गुणवत्ता और मानव जीवन केलिए उसकी उपयोगिता ही मूल्य बन जाती है ।

3.3. *मूल्य का महत्व :*

भारतीय मूल्य चिंतन प्रायः ईश्वरवादी रहा है । प्राचीनकाल में ईश्वर के प्रति आस्था और धर्मपरक दृष्टि मानव मूल्य के केन्द्र बिंदु हैं । रामायण और महाभारत के युग में मूल्य का संबंध मानक के साथ जोडा गया है । धर्म और आस्था हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं । किन्तु धर्म का रूप विकृत हो गया । ठीक इसी क्रम में मूल्यों का भी नाश होने लगा । आज के युग में परम्परागत मूल्यों का विघटन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । परन्तु समाज की स्थिति और व्यवस्था बनाये रखने केलिए मूल्यों की आवश्यकता है । मानव समाज अगर मूल्य विहीन हो गया तो हमारी परम्परागत सभ्यताओं का नाश होगा । व्यक्ति जानवर से बदत्तर बन जाएगा । मूल्य मानव व्यवहार को नियंत्रित रखने में सहायक होते हैं । मूल्य, समाज के आधार स्तंभ हैं और मूल्यों के पालन से चरित्र - निर्माण होता है । उस प्रेरणा के द्वारा व्यक्ति और समाज के औचित्य को परखा जाता है । इस प्रकार मूल्य केवल मानव व्यवहार को दिशा ही नहीं प्रदान करते बल्कि अपने आप में एक आदर्श प्रस्थापित करते हैं।

''मूल्य मानव जीवन को स्थायित्व प्रदान करते हैं । मूल्यों के द्वारा सामाजिक विघटन रुकता है । सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है । मूल्यों से सुरक्षा, शांति एवं प्रगति होती है और अव्यवस्था रुकती है ।''[10]

3.4. *मूल्य की आवश्यकता :*

भारतीय जीवन प्रणाली में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि मूल्यों का असाधारण महत्व है । परन्तु वर्तमान काल में इन मूल्यों की उपेक्षा की जा रही है । इसका कारण पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाना ही है । यही नहीं, विज्ञान की प्रगति के कारण, मानव जीवन में बहुत ही परिवर्तन आया है ।मनुष्य जीवन में भौतिक सुख -सुविधाओं का महत्व बढ गया है । परिणाम यह हुआ कि सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से पारम्परिक मूल्यों की उपेक्षा होने लगी । हर

मूल्यों के संवर्धन से समस्या का नाश होता है । सुखी और आनंदमय जीवन जीने केलिए मनुष्य के जीवन में मूल्यों का स्थान आवश्यक है ।मूल्य हीन समाज के कारण ही समस्याएँ निर्माण होती हैं । सुसंस्कृत मानव विकास केलिए मूल्यों के आचरण की आवश्यकता है । संस्कारहीन समाज, संयुक्त परिवार का विघटन, समाचार पत्रों का बाजारूपन, उद्देश्य हीन लेखन, शैक्षणिक संस्थाओं की व्यावसायिकता,समाज में आदर्शों की कमी आदि मूल्य हीनता के कारण है । लेकिन आजकल भ्रष्ट समाज को ही अधिक प्रतिष्ठा मिलती है और गुणोंवाले लोगों की उपोक्षा की जा रही है । आज व्यक्ति तनाव पूर्ण जीवन जी रहा है । कई कारणों से भारतीय समाज में मूल्य हीनता बढती ही जा रही है ।यहाँ तक शिक्षा व्यवस्था से संबंधित अध्यापक से लेकर कुलपति तक और सिपाही, उच्च अधिकारी, न्यायमूर्ति - आदि सभी स्तर के लोगों को मूल्य हीनता के परिणाम से गुजरना पडता है । मात्र देश में कारखानों तथा कम्पनियों के विकास में भौतिक विकास तो हो सकता है, परन्तु सही विकास राष्ट्रीय चरित्र मूल्यों के विकास के कारण ही होता है ।

''डॉ अम्बेडकर् ने राष्ट्रीयता को सामने रखकर ही संविधान का निर्माण किया तो छत्रपति शिवाजी ने राष्ट्रीय चरित्र के आधार पर स्वतंत्र हिन्दू स्वराज की निर्मिती की । इतना ही नहीं महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय चरित्र मूल्य के आधार पर भारत देश को स्वतंत्रता प्राप्त करा दी । आज जापान हो या जर्मनी राष्ट्रीय मूल्य के आधार पर अपनी भौतिक प्रगति कर रहा है । '' [11]

अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान युग में परम्परागत मूल्यों का होना आवश्यक है । लेकिन डॉ. भारती का कथन है - '' मनुष्य के अथक परिश्रम का फल है, सत्य, अहिंसा, सहानुभूति इत्यादि मूल्य परम्परागत समाज से प्राप्त होते हुए भी, जीवन में उनकी परिणति प्रयत्न द्वारा ही संभव हुई है ।'' [12]

3.5. *मूल्य का वर्गीकरण :*

मानव के मूल्यों में मनुष्य की अवधारणाएँ, विचार, विश्वास,मनोवृत्ति, आस्था या निष्ठा आदि मानवीय गुणों का समावेश होता है । ये मूल्य, एक ओर व्यक्ति के अंतःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परंपरा, क्रमशः विस्तृत एवं परिपोषित होती है एवं जनता का अधिकतर कल्याण, इन मूल्यों की कसौटी मानी जाती है ।

मूल्य का वर्गीकरण पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है ।

अरबन ने मूल्यों को - शारीरिक, आर्थिक, मनोरंजनात्मक, सामाजिक, चारित्रात्मक, सौन्दर्यात्मक, बौद्धिक एवं धार्मिक मूल्यों में वर्गीकृत किया है । पैरो ने -सकारात्मक मूल्य व नकारात्मक मूल्य के रूप में विभाजित किया ।

कार्निल ने दो प्रकार के मूल्य बताये - नियात्मक मूल्य और क्रियात्मक मूल्य ।

सी.एम.केस के अनुसार, मूल्य चार प्रकार के होते हैं - सावयवी मूल्य, विशिष्ट मूल्य, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य ।

भारतीय विद्वानों में डॉ. देवराज ने स्थायित्व की दृष्टि से मूल्यों को शाश्वत एवं नश्वर - दो रूपों में विभाजित किया है । [13]

डॉ. हुकुमचन्द्र राजपाल ने 'भौतिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सात्विक तथा आध्यात्मिक - चार भागों में मूल्य - विभाजन किया । [14]

डॉ. मोहिनी शर्मा के अनुसार - जैविक और पारजैविक - दो भागों में विभाजित किया गया । [15]

इस प्रकार विभिन्न दार्शनिकों ने मूल्यों को अपने पृथक - पृथक दृष्टिकोणों से वर्गीकृत किया । परन्तु स्थूल रूप से मूल्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - शाश्वत मूल्य और परिवर्तनीय मूल्य ।

शाश्वत मूल्य :

इन्हें बाह्य मूल्य भी कह सकते हैं । ये सनातन धर्म या साम्यक धर्म हैं, जो कि निरपेक्ष होते हैं तथा सभी कालों में सभी देश, जाति,वर्ग के लोगों द्वारा इन्हें समान भाव से स्वीकृत एवं पालन किया जाता है । अतः ये शाश्वत होते हैं । प्रेम, अहिंसा, शांति और सदाचार इसी प्रकार के मूल्य हैं । ये शाश्वत मूल्य अन्य मूल्यों की प्राप्ति के साधन माने जाते हैं एवं उनकी प्राप्ति में सहायक होते हैं ।

परिवर्तनीय मूल्य :

इन्हें भारतीय संस्कृति में 'युग धर्म ' नाम से जाना जाता है । ये समाज व संस्कृति के अनुरूप बदलते रहते हैं । इन मूल्यों के अंतर्गत देश, जाति ,वर्ण, लिंग, पुत्र, पति, पत्नी, गुरु आदि धर्मों या कर्तव्यों का समावेश होता है । ये परिवर्तनशील होते हैं तथा समय व परिस्थिति के अनुसार इन्हें बदला जा सकता है ।

3.6. *समाज : परिभाषा एवं स्वरूप :*

3.6.1. *समाज शब्द का अर्थ :*

'समाज' शब्द की उत्पत्ति लाटिन भाषा के धातु से हुई है, जिसका अर्थ समाज, संगति, मंडल और संस्था है । [16]

' समं अजन्ति जनाः अस्मिन इति '- यह समाज का अर्थ है, जिसमें लोग मिलकर, एक साथ, एक गति से चलें, वही समाज है । एक साथ या एक गति से चलने का अर्थ - फौजी सिपाइयों की भाँति किसी एक दिशा में कदम मिलाकर चलना नहीं है । तात्पर्य तो यह है कि उन लोगों की, जो समाज के अंग हो, परिस्थिति एक सी हो, उनके प्रयत्न और उद्देश्य एक से हों । [17]

जयदेव सिंह के उद्देश्य में समाज का अर्थ है - ''मिलना, एकत्र होना, समूह, संघ, दल, सभा, समिति, समान कार्य करनेवालों का समूह,विशेष उद्देश्य की पूर्ति केलिए संगठित संस्था ।'' [18]

3.6.2. *समाज की संरचना एवं परिभाषाएँ :*

समाज मानवीय संबंधों से बनता है और इन संबंधों के मूलभूत तत्व है, प्रेम और सहयोग की भावना ।

डॉ. कुँवर सिंह के शब्दों में - समाज का अस्तित्व हमेशा किसी सामाजिक संरचना के रूप में ही पाया जाता है । एक ऐसे संगठन के रूप में, जो निरंतर विकसित होता रहता है तथा जिसके प्रमुख क्रियाकलाप किसी दैवी शक्ति पर नहीं , बल्कि उत्पादन प्रणाली के विकास पर आधारित होते हैं । [19]

अतः समाज एक क्रियात्मक संगठन, संस्था, सभा, समूह है, जिसमें मानवीय संबंध और विशिष्ट उद्देश्य निहित होते हैं । जिस प्रकार शरीर के अंगों में घनिष्ठता रहती है और सब अंग मिलकर, शरीर के अस्तित्व को मुखरित करते हैं, ठीक इसी प्रकार चार वर्गों में घनिष्ठता रहती है । परन्तु कालांतर में वर्गों की घनिष्ठता विकृत हो गयी और ब्राह्मण उच्च और अभिजात वर्गों का अंग बन गये । क्षत्रिय और वैश्य भी अपने - अपने कार्यों में संलग्न थे और तीन वर्गों ने शूद्र की उपेक्षा कर दी और पदों से उत्पन्न होने की वजह से शूद्र वर्ग को नीच और निकृष्ठ मानकर, उपेक्षित कर दिया ।

आज के समाज में धन एक महत्वपूर्ण तथ्य है । वित्त के आधार पर समाज के तीन स्थर हैं - उच्च, मध्य और निम्न । धन के आधार पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सामाजिक स्थिति जानी जाती है ।

' समाज को - पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टि से परस्पर संबंधित व्यक्तियों का समूह कहा जा सकता है । ' [20]

समाज हमेशा परिवर्तनशील है, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलाव होता रहता है । समाज का एक प्रत्येक नियम व एक प्रत्येक विधि होती है, जिसका पालन समाज के हर सदस्य को करना पडता है ।

3.6.3. *साहित्य और समाज :*

मनुष्य विचारशील प्राणी है । वह निरंतर अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग करता रहता है । ऐसा न होता तो अस्तित्व और प्रगति केलिए चलनेवाले संघर्ष में कृतकार्य नहीं होता । समाज की सुषुप्त विवेक शक्ति को जागृत करना साहित्य का उद्देश्य है ।

' व्यक्ति का युगीन तथा भौगोलिक परिवेश उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है । साहित्यकार आम आदमी से अधिक संवेदनशील और चिंतनशील होने के कारण, यह प्रभाव एक प्रेरणा के रूप में ग्रहण करता है । ' [21]

साहित्य, समाज का प्रतिबिंब माना जाता है । समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब हमें साहित्य में दिखायी पडता है । साहित्य, समष्टिगत चेतना की उपज होने के कारण साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है । साहित्य और समाज को दो समानांतर रेखाएँ मानें तो इन दोनों को मिलानेवाली रेखा युग चेतना ही है । साहित्य केलिए आवश्यक सामग्री युग प्रदान करता है और साहित्यकार उस युग बोध को सम्प्रेषित कर साहित्य की सृष्टि करता है ।

' साहित्य, मनुष्य के स्वप्नों और कल्पनाओं को रूप देनेवाली सशक्त कला है । समसामयिक घटनाओं से निरपेक्ष होकर अच्छे साहित्य का सृजन संभव नहीं है ।' [22]
मूलतः साहित्य का आधार जीवन है ।

' हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो जीवन भी सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्यों कि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है । [23]

साहित्य का सृजन करनेवाला साहित्यकार, एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज में ही जन्म लेता है, विकास पाता है और समाज में ही उनकी जीवन यात्रा का अंत होता है ।

इस प्रकार साहित्यकार बहुधा अपने देश - काल से प्रभावित होता है । जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार केलिए अविचलित रहना असंभव हो जाता है । उसकी विशाल आत्मा अपने देशवासियों के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है । उसके रुदन से साहित्य की सृष्टि होती है । अतः -

' साहित्यकार जिन परिस्थितियों में रचना करता है, वह उसका सामाजिक परिवेश है । कृति की रचना जिन सामाजिक संदर्भों को आधार बनाती है और जिन परिस्थितियों में पूर्ण होती है, वह कृति का सामाजिक परिवेश है ।पाठक का परिवेश इन दोनों से प्रायः भिन्न होता है । इन तीनों सामाजिक परिवेश का विश्लेषण साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन है ।' [24]

'साहित्यकार समाज का सदस्य होता है । स्वयं से संबंधित देश -काल गत भीतरी एवं बाहरी परिस्थितियों का वह भोक्ता एवं द्रष्टा होता है । ' [25]

यही नहीं, सामान्य व्यक्ति की तरह अपने अस्तित्व को बनाये रखने केलिए, उसे समकालीन परिस्थितियों तथा प्राकृतिक तत्वों से भी जूझना पडता है । जीवन - यापन करते हुए, कुछ आनंदमय, संघर्षमय जो अनुभव प्राप्त होते हैं, उनके बोध को सामाजिक दायित्व के माध्यम से वह सर्जित करता है ।

डॉ. राम जी तिवारी के अनुसार - ' समाज के प्रत्येक सदस्य की छोटी सी छोटी चेतन क्रिया किसी न किसी रूप में सामाजिक हुआ करती है ।' [26]

इस प्रकार साहित्यकार, सामाजिक प्रश्नों से जूझता हुआ, अनुभवों के माध्यम से रिश्ता जोडता हुआ एक जीवन - पहचान समाज के माध्यम से प्रस्तुत करता है । मतलब यह है कि सामाजिक अनुभव बोध और चेतना के आधार पर साहित्यकार जीवन मूल्यों का विवेचन करता है ।

3.6.4. *समाज और मूल्य :*

समाज का संचालन कतिपय मूल्यों के आधार पर होता है । मूल्यों के अभाव में अव्यवस्था तथा अराजकता उत्पन्न हो सकती है । वस्तुतः मूल्य, उन विचारों तथा क्रियाओं पर आधारित होते हैं, जो समूह की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं । इसीलिए समाज शास्त्रवेत्ताओं तथा समाजवादी चिन्तकों ने मूल्यों को समाज केलिए महत्वपूर्ण माना है तथा उन्हें सामाजिक परिवेश में परिभाषित करने का भी प्रयत्न किया है । वस्तुतः मूल्य उन विचारों तथा क्रियाओं पर आधारित होते हैं, जो समूह की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं ।

' मूल्यों की दृष्टि से समाज का विशेष महत्व माना जाना चाहिए, क्योंकि सामाजिक संरचना एवं आक्रोश के फल स्वरूप मूल्य भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते ।' [27]

'मूल्य ही परंपरा से चले आ रहे विचारों को जीवित रखते हैं । उनकी जडों को मुरझाने से बचाते हैं । गोल्डस्मिथ ने मूल्य को सांस्कृतिक संस्थापक कहा है । इसीलिए कहा जा सकता है कि मूल्य ही समाज में वास्तविक प्रभाव रखने के सांस्कृतिक माध्यम है ।' [28]

गिरिराज शर्मा गुंजन के विचार में - 'समाज एक ऐसा समुद्र है, जहाँ वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक चिन्ताधाराओं के ज्वार उठ - उठ कर सिमटते रहते हैं । अर्थात ये सभी विचारधाराएँ अंततोगत्वा समाज काही एक अंग हैं । पश्चिम के अनेक समाजशास्त्रियों के अनुसार भी मूल्यों का संबंध सामाजिक विषय से है । अर्थात मूल्य सामाजिक विषय का ही अंग है ।' [29]

सामाजिक दृष्टि से मूल्यों को इस निष्कर्ष पर परखा जाता है, जिसके द्वारा समुदाय या समाज, व्यक्तियों, पद्धतियों, उपलब्धियों तथा अन्य उद्देश्यों का निर्णय करता है । मूल्य एक ऐसा मापदंड है, जो सम्पूर्ण संस्कृति एवं समाज को अर्थ एवं महत्ता प्रदान करता है ।

प्रत्येक चिंतन का आधार समाज या समुदाय है । मूल्य का स्रांत भी समाज ही होता है । समाज ही मूल्य का जन्मदाता है । समाज के बिना मूल्यों का अस्तित्व संभव नहीं है । [30]

विभिन्न विद्वानों के विचारों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक अंतः क्रियाओं से ही मूल्य का जन्म होता है, जो समाज में अनुशासन तथा सद्भाव रखने केलिए अति आवश्यक है । समाज में रहने केलिए प्रत्येक व्यक्ति को मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए । इस प्रकार समाज और मूल्य का संबंध विश्व व्यापी या अनिवार्य है, जो अभिन्न व स्वयं सिद्ध है । सम्पूर्ण समाज ही मूल्य उत्पत्ति का कारण है । शरीर में रहनेवाले खून की तरह, जीवन में मूल्य संचरित रहते हैं ।

3.6.5. *साहित्य और मूल्य :*

' साहितस्य भावः इति साहित्यं ' कहकर साहित्य शब्द की व्याख्या की गयी है । इस व्युत्पत्ति के अनुसार साहित्य में हित की भावना का होना अनिवार्य है । यह हित की भावना मानव मूल्यों की प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रतिष्ठा में निहित है । साहित्य, मानव जीवन को स्वाभाविक और स्वाधीन बनाता है और मन पर संस्कार प्रतिबिंबित करता है ।

प्रेमचन्द जी का कथन है - 'साहित्य देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई भी नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है ।' [31]

तत्वतः साहित्य विध्वंश नहीं करता, निर्माण करता है । अतः कहा जा सकता है कि मानवीय जीवन की सारी क्षमता और शक्ति मूल्य ही है । अगर यह विचार किया जाय - साहित्य कौन लिखता है ? उत्तर मिलता है - मनुष्य ।जो मनुष्य साहित्य लिखता है, उसके दिल में मूल्य ठूँस - ठूँस कर जरूर भरे होंगे । इसलिए साहित्य का और मूल्य का अटूट संबंध है ।

3.7. *सामाजिक मूल्य : तात्पर्य और विश्लेषण :*

3.7.1. *व्यक्ति और समाज का संबंध :*

व्यक्ति और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । सिक्के के दो पहलू होते हुए भी व्यक्ति और समाज दोनों अभिन्न हैं । दोनों एक - दूसरे पर परस्पराश्रित हैं और एक - दूसरे से परस्पर प्रभावित होते हैं । कभी - कभी व्यक्तित्व इतना प्रबल हो जाता है कि उसके प्रभाव से समाज में आमूल परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । ऐसे व्यक्ति ही युग पुरुष कहे जाते हैं । समाज से अलग व्यक्ति और व्यक्ति से अलग समाज की कल्पना नहीं की जा सकती ।

' व्यक्ति और समाज का संबंध सापेक्ष कहा जा सकता है, क्योंकि एक के अभाव में दूसरे की परिस्थिति संभव नहीं । जहाँ तक व्यक्ति का संबंध है, उसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म क्रिया की अप्रत्यक्षता समाज से संलग्न एवं आश्रित है ।' [32]

व्यक्ति के स्वत्वों की रक्षा केलिए समाज बना है और समाज के अस्तित्व केलिए व्यक्ति की आवश्यकता रहती है । एक सामाजिक प्राणी स्वतंत्र और परतंत्र - दोनों ही है । जहाँ तक वैयक्तिक हितों की रक्षा केलिए निर्मित नियमों का संबंध है, व्यक्ति परतंत्र ही कहा जाएगा । क्योंकि ऐसा कोई कार्य करने केलिए स्वच्छंद नहीं, जिससे अन्य सदस्यों को हानि पहुँचे । परन्तु अपने और समाज के व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक विकास के क्षेत्र में व्यक्ति पूर्णतः स्वतंत्र रहता है ।

व्यक्ति और समाज - दोनों एक - दूसरे के पूरक हैं । डॉ. रामदरश मिश्र का कथन है - ' व्यक्ति अपनी अन्तर्गुहा में बन्दी सामाजिक सत्यों से अप्रभावित होकर, कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है और न कोई सार्थकता ही है । वह सामाजिक जीवन के प्रवाह में बहता हुआ, उसकी समूची चेतना को झेलता हुआ गतिशील सत्ता है ।' [33]

अतः व्यक्ति को सामाजिक परिवेश से भिन्न नहीं समझा गया ।

'व्यक्ति और समाज का संबंध दो प्रकार का होता है । एक ओर व्यक्ति समाज का निर्माता है तो दूसरी ओर वह समाज का अभिन्न अंग भी है ।व्यक्ति का ही आत्म विस्तार है समाज । व्यक्ति के ह्रास से समाज का ह्रास जुडा हुआ है और व्यक्ति की समृद्धि से समाज की समृद्धि ।'[34]

3.7.2. *सामाजिक मूल्य - तात्पर्य :*

मानव समूह अथवा समाज का संचालन कतिपय मूल्यों एवं मान्यताओं के आधार पर होता है । समाज को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत, सुनियंत्रित तथा स्वच्छ रखने केलिए जिन मूल्यों की आवश्यकता है, उन्हें सामाजिक मूल्य कह सकते हैं । समाज परिवर्तनशील है । जब मूल्यों के ह्रास के कारण समाज पतनशील होने लगता है तो सबसे अधिक संवेदनशील प्राणी साहित्यकार के मन में विविध प्रकार की प्रक्रियाएँ होती हैं । समाज को पतन से बचाने केलिए फिर सामाजिक मूल्यों की याद दिलाता है । इसके फल स्वरूप व्यक्तियों के आपसी व्यवहार में ऐसा परिवर्तन आ जाता है, जिससे पतनोन्मुख समाज, पतन के गर्त में गिरने से बच जाता है और उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है । ऐसा ही साहित्य कालजयी माना जाता है । अतः कह सकते हैं कि सामाजिक मूल्य, लेखक की वह ज्ञानात्मक मनेवृत्ति है, जो उसे समाज के प्रति प्रतिबद्ध रखती है और सशक्त साहित्य की रचना करने केलिए उसे प्रेरित करती है । सामाजिक मूल्य, समाज के निर्माता हैं, जो कि सामाजिक संबंधों में एकता स्थापित करते हैं, आदर्श व्यक्तित्व का विकास करते हैं तथा संस्कृति को सही आधार देते हैं ।

उर्मिल गंभीर सामाजिक मूल्यों को परिभाषित करती हुई कहती हैं - ' वे सामाजिक मान, लक्ष्य या आदर्श, जिनके आधार पर सामाजिक परिस्थितियों एवं विषयों का मूल्यांकन किया जाता है, सामाजिक मूल्य कहलाते हैं ।'[35]

3.7.3. *सामाजिक मूल्य - विश्लेषण :*

सामाजिक मूल्यों का विशिष्ट महत्व होता है । मूल्य समाज के वे आधार स्तंभ हैं, जिन पर समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का भव्य भवन खडा रहता है । सभ्य समाज में आचरण का बहुत महत्व होता है । प्रत्येक व्यक्ति का आचरण कुछ विशेष प्रतिमानों से प्रतिबद्ध होता है । स्वार्थी, कपटी, बेईमान का आचरण, निस्वार्थी, कपट से कोसों दूर रहनेवाला तथा नितान्त ईमानदार व्यक्ति से भिन्न होगा । यदि निस्वार्थी, ईमानदार व्यक्ति, स्वार्थी व बेईमान की तरह आचरण करेगा तो उसे दंडित किया जाएगा ।

हरदयाल के शब्दों में -'आचरण के इन्हीं प्रतिमानों को सामाजिक मूल्य कह सकते हैं । ये ही वे आदर्श हैं, जिनके अनुसार आचरण करने, जीवन जीने की अपेक्षा समाज के हर सदस्य से की जाती है । सामाजिक मूल्य व्यक्ति के आचरण को निर्देशित और मूल्यांकित करने का आदर्श या मानदंड है ।'[36]

सामाजिक जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । मूल्य, सामाजिक संबंधों को संतुलित करके, सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता स्थापित करते हैं । सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों के ही मस्तिष्क की उपज हैं । मानवीय आकांक्षाओं और लालसाओं की पूर्ति इन्हीं के माध्यम से होती है । ये मूल्य समाज के निर्माता हैं जो कि सामाजिक संबंधों में एकता स्थापित करते हैं । प्रेम, त्याग, ममता, करुणा आदि मूल्य मानव की अन्तरात्मा को प्रकाशित करते हैं ।

सामाजिक मूल्य अपने आदर्शों और मूल्यों पर अवस्थित होते हैं । मुल्यों के विघटित होने पर समाज अव्यवस्थित हो जाता है । डॉ. मोहिनी शर्मा कहती है - 'सामाजिक मूल्यों से अभिप्राय मनुष्य की सामूहिकता, जातीय सुरक्षा, सहानुभूति तथा संतानोत्पत्ति आदि मूल प्रवृत्तियों की तुष्टि से संबंधित उन प्रतिमानों से है, जो मनुष्य की सामाजिकता के उत्थान

हेतु आवश्यक होते हैं । सामाजिक मूल्यों का आशय व्यक्ति की सामाजिकता का उन्नयन करनेवाली जीवन - दृष्टियों से होता है ।'[37]

अतः कहा जा सकता है कि समाज को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत, सुनियन्त्रित तथा स्वच्छ रखने केलिए जिन मूल्यों की आवश्यकता है, उन्हें ही सामाजिक मूल्य की पदवी से विभूषित किया जा सकता है ।

3.8. *सामाजिक मूल्य - वर्गीकरण :*

जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए आचरण करता है तो समाज का आविर्भाव होता है । सामाजिक मूल्य अपने आदर्शों और मूल्यों पर अवस्थित होते हैं । मूल्यों के विघटित होने पर समाज अव्यवस्थित हो जाता है । सामाजिक मूल्य का आशय, व्यक्ति की सामाजिकता का उन्नयन करनेवाली जीवन - दृष्टियों से होता है ।

सामाजिक मूल्यों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं - वैयक्तिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य, समष्टिगत सामाजिक मूल्य ।

3.8.1. *वैयक्तिक मूल्य :*

सामाजिक मूल्यों के व्यापक अध्ययन के पूर्व समाज के आधार व्यक्ति के वैयक्तिक मूल्यों का अध्ययन अति आवश्यक है । क्योंकि व्यक्ति से ही समाज बनता है और वही समाज का आधार है और मूल्यों का निर्माता है । व्यक्ति के अभाव में मूल्य निरर्थक हैं ।

वैयक्तिक मूल्यों की व्याख्या करते हुए रमेशचन्द्र कहते हैं - ' किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा, संवेदना तथा अभिव्यक्तियों से संबंधित मूल्य को वैयक्तिक मूल्य कहा जाएगा ।'[38] अतः स्पष्ट है कि अगर एक व्यक्ति संस्कारयुक्त होता है तो उसका परिवार, गाँव तथा देश भी संस्कारयुक्त बनते हैं ।

' वैयक्तिक मूल्य प्रत्येक व्यक्ति की निजी इच्छा, संवेदना या अभिवृत्ति से संबंधित होने के कारण समाज, राष्ट्र अथवा धर्म के पक्ष या विपक्ष में हो सकते हैं । परन्तु सामाजिक संदर्भ में वे ही वैयक्तिक मूल्य स्वीकार्य हैं, जो व्यक्ति विशेष की संवेदना और अभिव्यक्तियों का इष्ट तो हो तथा साथ ही सामाजिक, राष्ट्रीय तथा चरम मूल्यों के विरोधी भी न हों ।'[39]

यह तो सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन - मूल्य तथा आकांक्षाएँ परस्पर भिन्न होते हैं । फिर भी समाज में व्यक्तित्व के उदात्तीकरण केलिए प्रत्येक व्यक्ति में कुछ मूल्यों का होना अपेक्षित है ।

3.8.1.1. *निर्भयता :*

हर एक व्यक्ति को निर्भीक रहना नितान्त आवश्यक है । व्यक्ति की ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति केलिए यह मूल्य राज मार्ग जैसा है । निर्भयता मानव को परस्पर प्रेम, विश्वास सद्भाव तक ले जानेवाला सन्मार्ग है । व्यक्ति जब निर्भीक रहता है, तभी उसमें आत्मविश्वास बढता है । कायर व्यक्ति में आत्म विकास नहीं होता । वह कभी भी किसी को अपने हृदय की बात स्पष्ट करने का साहस नहीं कर सकता । अतः आत्मविकास केलिए व्यक्ति को निर्भय रहना चाहिए । निर्भयता ही व्यक्ति को सुखी, समृद्ध, वैभवशाली, पवित्र एवं दैवी जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है ।

3.8.1.2. *आत्म - पर्यालोचन :*

समाज में उच्च - स्थान पाने केलिए, व्यक्ति को स्वयं अपना आत्म - पर्यालोचन करना चाहिए । जो व्यक्ति अपने कार्यों को एक आलोचक की दृष्टि से देखता है । वही जीवन में सफल बन सकता है । क्योंकि व्यक्ति को अपना केर्य अच्छा लगता है । इसी भ्रम से वह गलत को ही ठीक ही समझने लगता है, जो उसे अवनति को ले जाता है । अतः हर एक व्यक्ति को स्वयं अपने हर एक काम की आलोचना करनी चाहिए ।

3.8.1.3. *विनम्रता :*

अहं का त्याग ही व्यक्ति को विनम्र बना देता है । विनम्र व्यक्ति केलिए सारे विश्वभर में कुछ भी असाध्य नहीं है । यह एक प्रभावशाली शस्त्र के समान है, जो सामान्य पडोसी से लेकर परमात्मा तक को वश में रखने का सामर्थ्य रखती है ।अतः हर एक व्यक्ति को अवश्य विनम्र रहना चाहिए ।

3.8.1.4. *तेजस्विता :*

वैयक्तिक मूल्यों में तेजस्विता का सर्वोपरि स्थान है ।इस संघर्षमय संसार में जो व्यक्ति तेजस्वी होगा, वही सुख - शांति पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेगा ।जो तेजोहीन, मैला, कुचला एवं कायर होगा, उसे कोई भी अपने पैरों तले कुचलकर, अपना दास बनायेगा । ध्येय निष्ठ जीवन, श्रद्धा, बुद्धि, इन्द्रिय विजय, विद्याध्ययन, पराक्रम, मितभाषिता, कृतज्ञता आदि तेजस्वी बनाने के सोपान हैं । इस प्रकार तेजस्विता, वह वैयक्तिक मूल्य है, जो व्यक्ति को सात्विक, ध्येय निष्ठ, दृढ निश्चयी एवं स्वाभिमानी बनाता है ।

3.8.1.5. *उद्यमशीलता :*

उद्यमशीलता वह वैयक्तिक मूल्य है, जो व्यक्ति को उसके विकास पथ पर आनेवाली बाधाओं से संघर्ष करते हुए निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा देता है । प्रत्येक उद्यमी व्यक्ति, भले ही वह अकेला ही क्यों न हो कुछ न कुछ दिखाने का सामर्थ्य रखता है । इस प्रकार उद्यमशीलता, व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट मूल्य है ।

3.8.1.6. *एक निष्ठा :*

एक निष्ठा वह वैयक्तिक मूल्य है, जो व्यक्ति के हृदयस्थित किसी भी प्रकार की आकांक्षा की पूर्ति केलिए तल्लीन होने, लग्न से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है । कोई भी कठिन से कठिन एक असंभव कार्य, यदि एक निष्ठा, लगन व परिश्रम से किया जाय

तो वह भी संभव हो सकता है । अतः व्यक्ति को हमेशा दृढ निश्चयी, प्रतिज्ञाबद्ध, एवं दृढ संकल्पी होना चाहिए । यही नहीं, एक निष्ठा भी व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

3.8.1.7. *स्वाभिमान :*

यह एक ऐसी प्रेरक शक्ति है, जिससे अति साधारण व्यक्ति भी जागृत तथा सर्वोन्नत हो सकता है । व्यक्ति को आत्म विकास केलिए अपने स्वत्व को पहचानना चाहिए । अपनी अस्मिता की प्राण पण से रक्षा करनी चाहिए । स्वाभिमान शून्य व्यक्ति, सर्वदा कायर, दुर्बल, गुलाम एवं कर्तव्य शून्य बनता है । अतः उन्नति के पथ पर अग्रसर होने केलिए व्यक्ति को स्वाभिमानी होना चाहिए । परन्तु दुरभिमानी नहीं । अर्थात उसमें स्वाभिमान के साथ - साथ नम्रता भी होनी चाहिए ।

3.8.1.8. *कृतज्ञता :*

कृतज्ञता एक ऐसा महत्वपूर्ण वैयक्तिक मूल्य है, जो जीवन को स्वच्छ, निर्मल, व्यवस्थित, शांतिमय, सुखदायक एवं प्रगतिशील, बनाता है । व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व विकास केलिए अपने माता - पिता, गुरु, मित्र, बन्धु, समाज तथा राष्ट्र का सहयोग लेना पडता है । अतः व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करे ।

3.8.2. *पारिवारिक मूल्य :*

समाज के गठन में पारिवारिक इकाई महत्वपूर्ण मानी जाती है । व्यक्ति को समष्टि रूप में परिवार ही परिणत करता है ।

' परिवार, अर्थात कुटुंब, रिश्तों, सामाजिक संबंधों तथा बिरादरी के द्वारा अपनी - अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों, परंपराओं के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था को एक निश्चित आकार या व्यवस्था प्रदान करते हुए, एक नींव का काम करता है ।' [40]

अतः परिवार या कुटुंब ही सामाजिक जीवन का आधार स्तंभ है ।

डॉ, सेफिया मैथ्यू का कथन है - ' परिवार, व्यक्ति और समाज के बीच सेतु के समान रहकर दोनों को मिलाता है । यह मनुष्य की शारीरिक, सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक आवश्यकताओं का पूरक है । '[41]

अतः व्यक्ति को अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पृष्ठ भूमि, परिवार या कुटुंब के अन्तर्गत रहकर ही बनानी चाहिए ।

समाज में व्यवस्था बनाये रखने केलिए तथा सामाजिक मूल्यों की स्थापना में परिवार महत्वपूर्ण कार्य करता है । स्त्री - पुरुष परिवार रूपी गाडी के दो चक्र जैसे हैं । परिवार, पति - पत्नी द्वारा निर्मित ऐसी स्थायी एवं भौतिक संस्था है, जिसमें पति - पत्नी तथा बच्चे मुख्य सदस्य होते हैं । इन सदस्यों का परस्पर संबंध कुछ मूल्यों व कर्तव्यों पर आधारित होता है । पारिवारिक मूल्यों में परिवार एवं उससे संबंधित सदस्यों के मूल्य परिगणित किये जाते हैं ।

3.8.2.1. *पति - पत्नी संबंधित मूल्य :*

परिवार में पति - पत्नी एक - दूसरे के पूरक होते हैं । पति का कर्तव्य है कि वह पत्नी तथा परिवार का भरण - पोषण तथा रक्षण करें । पत्नी, पति की आज्ञा ठीक - ठीक पालन करे । दोनों को एक- दूसरे के प्रति सच्चा, पवित्र, ईमानदार तथा सहानुभूति होनी चाहिए । दोनों के परस्पर प्रेम, विश्वास, श्रद्धा, सहानुभूति पूर्ण व्यवहार से ही एक परिवार सुनियंत्रित रूप से चल सकता है ।

3.8.2.2. *माता - पिता संबंधी मूल्य :*

पति - पत्नी के सम्पर्क से एक नये परिवार का सृजन होता है । इस नये परिवार में वे दोनों माता - पिता का रूप धारण कर लेते हैं । माता -पिता के रूप में इनका दायित्व, सन्तान के प्रति असीमित होता है । वे अपनी संतान केलिए अपने सभी सुखों को बलिदान कर देते हैं ।

उनके संरक्षण में ही बच्चों का पालन - पोषण, शैक्षिक योग्यता तथा सुशील एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व का विकास पूर्ण हो पाता है । सन्तान का पालन - पोषण तथा सुसंस्कृत व्यक्तित्व का विकास ही माता - पिता का संतान के प्रति एकमात्र मूल्य है ।

3.8.2.3. *सन्तान संबंधी मूल्य :*

बडों का आदर - सम्मान करना प्रत्येक व्यक्ति का सबसे बडा मुल्य है । कोई भी व्यक्ति सामान्यतः तीन प्रकार से बडा हो सकता है - आयु में, गुणों में तथा संबंध या अधिकार में । बडों का आदर - सम्मान करनेवाला परिवार या समाज ही आदर्श माना जाता है ।माता - पिता की तन -मन -धन से सेवा करना, सन्तान का सर्वप्रथम कर्तव्य है । उनको अपने माता - पिता की आज्ञा का पालन क रना भी नितांत आवश्यक मूल्य है । संक्षेपतः परिवार के सभी सदस्यों का व्यवहार मर्यादा एवं त्याग से परिपूर्ण होने पर ही पारिवारिक मूल्यों की स्थापना की जा सकती है ।

3.8.3. *समष्टिगत सामाजिक मूल्य :*

व्यक्ति द्वारा सामाजिक मंगल भावना को मुख्य रखकर, जो मूल्य स्थापित किये जाते हैं - कालान्तर में वे ही मूल्य व्यक्तिगत दायरे से निकलकर, सामाजिक स्वीकृति पा लेने पर, व्यापक रूप ग्रहण कर लेते हैं । इन्हीं को समष्टिगत सामाजिक मूल्य कह सकते हैं । समाज में मनुष्य द्वारा हो रहे मनुष्य के शोषण, उत्पीडन, दमन के साथ - साथ मनुष्य की संकुचित स्वार्थ नीति, समाज में प्रचलित जाति - पाँति, वर्ण - भेद एवं वर्ण - भेद के झगडे, वैज्ञानिक तज्ञन्य विभीषिकाओं के परिणाम स्वरूप दिन -दिन विघटित एवं विपन्न हो रहे मानव - जीवन ऊपर से शिष्ट और सुसज्जित दिखाई पडनेवाला व्यक्ति भीतर से कितना अशिष्ट और कुरूप होता है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज के नागरिक समाज में देखा जा सकता है । इन भावनाओं को दूर करने केलिए जिन मूल्यों की आवश्यकता है, वे ही

' समष्टिगत सामाजिक मूल्य ' के नाम से अलंकृत किये जाते हैं

3.8.3.1. *वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन :*

परिवार के बाद व्यक्ति का जाति या वर्ण जैसे सामाजिक संगठनों में विकास हो जाता है । जाति या वर्ण एक ऐसा सामाजिक संगठन है, जो जन्म से व्यक्ति को एक विशेष सामाजिक स्थिति प्रदान करता है, जिसमें आजीवन कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता । इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों को एक -दूसरे से पृथक करने केलिए विवाह, खान - पान, धार्मिक अनुष्ठानों आदि के बारे में कुछ नियंत्रण होते हैं, जिसमें विभिन्न जातियों की सामाजिक दूरी बनी रहती है । कुछ जातियों का स्थान उच्च होता है और कुछ का निम्न, जिसमें व्यक्तिगत योग्यता और कुशलता का कोई महत्व नहीं होता ।

डॉ. मनमोहन सहगल का विचार है - 'विशिष्ट सामाजिक व सांस्कृतिक नियम बंधनों से बंधा हुआ जन समूह जाति कहलाता है ।' [42]

प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था हिन्दू समाज की आधारशिला रही है । किन्तु उसका दुष्परिणाम यह हुआ कि समाज की सर्वाधिक सेवा करनेवाला वर्ग पिसता रहा और उसे अछूत समझा जाने लगा । उच्च जातिवालों द्वारा निम्न जाति के हरिजनों को निम्न समझना, उनमें एक प्रकार से असंतोष को जन्म देने केलिए उत्तरदायी है । अतः समाज में व्यवस्था, सद्भाव व मधुर वातावरण पैदा करने केलिए विभिन्न धर्म या वर्णों के अनुयायियों को परस्पर स्नेह भाव से रहना चाहिए । अपने धर्म या वर्ण के प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए भी दूसरे के धर्म को निम्न नहीं बताना चाहिए, बल्कि उनके प्रति भी श्रद्धा रखते हुए, सर्व धर्म समभाव रखना चाहिए ।

3.8.3.2. *समानता :*

समाज विभिन्न धर्मानुयायियों की ही तरह विभिन्न वर्ग या जाति के लोगों से मिलकर

बनता है । यदि इन विभिन्न वर्ग या जाति के लोगों में ऊँच - नीच की, अमीर - गरीब की भावनाएँ होंगी तो समाज अव्यवस्थित व विश्रृंखलित हो जाएगा । अतः समाज में एकता स्थापित करने केलिए इन ऊँच - नीच या अमीर - गरीब के मध्य पाये जानेवाले अन्तर को समाप्त करके, उसमें समानता लाने का प्रयास करना चाहिए । आदर्श समाज वही माना जा सकता है, जो समानता तथा भ्रातृत्व के मूल्यों को आत्मसात करता है । समानता को चरितार्थ करनेवाला समाज ही प्रगतिशील समाज माना जाता है ।

3.8.3.3. *सामाजिक रूढियों और कुरीतियों का विरोध :*

सामाजिक कुरीतियों का अंधानुकरण ही सामाजिक पतन का मुख्य कारण रहा है । युग के अनुरूप परिवर्तित होनेवाले समाज केलिए पुरानी रूढियों का पालन करना मुश्किल की बात है । एक समय केलिए जो नियम उपयुक्त एवं आवश्यक रहता है, वही दूसरे समय में अनावश्यक एवं घातक भी सिद्ध होता है । अतः प्रगतिशील समाज केलिए कट्टर होकर, पुराने नियमों को व्यक्ति के सिर पर थोपना अत्यंत हानिकारक सिद्ध होता है । जब मनुष्य पर यह बंधन लगाया जाता है, तब वह विवशता का अनुभव करने लगता है । फलस्वरूप, समाज में भय के कारण, वह अपनी गल्तियों को छिपाने का प्रयत्न करता है । परिणाम यह होता है कि भीतर ही भीतर मानव समाज के विरोधी कार्यों में लग जाता है । समाज का खुलकर विरोध न कर सकने के कारण, वह अपनी गल्तियों को छिपाता है तथा झूठ बोलने लगता है । इस प्रकार समाज भीतर ही भीतर सडता जाता है और खोखला हो जाता है । ऐसी स्थिति में समाज के पतन में देर नहीं लगेगी । इसलिए सामाजिक प्रथाओं के भय से अपनी क्रियाओं को छिपाकर, रखने की अपेक्षा, समाज के विरुद्ध खुलकर विद्रोह करना एस सच्चा सामाजिक मूल्य है ।

3.8.3.4. *शोषितों, पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति :*

पीडित, शोषित तथा दलितों के प्रति संवेदना व्यक्त करना प्रगतिशील भावना है । समाज का उच्च वर्ग, अर्थात शोषक वर्ग, केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि में निमग्न रहते हैं । समाज का दलित वर्ग केवल दुर्बल, क्षीण और लाचार बना रहा है । ऐसी विषम स्थिति में दलितों के समक्ष केवल एक ही मार्ग रह जाता है, क्रांति और संघर्ष का ।समाज में जब तक असमानता बनी रहेगी तब तक मनुष्यता अपमानित होती ही रहेगी । अतः इन पीडित, शोषित तथा दलितों के प्रति सहानुभूति प्रकट करना भी आज के समाज का मूल्य है ।

3.8.3.5. *सहयोग :*

सहयोग, ऐसा समष्टिगत सामाजिक मूल्य है जो वैयक्तिक धरातल से परिवार, समाज तथा राष्ट्र के धरातल पर विस्तृत है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । अतः उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए समाज के सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता होती है । समाज में आज जो धर्म,संस्कृति, कला एवं विज्ञान की प्रगति दृष्टिगत होती है , वह असंख्य लोगों के सहयोग का ही परिणाम है । अतः सहयोग ऐसा समष्टिगत सामाजिक मूल्य है, जो घर, परिवार से विकसित होकर समाज तथा राष्ट्र का रूप बदल देता है,निराशा के अंधकार को मिटाकर, आशा की नयी किरण लाता है ।

3.8.3.6. *साहस व धैर्य :*

किसी भी प्रकार के अन्याय का सामना करना ही साहस व धैर्य कहलाता है । जो सोच - विचार करके, धैर्य के साथ काम करता है, वही सफल होता है । अतः साहस व धैर्य एक ऐसा सामाजिक मूल्य है, जो सफल - सिद्ध मानव का साथ देता है ।

3.8.3.7. *नारी का स्वरूप :*

नारी केवल वासना नहीं, उसमें अनेक उदात्त मानवीय मूल्य हैं, जिन्हें पुरुष को उसमें

देखना चाहिए । अगर उन मूल्यों के साथ पुरुष जुडे तो नारी उन केलिए शक्ति बन सकती है । लेकिन पुरुष का अहं नारी को उपभोग की वस्तु मानता है और उसे अपने से हीन समझता है ।इसलिए दोनों के बीच असंतुलन स्थापित होता है । भारतीय नारी,पाश्चात्य नारी की तरह भौतिकवादी नहीं है । वह त्याग और ममता का साकार रूप है । अनेक कष्ट सहते हुए भी वह अपने कर्म पथ से विचलित नहीं होती । वह अपने कर्तव्य को जीवन पर्यन्त निभाने में ही अपनी सार्थकता मानती है ।अतः नारी का सच्चा स्वरूप स्वीकार करना भी एक सामाजिक मूल्य है ।

3.9. *निष्कर्ष :*

इस अध्याय में सर्व प्रथम मूल्य की व्युत्पत्ति, उसकी परिभाषा व स्वरूप,मूल्य का महत्व और मूल्य की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया है । इस लघु शोध - प्रबंध का लक्ष्य डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में सामाजिक मूल्य की खोज करना है । अतः सामाजिक मूल्य जानने से पहले समाज का स्वरूप व परिभाषा जानना अपेक्षित है । इसलिए प्रस्तुत अध्याय में समाज का स्वरूप स्पष्ट करके, साहित्य और समाज का संबंध व्यक्त करते हुए,समाज और मूल्य का संबंध भी बताया गया ।तत्पश्चात सामाजिक मूल्यों की अवधारणा स्पष्ट करते हुए, उनका वर्गीकरण किया गया । सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट है कि मूल्य वैयक्तिक हों या सामाजिक, मानव के उत्तरोत्तर विकास के सूचक हैं । मूल्य ही वे आदर्श हैं, जिनके अनुसार जीवन - यापन मंगलकारी हो सकता है । अतः समाज में रहने केलिए, उसे सुव्यवस्थित तथा सुनियंत्रित करने केलिए, हर एक व्यक्ति को सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करना नितांत आवश्यक है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मनुष्य का समाज से एवं समाज का मनुष्य से घनिष्ठ संबंध है । 'मूल्य' समाज में ही अर्थवत्ता पाते हैं ।

समाज ही इस बात का निर्धारण करता है कि मानव जीवन केलिए या समाज केलिए क्या उचित है और क्या अनुचित । समाज द्वारा वही मूल्य स्वीकार्य होते हैं जो समाज को सद्गति व सदाचरण की ओर ले जाते हैं । अतः यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण समाज व्यवस्था द्वारा पारस्परिक व्यवहार एवं सार्वजनिक कल्याण हेतु स्थापित जीवनादर्श ही सामाजिक मूल्य हैं । वे ही समाज के निर्माता हैं ।

साहित्य समाज का दर्पण है । किसी भी युग का साहित्य, उस युग का प्रतिबिंब होता है ।समाज के समस्त आचार, व्यवहार,चिंतन -मनन रहन - सहन आदि का वास्तविक वर्णन साहित्य द्वारा ही प्रस्तुत होता है । मूल्यों का निर्माण व्यक्ति द्वारा समाज में रहकर किया जाता है । इसलिए सामाजिक मूल्य, समाज को केन्द्र में रखकर चलते हैं । प्रत्येक समाज द्वारा कुछ सामाजिक मूल्य निर्धारित होते हैं, जिसके आधार पर समाज, मानव जीवन को सदाचार की ओर गतिमान करना चाहता है ।

संदर्भ - सूची

1. हिन्दी नाटक : मूल्य संक्रमण - गिरिराज शर्मा गुंजन, पृ. 5

2. आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - डॉ. रमेश देश मुख - पृ. 10

3. निर्मलवर्मा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य - डॉ. प्रमोद पाटिल - पृ. 18

4. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण - हेमेन्द्र पानेरी - पृ. 30

5. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका - डॉ नगेन्द्र - पृ. 160

6. नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ - जगदीश गुप्त - पृ. 14

7. बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - ओम प्रकाश सारस्वत - पृ. 7

8. बृहत सूक्ति कोश - संपादक - डॉ श्याम कुमार वर्मा एवं मधु वर्मा - पृ. 854

9. The Intutive Philosophy - Rohit Mehta - पृ. 39

10. हिन्दी उपन्यासों का मूल्यपरक विवेचन - डॉ सविता चोखोबा - पृ. 22

11. वही - पृ. 25

12. महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य - डॉ भारती शेलके - पृ. 19

13. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन - डॉ देवराज - पृ. 366

14. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य - डॉ. हुकुमचन्द्र राजपाल - पृ. 70

15. हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य - डॉ मोहिनी शर्मा - पृ. 35

16. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना - मंजूर सैय्यद - पृ. 13

17. मानव जगत - डॉ सम्पूर्णानंद - पृ. 12

18. पाश्चात्य दर्शन की मुख्य अवधारणाएँ - जयदेव सिंह - पृ.1

19. हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना - डॉ कुवँरपाल सिंह - पृ. 17

20. वही - पृ. 17

21. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना - मंजूर सैय्यद - पृ. 27

22. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना - डॉ. सोफिया मैथ्यू - पृ. 19

23. हिन्दी राम काव्य : नये संदर्भ - डॉ. प्रमूला अवस्थी - पृ. 138

24. साहित्य का समाज शास्त्र - डॉ नगेन्द्र - पृ. 5

25. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना - मंजूर सैय्यद - पृ. 27

26. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी समीक्षा में काव्य मूल्य - रामजी तिवारी - पृ. 73

27. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य - डॉ. हुकुमचन्द्र राजपाल - पृ. 51

28. अमृतलाल नागर कृत मानस का हंस : सामाजिक मूल्य - प्रो. अंजना विजन - पृ. 12

29. हिन्दी नाटक : मूल्य संक्रमण - गिरिराज शर्मा गुंजन, पृ. 9

30. अमृतलाल नागर के उपन्यास - हेमराज कौशिक - पृ. 33

31. साहित्य का उद्देश्य - मुंशी प्रेमचन्द - पृ. 12

32. समाज और व्यक्ति - महादेवी वर्मा - पृ. 14

33. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र - पृ. 112

34. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना - डॉ. सोफिया मैथ्यू - पृ. 69

35. प्रताप नारायण श्री वास्तव के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन - उर्मिल गंभीर पृ. 59

36. साहित्य और सामाजिक मूल्य (लेख) - संपादक - वी.डी.गुप्ता - पृ. 58

37. हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य - डॉ मोहिनी शर्मा - पृ. 100

38. हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - रमेशचन्द्र लाबानिया - पृ. 15

39. अमृतलाल नागर कृत मानस का हंस : सामाजिक मूल्य - प्रो. अंजना विजन - पृ. 37

40. मेरे प्रिय निबंध - महादेवी वर्मा - पृ. 105

41. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना - डॉ. सोफिया मैथ्यू - पृ. 13

42. समाज मनोविज्ञान - डॉ. मनमोहन सहगल - पृ. 51

चौथा अध्याय

डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ.कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्य

चौथा अध्याय
डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में सामाजिक मूल्य

4.0. *प्रस्तावना :*

डॉ.जयप्रकाश कर्दम हिन्दी के दलित लेखकों में उत्कृष्ट हैं तो कोलकलूरि इनाक, तेलुगु साहित्य के दलित लेखकों में अपने लिए एक विशिष्ट स्थान रखनेवाले हैं। दोनों की पारिवारिक परिस्थितियाँ एक जैसी हैं। बचपन में ही दोनों अपने - अपने पिता से वंचित हुए। इसका फल यह निकला कि दोनों पर परिवार का बोझ पडा। अतः युवावस्था में ही दोनों ने नौकरी में प्रवेश किया। दलित होने के नाते दोनों को अनेक अपमान सहने पडे। अपने जीवन में जिन परिस्थितियों को उन्होंने स्वयं भोगा और अनुभव किया, उन्हीं का जीता जागता स्वरूप अपने साहित्य में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। अनेक कष्टों को झेलकर अब दोनों उन्नत शिखर पर पहुँचे। इस प्रकार समाज के सामने अपने आप को साबित करने का प्रयास जो उन्होंने किया, वह सफल सिद्ध हुआ।

इनाक जी ऐनक के बराबर हैं , जो समाज को देख नहीं सकते या पढ नहीं सकते, ऐसे लोगों केलिए वे ऐनक हैं, जिनको पहनकर वे समाज को स्पष्ट रूप से पढ सकते हैं और मतलब जान सकते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा समाज की वेदना, आक्रोश, गरीबीपन, मानवीय मूल्यों का विघटन, धोखेबाज आदि का खूब वर्णन किया। बचपन से उन्होंने जिन अपमानों का सामना किया, उसको प्रकट करने केलिए अपनी कहानियों को आधार बनाया।

डॉ.लक्ष्मी नारायण जी का कथन प्रस्तुत करते हुए ताल्लूरि लून बाबू कहते हैं -

''सामाजिक अभ्युदय, सामाजिक चेतना, उच्च वर्गों की अहंकार भावना के प्रति तिरस्कार, सामाजिक समस्याओं केलिए सुझाव प्रस्तुत करने में इनाक की कहानियों केलिए प्रत्येक स्थान है।'' [1]

समाज कतिपय मूल्यों से आगे बढता है । लेकिन आजकल समाज में मूल्यों का ह्रास होने लगा । अतः दोनों लेखकों ने अपनी कहानियों के माध्यम से जिन सामाजिक मूल्यों का प्रतिपादन किया, वह अविस्मरणीय है । दोनों की कहानियों में उपस्थित सामाजिक मूल्यों का बोध कराना ही प्रस्तुत अध्याय का लक्ष्य है ।

4.1. *डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक जी की कहानियों में प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्य :*

समाज को उत्तम मार्ग पर चलने केलिए कुछ मूल्यों की आवश्यकता है । ये मूल्य तीन प्रकार के होते हैं - वैयक्तिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य और सामाजिक मूल्य । कर्दम जी ने और इनाक जी ने अपनी कहानियों में इन तीनों प्रकार के मूल्यों पर प्रकाश डाला है ।

4.1.1. *वैयक्तिक मूल्य :*

समाज में व्यक्ति केलिए एक प्रमुख स्थान है । अगर एक व्यक्ति उत्तम मार्ग पर चलता है तो वह अपना परिवार, गाँव, राज्य और देश उत्तम मार्ग पर चलने की अभिलाषा रखता है । अतः हर एक व्यक्ति में कतिपय मूल्यों के होने की आवश्यकता है ।

4.1.1.1. *निर्भयता:*

समाज में जब हर एक व्यक्ति निर्भीक बनता है तो उसमें आत्म विश्वास भी बढता है । कायरता व्यक्ति की सफलता का बाधक है ।

कर्दम जी की कहानी **'सूरज'** का नायक गाँव से आने के कारण, कलाशाला में सब लोगों से डरता था । उसकी सौम्यता से सुमन लता आकर्षित होती है और निर्भय रहने का उपदेश देती हुई कहती है -

''इस तरह सहमकर और दब्बू बनकर रहोगे तो लोग तुम्हें बहुत टार्चर करेंगे । जीना मुश्किल कर देंगे तुम्हारा । अगर डर और झिझक छोड दो और थोडा बोल्ड बनकर रहो । एक - दो दिन आराम से निकल दो, फिर किसी से मत डरना ।'' [2]

धीरे - धीरे सूरज अम्बेडकरवादी विचारों से दलित छात्रों का नायक बन गया । सवर्ण छात्रों से सावधान रहने केलिए सुमन लता कहती है तो सूरज कहता है -

''यदि हम मानसिक रूप से हार जाते हैं, हमारा मनोबल गिर जाता है तो हम मैदान में कोई जंग नहीं जीत सकते । इसलिए हमारा मानसिक या आंतरिक रूप से दृढ रहना जरूरी है । यदि तुम डरोगे, सहमोगे या चुप रहोगे तो लोग तुम पर हावी हो जाएँगे, तुम्हारा जीना दुर्भर कर देंगे । निर्भय होकर, ईंट का जवाब पत्थर से दोगो तो किसी की हिम्मत नहीं होगी । तुम्हें कुछ कहने की और फिर मरना तो एक न एक दिन है ही । फिर डरकर क्यों रहे हम । बहादुरी से क्यों न रहें ।'' [3]

'छिपकली' कहानी में सरवन असल में निडर व्यक्ति है । लेकिन छिपकली से वह इतना डरता है कि उसे देखते ही उसके प्राण पखेरू ऊपर उठ जाएँगे । साहब जब निर्जीव छिपकली को दूर फेंकने का आर्डर देते हैं तो उसकी स्थिति का वर्णन करते हुए जयप्रकाश कर्दम कहते हैं -

''छिपकली को पकडकर बाहर फेंकने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं था । अपनी सारी शक्ति को समेटकर उसने अपना हाथ छिपकली की पूँछ पकडकर एक झटके में उसे खिडकी से बाहर फेंक दिया ।'' [4]

'मानिटर' कहानी में सतीश, अपने मित्रों के सामने निर्भयता से स्वीकार करता है कि गरीबी के कारण ही वह मजदूरी करता है -

''मैं साफ कपडे पहनकर कालिज जाता हूँ और सबके साथ घुला - मिला रहता हूँ । तुम्हें इसी से ऐसा लगता होगा न ? पर लगने से कुछ नहीं होता । सच्चाई तो सच्चाई हैं । मैं अपनी विषम परिस्थितियों के कारण ही मजदूरी करने के लिए विवश हूँ । यदि मेरी परिस्थितियाँ ठीक होंगी तो मैं इस समय पढाई छोडकर यहाँ मजदूरी नहीं कर रहा होता ।'' [5]

यहाँ मानीटर सतीश, अपनी स्थिति का ठीक -ठीक स्वीकार करता हैं ।

'जहर ' कहानी का विश्वंभर एक ताँगावाला हैं । एक पंडित ताँगे में चढकर,दलितों के प्रति घृणा व्यक्त करते हुए अपमानजनित बातें करने लगता हैं । पंडित के शब्द जहर बुझे तीर की भाँति उसके वक्ष को बींध रहे हैं । दलितों के प्रति घृणा भरी बातें सुनना उसके लिए बर्दाश्त से बाहर हो गया । इसलिए तांगा रोक कर पंडित को नीचे उतार दिया ओर नुकसान भोगने के लिए भी तैयार हो गया । वह निर्भय होकर पंडित से बोला -

''दो रुपये का नुकसान मुझे होएगा ना ? मैं सौ रुपये का नुकसान भी बर्दाश्त कर लूँगा, पर तेरे जैसी अपमानाजनक बातें मैं बर्दाश्त नई करुगाँ । चल उतर जल्दी से । बातों मे लगा टैयम खराब मत कर मेरा । नहीं तै यू सन्टर देख रा हैं न मेरे हाथ में, इससे सूड दूँगा तुझे ।''[6]

पंडित गिडगिडाने लगता हैं । लेकिन विश्वंभर द्रवित नहीं होता और कहता है -

''जिस आदमी के मन में इतना जहर भरा हो, उसके लिए मेरे ताँगे में कोई जगह नई है । '' [7]

'मंदिर' कहानी में रंगलाल एक सरकारी अफसर है जो नये फ्लैट में अभी -अभी आया हैं । अगले दिन पडोस मे रहनेवाले शर्माजी कालनी के कुछ अन्य लोगों के साथ रंगलाल के घर आकर कहता है कि वे लोग मंदिर का निर्माण करने जा रहे हैं । लेकिन उन्होंने बच्चों के खेलने के पार्क को कब्जा करके, मंदिर का निर्माण कर रहे है । इसी अनैतिक कार्य का खंडन करते हुए रंगलाल कहते है-

''मै कह रहा हूँ कि धर्म का काम करना गलत नहीं हैं । आप लोग कहीं पर जमीन खरीद कर उस पर मंदिर बनाएँ । घर्म का काम करें ।इस पर किसी को क्या आपत्ति होगी । लेकिन आप लोग तो सरकारी जमीन कब्जा करके मंदिर बना रहे हैं । ऐसा करना तो गैर कानूनी हैं और अनैतिक भी है । धर्म तो नैतिकता का दूसरा नाम हैं । लेकिन जो कुछ आप

लोग कर रहे हैं, यह अनैतिक है । इसे कैसे सही कहा जा सकता है ? मै सरकारी अधिकारी हूँ और मैं किसी गैर कानूनी काम का समर्थन नहीं कर सकता ।'' [8]

इस प्रकार रंगलाल निर्भय होकर अनैतिकता का विरोध करता है और कहता है -

''यदि अन्याय और अनैतिकता का साथ न देना असामाजिकता हैं तो मैं स्वयं को असामाजिक माना जाना पसंद करुँगा ।'' [9]

डॉ. इनाक जी भी अपनी कहानियों के द्वारा समाज को संदेश देते हैं कि हर एक व्यकित को निर्भीक रहना चाहिए । तभी समाज आगे बढ सकता है ।

आजकल समाज में बहुत लोग लडकी को जन्म देना पसंद नहीं करते । 'पिल्लनि कंटानु ' कहानी में पहले बहू को अत्यंत प्रेम से देखते हैं । सास - ससुर तथा पति को मालूम होता है कि वैदेही लड़की को जन्म देने वाली है तो वे सब उसे गर्भ-विच्छिति करने को मजबूर करते है । आजकल समाज में देखा जाता है कि लड़की को जन्म देना पाप है और लड़के को जन्म देनेवाली बहू घर की लक्ष्मी मानी जाती है । लेकिन वैदेही परिवार के सभी लोगों के खिलाफ लड़की को जन्म देने केलिए तैयार होती है । वह कहती है -

''मेरी गर्भ-विच्छिति नही होनी चाहिए । मैं उसे नहीं होने देती । तुम मेरे गर्भ स्राव नहीं कर सकते और मैं नहीं करने दूँगी । मै जरूर लड़की को जन्म देती हूँ ।''[10]

समाज में लड़की के जन्म के प्रति जो उपेक्षा की भावना है, उसे तीव्र खंड़न करते हुए इनाक जी वैदेही का चरित्र निर्माण किया ।

'कोलुपुलु' कहानी का पोतुराजू एक छोटा बालक है । फिर भी माँ की रक्षा करने केलिए दुष्ट नांचारय्या का सामना करता है । अन्त में अपनी माँ से मिलकर उस को मार डालता है । इस प्रकार वह निर्भयता से अन्याय का विरोध करके माँ की इज्जत बचाकर अपना कर्तव्य निभाता है ।

डॉ. बी. नारायण जी का मत है -

''अगर एक बिल्ली को बंदी बनाकर मारते हैं तो वही बाघ की तरह अन्याय का प्रतिशोध ले सकती है। इसी प्रकार छोटा लडका होकर भी पोतुराजू निर्भय होकर सबकी खुशी केलिए दुष्ट नांचारय्या को मार डालता है।'' [11]

4.1.1.2. *आत्म पर्यालोचन :*

हर एक व्यक्ति को समाज में उच्च स्थान पाने के लिए सर्वोत्तम मूल्य है आत्म - पर्यालोचन। क्यों कि इसी मूल्य से मानव अपने काम में सफल बनता है।

डॉ. कर्दम जी अपनी कहानी 'पेन्शन ' में आत्म - पर्यालोचन का समर्थन किया । इस कहानी में अविनाश बुरे रास्ते पर जाता था। जब रुक्मिणी उसे टोकती तो वह मुँह जोरी करता है, उल्टा -सीधा बोलता है और कहता है -

''तू कौन होती है मुझे रोकनेवाली। मैं अपनी मर्जी का मालिक हूँ। मुझे जो अच्छा लगेगा वही करुँगा।'' [12]

अविनाश के कटु व्यवहार से रुक्मिणी बहुत दु:खित होती हैं। बुरे व्यसनों के गुलाम बनकर अविनाश दादी की हत्या कर डालता हैं और दादी की अंगूठी को सुरक्षित रखकर उससे दादी की पेन्शन पाने लगता हैं । यहाँ अविनाश को अत्म-पर्यालोचन करने की आवश्यकता हैं क्यों कि बुरे रास्ते पर जाने का फल यह निकला कि पेन्शन बना हत्या का कारण। अतः उसे अपनी आलोचना करनी चाहिए। 'मंगल सूत्र' कहानी में सुगुणा को भी आत्म - पर्यालोचन करना चाहिए क्यों कि हिन्दू औरत होकर भी वह पराये पुरुष का सांगत्य चाहती है और प्रशान्त से कहती है -

'आप तो जानते हैं न किसी हिन्दू औरत केलिए मंगल सूत्र की क्या वैल्यू होती है। कितना पवित्र होता है यह उस के लिए।मंगलसूत्र पहन कर पति के अलावा किसी पराये मर्द के साथ कुछ करना तो .... ।'' [13]

कर्दम जी यह संदेश देना चाहते है कि अगर सुगुणा आत्म - पर्यालोचन करती है तो

हिन्दू नारी होने के नाते मंगलसूत्र की पवित्रता पहचान कर गल्ती नही करती ।

डॉ. इनाक जी भी संदेश देते हैं कि हर एक व्यक्ति को आत्म पर्यालोचन करना अनिवार्य है । जब एक व्यक्ति उचित - अनुचित का विचार करके, अपने कार्यों के प्रति आत्म-विचार करता है तो अपने जीवन में सफल बन सकता है ।इनाक जी की कहानी 'कुल वृत्ति' में उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि समाज में क्या उचित है और क्या अनुचित है । हमारा संप्रदाय है कि मंदिर में चप्पल पहनकर जाना मना है । लेकिन इनाक जी ने यह कहने का प्रयत्न किया कि मन पवित्र रहना है और किये जाने वाले कार्य कलुषित रहित होना अनिवार्य है ।

प्रो. कृपाचारी का कथन है - ''इनाक जी की 'कुल वृत्ति' कहानी में मूर्ति नामक युवक चप्पल पहन कर मंदिर में प्रवेश करने केलिए पूजारी से तर्क करता है कि चप्पल पहन कर क्यों नहीं प्रवेश कर सकते ? वह कहता है - '' हत्यारों, चोर , षडयंत्रकारियों ,घोखेबाज, व्यभिचारी, जुआरी, शराबी , कपटी, कल्मषों, दोषी, द्रोही, अपचारी, अधर्मी, अन्यायी मंदिर आसकते है और भगवान का दर्शन कर सकते हैं । लेकिन एक निर्मल व्यक्ति जूते पहन कर आना मना है ठीक है ?'' [14]

''दुष्ट लोग आ सकते है लेकिन अच्छे व्यक्ति जूते पहन कर आ नहीं सकते । '' [15]

इस प्रकार इनाक जी इस कहानी में यह संदेश देना चाहते है कि हर एक व्यक्ति को आत्म पर्यालोचन करने की आवश्यकता है । यहाँ उन्होने कुल वृत्ति को मान देते है । उनका उद्देश्य है कि एक दुष्ट व्यक्ति के बिना जूते पहन कर मंदिर में आना दोष नहीं है । लेकिन अन्त में वे संप्रदाय को गौरव देते है ।

4.1.1.3. *विनम्रता :*

'बताया गया है - विद्या ददाति विनयमं' । विनम्रता मानव केलिए श्रेष्ठ मूल्य है । मंदिर कहानी का रंगलाल उच्च पदवी से सुशोभित विनम्र आदमी है जब मंदिर निर्माण

केलिए चन्दा पूछने आते हैं और उसे बडा आदमी बताते हैं तो रंगलाल विनम्रतापूर्वक कहा -

''पता नहीं किस आधार पर मुझे बड़ा आदमी कह रहे हैं । मैं तो मामूली सा आदमी हूँ । आप सब मुझसे बडे हैं । मैं सबसे छोटा हूँ । दूसरे, मैं एक वेतन - भोगी नौकरी - पेशा आदमी हूँ । '' [16]

रंगलाल की विनम्रता का समर्थन करते हुए शर्माजी कहते हैं -

'' यह आपका बडप्पन है, जो खुद को साधारण आदमी कह रहे हैं । नहीं तो आप इतने बडे अधिकारी हैं । इस कालनी में आपसे बडा अधिकारी कोई नहीं है । समाज मे आपकी क्या जगह है, वह भी हम जानते हैं ।''[17]

जब आदमी विनम्र रहता है तो ईमानदारी उसके साथ - साथ चलती है । इसलिए रंगलाल कहता हैं -

''एक क्लर्क रिश्वत लेता है, वह लाखों -करोडों से खेलता है । वह हजारों रुपये कहीं पर भी फेंक सकता है । रिश्वत से दूर और केवल वेतन पर निर्भर रहनेवाले बडे से बडे ईमानदार अधिकारी की आर्थिक हालत हमेशा पतली रहती है । वह दस रुपये भी सोच समझ कर खर्च करता है । ईमानदार अधिकारी की आर्थिक हैसियत उस क्लर्क के सामने कुछ नही है ।'' [18]

यहाँ कर्दम जी विनम्रता के साथ - साथ ईमानदारी पर भी जोर देते है ।

डॉ. इनाक जी की कहानी 'पादपूजा ' में डॉ रामाराव ने लंगडे सरला की जाँच करके, उसको चलने का आश्वासन देता है तो सरला विनम्र होकर कहती है -

''अगर आप मुझे चलाएँगे तो जीवन - भर आपके पैरों की पूजा करूँगी ।''[19]

डॉ. रामाराव अपने प्रयत्न में सफल बनता है तो उस केलिए सरकार की ओर से सम्मान कार्यक्रम का इंतजाम किया जाता है । सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगते हैं तो विनम्रता से वह अपने मित्रों से कहता है -

''मेरी इस सफलता केलिए एक अध्यापक कारण हैं, जिन्होंने मेरी इस नौकरी के कारण थे । अगर वे मेरी सहायता नहीं करते तो मैं इस स्थिति तक नहीं पहुँच पाता ।''[20]

वही अध्यापक की मुलाकात जब रेलगाडी में होती है तो उनके पैरों की वंदना करके, विनम्रता से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है । अतः इनाक जी आजकल के युवा वर्ग को बडों के प्रति विनम्र रहने का संदेश देते हैं ।

4.1.1.4. *तेजस्विता*

व्यक्ति को सात्विक, ध्येय निष्ठ तथा दृढ निश्चयी बनने के लिए तेजस्विता की जरूरत है । कर्दम जी की 'मजदूर खाता' कहानी में जब एक मजदूर को अपने खाते से पैसे लेने के लिए बैंक अधिकारी रोकते है तो उस मजदूर के मालिक क्रोधित होकर ,शाखा प्रबंधक को चेतावनी देते हुए बोला -

'' मैं तो इस की मदद करूँगा । अपने खाते से खुद पैसा निकाल कर इस को दूँगा, लेकिन आपकी शिकायत भी मैं आपके सी.एम.डी. और रिजर्व बैंक से जरूर करूँगा और मीडिया तक भी मैं यह बात पहुँचाऊँगा कि एक राष्ट्रीकृत बैंक,किस तरह देश के नागरिकों के साथ भेद-भाव रखता है । तब दीजिएगा आप जवाब । बढाइएगा अपना बिजिनेस ।''[21]

'तलाश ' कहानी में राम वीर सिंह एक सरकारी अधिकारी है वे गुप्ता के मकान में किराये पर रहते है । जब वे दलित नारी रामबती से पकवाना तैयार करवाते हैं तो गुप्ता जी उसे अपने घर को खाली करने केलिए कहते हैं , क्यों कि उनका विश्वास है कि एक चूहडी के प्रवेश करने से रसोई घर अपवित्र हो जायेगा । लेकिन रामवीर सिंह दृढ़ता से कहते है -

'' यदि यह बात है तो मैं अपना मकान खाली करने केलिए तैयार हूँ । लेकिन जातिगत भेद भाव के आधार पर मैं रामबती से खाना बनवाना बन्द नही करूँगा । '' [22]

इनाक जी की कहानी 'ऊरबावि' भारतीय संस्कृति का साकार रूप है । वर्ण या वर्गों का अंतर बैल के कलेवर के बराबर है । कुएँ से कलेवर रूपी अपवित्र या कलुषित भावनाओं को निकालकर पानी को स्वच्छ बनाना ही इस कहानी का उद्देश्य है । इस कहानी में सत्यनारायण

ऐसा वकील है, जो मुखिया के अन्याय का सामना करता है । जब मुखिया चिदंबरं और उसके पिता पर खूब मार - पीट करता है तो सत्यनारायण उसका तीव्र खंड्न करता है । वह मुखिया से कहता है -

''अगर चिदंबरं मर गया तो तुझे जरूर फाँसी पर चढाऊँगा । अगर ऐसा नहीं करता तो मेरा नाम सत्यनारायण नहीं है ।''[23]

सत्यनारायण इतना तेज है कि चिदंबरं और रामुडु को सजीव - दहन करने केलिए अपने ही घर को आग लगाता है तो उन दोनों को बचाने केलिए वह तत्पर हो जाता है । जब गाँव के लोग मुखिया से डरने लगते हैं तो वह अपनी आशा व्यक्त करते हुए कहता है -

'' भय की वजह से चलनेवाला व्यक्ति, समाज प्रेम की वजह से चलनेवाला कब बनेगा ?''[24]

इस प्रकार वह गाँव के सभी लोगों को निर्भय रहने का सलाह देता है । मुखिया के हाथों से चिदंबरं और रामुडु को बचानेवाला सात्विक है सत्यनारायण । यही नहीं, वह मानवतावादी मूल्यों पर जोर देनेवाला है ।

4.1.1.5. *उद्यमशीलता :*

अकेला होने पर भी कुछ कर दिखाना उद्यम शीलता हैं । इस केलिए 'खरोंच 'कहानी का रंगलाल और 'हाऊसिंग सोसाइटी ' कहानी का विजय महतो सच्चे उदाहरण हैं । रंगलाल मध्यवर्गीय परिवार के होने पर भी समाज में अपना स्थान बनाये रखने केलिए कार खरीदने केलिए उद्यमशील होता हैं । जब एक दलित होने के नाते विजयमहतो को हाऊसिंग सोसाइटी का मेंबरशिप नही मिलता तो वह निराश न होकर , फिर प्रयत्न करने में उद्यमशील होता है । वह अपनी पत्नी से कहता हैं -

'' तब ? .... तब मैं उन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करुँगा । कोर्ट में जाऊँगा । इस

बार चुप नहीं बैठूँगा मैं । देखता हूँ कैसे जाति के आधार पर मेंबरशिप देने से मना करती हैं , हाऊसिंग सोसाइटी ।'' [25]

आजकल की स्त्रियों को आत्म निर्भरता बढ़ाने का उपदेश देते हुए इनाक जी ने 'डौरी डेत ' कहानी की रचना की ।दहेज की समस्या बेटी के माता - पिता केलिए अभिशाप जैसी है । लता और रवि एक दूसरे से प्यार करते हैं और विवाह करना चाहते हैं । लता के माता-पिता बेटी को उच्च शिक्षा तो दे सकते है, लेकिन दहेज देकर विवाह नहीं कर सकते ।रवि की माता और भाई , लता की हत्या करने केलिए अनेक प्रयत्न करते रहते हैं । एक दिन रवि को दूध मे नींद की गोलियाँ मिलाकर देते हैं तो वह गाढ़ निद्रा में डूब जाता है । तब सास और जीजा लता पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगाने केलिए तत्पर होते हैं, उस समय लता की सहायता करने वाला कोई नहीं है । वह स्वयं निश्चय कर लेती है कि वह जिन्दा रहे । इसलिए मिट्टी का तेल सास और जीजा पर डाल कर आग लगा देती है ।

इस प्रकार वह किसी की इंतजार न करके अपनी समस्या का सुझाव स्वयं हलकर देती है । यहाँ एक अबला सबला बन जाती है । यहाँ इनाक जी दहेज रुपी राक्षस पर हर एक लड़की को हमला करना चाहते हैं । तभी इस समाज मे डौरी डेत नहीं होते ।

आजकल लडका और लडकी के देखबाल करने में माता-पिता थोडा अंतर दिखाते हैं । लडकी के अलावा लडके पर ही अधिक प्रेम दिखाते हैं । 'गम्यं' कहानी में नागम्मा अपने पति का दूसरा विवाह, रिजिस्ट्रार कार्यालय में स्वयं करती है । नागम्मा गाँव में रहनेवाली अशिक्षित नारी है तो रमा शहर की पढी - लिखी नारी । नागम्मा एक लडकी को जन्म देती है तो रमा लडके को । दोनों पर पति के प्रेम में भी अंतर दिखायी पडने लगता है । अतः नागम्मा फिर पढना चाहती है और अपने लिए समाज में एक प्रत्येक स्थान पाना चाहती है । अपनी बेटी का

पालन - पोषण स्वयं करने केलिए उद्यत होती है । अतः पति को छोडकर, गाँव चली जाती है और स्वाभिमान से जीने केलिए तैयार होती है ।

' विघ्न विनायकुडु ' कहानी में सवर्ण जाति के लोग तथा दलित जाति के लोग, विनायक चतुर्थि त्योहार के अवसर पर गणेश मूर्ति का इंतजाम करते हैं । पर हर साल इसी संदर्भ में दोनों के बीच संघर्ष चलता रहता है । क्योंकि, सवर्ण जातिवाले समझते हैं कि दलितों को इस प्रकार मूर्ति का इंतजाम करके, त्योहार मनाना ठीक नहीं है । इस प्रकार वे दलितों का दमन करना चाहते हैं । लेकिन दलितों का नायक नरसप्पा कहता है -

'' यह हमारा गाँव है । जब तक जिंदा रहते हैं, तब तक इसी गाँव में रहना पडता है । कौन आकर, हमारी सहायता करता है ? हमें अपनी सहायता स्वयं करनी चाहिए । हममें भक्ति है और मूर्ति रखने का उत्साह है । अगर भय के कारण हम मूर्ति नहीं रखते तो वह मृत्यु से भी बढकर शर्म की बात है । यही हमारा पराजय है । इससे बढकर मौत ही ठीक है । '' [26]

यहाँ नरसप्पा अन्याय के विरुद्ध लडने केलिए उद्यमशील होता है । भगवान का उत्सव मनाना हर एक आदमी का हक है । अतः सवर्णों से लडकर, दलित लोग इसमें सफल बनते हैं ।

4.1.1.6. *एक निष्ठा :*

'साँग' कहानी में भुल्लन को साँग देखने का बहुत शौक था । बीमारी के कारण एक हफ्ते से वह काम करने नहीं गया । उस को साँग के यहाँ देख कर , मुखिया आग -बबूला होकर उसे खूब मार - पीट करता हैं तो वह बेहोश होकर मर जाता हैं । उस की पत्नी चंपा को यही घटना बार - बार याद आती रहती है और उस के मन में ज्वाला की तरह जलने लगी । वह अच्छे अवसर की प्रतीक्षा करने लगी । एक दिन चंपा भी काम करने न जाकर साँग देखने लगती है । मुखिया उसे भी मारने केलिए हाथ उठाता है तो इसी अवसर केलिए प्रतीक्षा

करनेवाली चम्पा, गंडासे से मुखिया का सिर दो फाँक कर दिया । इस प्रकार चम्पा एक निष्ठा से अपना लक्ष्य पूरा करती है ।

'लाठी ' कहानी का प्रमुख पात्र एक दलित किसान है, जो अपने वार पर अपने खेत में पानी देने जाता है । लेकिन उस समय तक गाँव के दबंग जाट किसान बदनी, दलित किसान हरिसिंह को लाठी से मार देता है । बदनी से बदला लेने के लिए गाँव के सब लोग सलाह देते हैं । इस घटना पर फग्गन का आक्रोश तथा बदला लेने का निश्चय देखते ही बनता है -

'बदनी, मैं देखूँगा तुझे । वह आक्रोश से बुदबुदाया । आक्रोश के कारण उस का चेहरा खिंच रहा था , मुट्ठियाँ कस रही थीं और उस की आँखें सामने दीवार के साथ खडी लाठी पर अटकी थी ।' [27]

यहाँ फग्गन लाठी का जवाब लाठी से भी देना चाहता हैं । इसी एक निष्ठा से वह आगे बढ़ता हैं ।

इनाक जी की कहानी ' प्रेम स्पर्श ' में नरसिंहुलु एक दलित है ,जो डाक्टर बनता है । इसके गुरु कोदंडं हमेशा उस का मार्ग-दर्शन करता रहता है । मेडिसन पूरा होने के बाद गुरू की सलाह से एक निष्ठा से काम करके नरसिंहुलु एक अच्छा डाक्टर बन जाता है । उस का संकल्प ही उसे उन्नत शिखरों पर चढ़ाता है एक निष्ठा से काम करने से असाध्य भी सुसाध्य बनता है । यही 'प्रेमस्पर्श ' कहानी से साबित हुआ ।

''कोदंडं यह जान कर खुश होता है कि उसने जिस पौधे को उगाया, वही आज एक वृक्ष बन कर सबको छाया दे रहा है । अनेक लोगों की सेवा कर रहा है ।''[28]

अंत मे नरसिंहुलु अपने गुरु कोदंडं का ही आपरेशन करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है ।

4.1.1.7. *स्वाभिमान :*

हर एक व्यक्ति को स्वाभिमान से रहना चाहिए । तभी वह उन्नति के पथ पर अग्रसर हो

सकता हैं । 'सूरज 'कहानी का सूरज एक स्वाभिमान युवक है । वह अपना जीवन स्वयं जीना चाहता है । यही बात वह सुमन लता से बताता है -

''मैं चाहे कुछ भी करूँ चाहे जिसी भी हाल में रहूँ , लेकिन मैं स्वाभिमान की जिंदगी जिऊँगा । किसी के सामने झुकूँगा या गिडगिडाऊँगा नही । '' [29]

'रास्ते ' कहानी का दीपक भी एक स्वाभिमान व्यक्ति है । जब उस के घर में आर्थिक समस्याएँ आती हैं तो कल्पना उसकी सहायता करना चाहती हैं । लेकिन वह लेने केलिए तैयार नहीं होता । उसकी स्वाभिमानता के बारे में वह कहती हैं -

'' मित्र हूँ मैं तुम्हारी । मैं जानती हूँ , तुम एक स्वाभिमानी व्यक्ति हो । मुझे यह बहुत अच्छा लगता है । तुम्हारी इस स्वाभिमान भावना की मैं कद्र करती हूँ । लेकिन मित्रों के बीच ऐसा नहीं होता । मित्रों के द्वारा एक - दूसरे की सहायता करना सहयोग होता हैं, कर्ज नही । संघर्ष और जरूरत के समय मित्र सहयोग नहीं करेंगे तो और कौन करेगा ? '' [30]

इनाक जी की 'बर्त सर्टिफिकेट' कहानी में रमणी स्वाभिमान नारी है । कालेज में अध्यापिका है । किसी की धोखेबाजी से वह माता बनी । शिशु को जन्म देने केलिए वह अस्पताल जाती है । अब वह दो बच्चों की माँ है । वह किसी को अपने बच्चों के पिता के बारे में नही बताती । वह इतना स्वाभिमान है कि जिस ने उसको धोखा दिया, उसका नाम बताना भी वह नहीं चाहती । वह अपने दो बच्चों का पालन - पोषण स्वयं करना चाहती है । इसीलिए दूसरी बच्ची के जन्म संबंधित प्रमाण पत्र में पिता का नाम लिखने के जगह को खाली रखना चाहती है । अन्त में डाक्टर कहती है -

''तीस साल की महिला, इस अस्पताल में भर्ती होकर भविष्य में नित्य - नूतन समाज का निर्माण करनेवाली बच्ची को जन्म दिया है ।'' [31]

4.1.2. *पारिवारिक मूल्य :*

समाज में पारिवारिक संबंध या मूल्य अपने लिए प्रमुख स्थान रखते हैं । परिवार के

बिना समाज की कल्पना ही नहीं कर सकते । पति - पत्नी, माता -पिता और संतान परिवार के सदस्य हैं जब हर एक अपने - अपने कर्तव्य निभाते हैं , तो वे ही पारिवारिक मूल्यों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं । परिवार में पति और पत्नी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । कर्दम जी ने और इनाक जी ने अपनी कहानियों में पारिवारिक मूल्यों पर जोर दिया ।

4.1.2.1. *पति -पत्नी संबंधी मूल्य :*

पति और पत्नी को अपने - अपने कर्तव्य ठीक - ठीक निभाना चाहिए । आजकल कुछ मर्द अपने मूल्यों से वंचित हो रहे हैं । 'पगडी ' कहानी का रामसिंह पति के रूप में अपना कर्तव्य नहीं निभाता । उसकी पत्नी सरबतिया परिवार का बोझ अपने ही कंधों पर उठाती है । सरबतिया के बेटे की सगाई में मुख्य कार्यक्रम, परिवार के मुखिया को पगडी बंधना । यहाँ सब लोग सरबतिया को ही परिवार का मुखिया स्वीकार करते हैं और औरत होने पर भी पगडी उसे ही बाँधना चाहते हैं । वहाँ एक व्यक्ति ने अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा -

'' समाज की यह परंपरा ही तो है कि पगडी स्त्री को नही बंधती ।इस परंपरा को बदला क्यों नहीं जा सकता । परिवार का सारा बोझ स्त्री उठाए, वही रात - दिन हर काम में खटे । पुरुष केवल मूछों पर ताव दिये, इधर - उधर मटर गस्ती करता घूमता फिरे । न कमाए - धमाए, न कोई और जिम्मेदारी उठाए, ऊपर से दारू पीकर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मार -पीट करे तो वह परिवार का कैसा मुखिया हुआ ? .... भई मेरी राय में तो जो परिवार की जिम्मेदारी उठाए,परिवार केलिए त्याग करे, वही परिवार का मुखिया है और पगडी उसी को ही बंधनी चाहिए ।'' [32]

इस प्रकार यहाँ सरबतिया पत्नी होकर भी घर की जिम्मेदारी स्वयं उठाती है और कर्तव्य निभाती है ।

पति -पत्नी के मूल्य आज कल विघटित भी हो रहे हैं । इस का चित्रण कर्दम जी 'मंगलसूत्र ' कहानी में करते है । स्त्री - पुरूष पर विदेशी सभ्यता सवार हो रही है । इस

आस-पास उम्र की थी । कोई काम वह नहीं करती थी । लेकिन जब बेटा अनुरोध करता है तो वह उसके लिए और उस के दोस्तों के लिए चिकन बनाने के लिए तैयार हो जाती है । स्वादिष्ट भोजन खाकर वे बहुत संतुष्ट होते हैं । असलम की माँ पूरे स्नेह और वात्सल्य से कहती है -

''तुम लोग रोज आओ बेटा । यह तुम्हारा घर है । तुम जब कहोगे मैं तुम्हारे लिए चिकन बनाऊँगी । तुम असलम के दोस्त हो । मेरे लिए असलम की तरह हो । मेरे लिए इस से बढ़कर क्या खुशी की बात होगी कि मैं अपने बेटे को अपने हाथ से चिकन बनाकर खिलाऊँ ।''[35]

असलम की माँ के प्यार और अपनत्व से अभिभूत, अभय तिवारी के मुँह से कोई शब्द नहीं निकल पाए । अतः माँ का प्रेम वर्णनातीत है । अपने बच्चों के लिए कुछ भी करने के लिए वह तैयार हो जाती है । माँ- बाप बच्चों के विचारों को भी मूल्यवान समझते हैं । 'नो बार' कहानी में अनिता की शादी करने के लिए वर की तलाश में विज्ञापन दिया जाता है तो राजेश अनिता से शादी करने तैयार होता है । लडकी के विचारों को मूल्यवान समझ कर उसके पिता कहता है -

'' तुम पढे लिखे हो, दुनिया को देखते हो । अपना भला - बुरा अच्छी तरह समझते हो । तुम जो भी करोगे ठीक ही करोगे । यदि तुम्हें अच्छा लग रहा है, तुम्हारा मन ठुक रहा है तो हमारे लिए भी अच्छा है । तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी हैं । '' [36]

आजकल समाज में कभी - कभी माँ - बाप के लिए अपने बच्चों के प्रति जो मूल्य होने चाहिए, वे विघटित हुए दिखाई पडते है । 'बिट्टन मर गई 'कहानी मे बिट्टन की शादी तो की जाती है लेकिन उस के माँ - बाप अपनी संकीर्ण भावनाओं के कारण बेटी की जिन्दगी बरबाद कर देते हैं ।

''अम्मा - बाबू से वह यही सवाल करती है कि गल्ती उनकी है या आप लोगों की । पर सजा तो मुझे मिल रही है न ? मेरी गल्ती क्या है ? '' [37]

कहानी के अन्त में बिट्टन की मृत्यु हो जाती है । लेकिन कहानीकार का उद्देश्य हैं -

इनाक जी यह कहना चाहते हैं कि पति - पत्नी को एक -दूसरे पर अपार प्रेम होना चाहिए । लेकिन उस केलिए भी एक सीमा होती है ।

' रुचि 'कहानी में सुंदर और सुधा पति - पत्नी हैं । उनकी शादी हुई दो महीनें हुए । सुधा अपने पति के इच्छानुसार स्वादिष्ट भोजन तैयार करती है । सुधा समझती है कि वे दोनों आदर्श पति - पत्नी हैं । क्योंकि वे दोनों आपस में एक - दूसरे की इच्छाओं का आदर करते हैं और उन्हें पूरा करने में तत्पर रहते हैं । अतः इनाक जी आदर्श पति - पत्नी के रूप में उन दोनों का चित्रण करके, पति - पत्नी के मूल्यों पर जोर देते हैं ।

संसार में पति - पत्नी का संबंध अटूट है । इनाक जी की कहानी ' इंकें कावाली 'में बच्चों केलिए पति - पत्नी बहुत चिंतित होते हैं । इस केलिए अनेक व्रत, पूजा आदि करते हैं । रमा और राजू इस कहानी के पात्र हैं । संतान - प्राप्ति में ही दांपत्य जीवन का स्वाद मधुर होता है । जब उनका सपना पूरा होता है तो वे आनंदानुभूति में झूलने लगते हैं ।

4.1.2.2. *माता पिता संबंधी मूल्य*

संतान के प्रति माता - पिता का दायित्व असीमित होता है । कर्दम जी की 'मजदूर खाता' कहानी इस के लिए सच्चा सबूत है । जब रामलाल की पत्नी फोन में कहती है कि बच्चे की तबीयत ठीक नहीं है तो उस का मन बहुत व्याकुल हो उठता है ।

'' रामलाल की वह रात बहुत व्याकुलता में बीती । बेटे की चिन्ता में नींद उसकी आँखों से जैसे गायब हो गयी थी । उस का मन कह रहा था कि बेटे से बढ़कर क्या मूल्यवान है दुनिया में ।'' [34]

रामलाल की पत्नी भी मन से चाहती थी कि रामलाल पैसे लेकर स्वयं गाँव आए ताकि उसे भी हिम्मत बंधे । माँ -बाप अपनी संतान के प्रति इतना प्रेम रखते है कि उसकी गिनती ही नहीं की जाती ।

'कामरेड का घर 'कहानी में अपने बेटे के प्रति असलम की माँ हालाँकि सत्तर वर्ष के

आस-पास उम्र की थी । कोई काम वह नहीं करती थी । लेकिन जब बेटा अनुरोध करता है तो वह उसके लिए और उस के दोस्तों के लिए चिकन बनाने के लिए तैयार हो जाती है । स्वादिष्ट भोजन खाकर वे बहुत संतुष्ट होते हैं । असलम की माँ पूरे स्नेह और वात्सल्य से कहती है -

''तुम लोग रोज आओ बेटा । यह तुम्हारा घर है । तुम जब कहोगे मैं तुम्हारे लिए चिकन बनाऊँगी । तुम असलम के दोस्त हो । मेरे लिए असलम की तरह हो । मेरे लिए इस से बढ़कर क्या खुशी की बात होगी कि मैं अपने बेटे को अपने हाथ से चिकन बनाकर खिलाऊँ ।''[35]

असलम की माँ के प्यार और अपनत्व से अभिभूत, अभय तिवारी के मुँह से कोई शब्द नहीं निकल पाए । अतः माँ का प्रेम वर्णनातीत है । अपने बच्चों के लिए कुछ भी करने के लिए वह तैयार हो जाती है । माँ- बाप बच्चों के विचारों को भी मूल्यवान समझते हैं । 'नो बार' कहानी में अनिता की शादी करने के लिए वर की तलाश में विज्ञापन दिया जाता है तो राजेश अनिता से शादी करने तैयार होता है । लडकी के विचारों को मूल्यवान समझ कर उसके पिता कहता है -

'' तुम पढे लिखे हो, दुनिया को देखते हो । अपना भला - बुरा अच्छी तरह समझते हो । तुम जो भी करोगे ठीक ही करोगे । यदि तुम्हें अच्छा लग रहा है, तुम्हारा मन ठुक रहा है तो हमारे लिए भी अच्छा है । तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी हैं । '' [36]

आजकल समाज में कभी - कभी माँ - बाप के लिए अपने बच्चों के प्रति जो मूल्य होने चाहिए, वे विघटित हुए दिखाई पडते है । 'बिट्टन मर गई 'कहानी मे बिट्टन की शादी तो की जाती है लेकिन उस के माँ - बाप अपनी संकीर्ण भावनाओं के कारण बेटी की जिन्दगी बरबाद कर देते हैं ।

''अम्मा - बाबू से वह यही सवाल करती है कि गल्ती उनकी है या आप लोगों की । पर सजा तो मुझे मिल रही है न ? मेरी गल्ती क्या है ? '' [37]

कहानी के अन्त में बिट्टन की मृत्यु हो जाती है । लेकिन कहानीकार का उद्देश्य हैं -

''बिट्टन तो उसी दिन मर गयी थी, जब जाति के कारण उसके माँ - बाप ने उसको ससुराल न भेजकर उस की जिन्दगी को तपते रेगिस्तान में झुलसकर मर जाने केलिए छोड दिया था । अब तो वह जिन्दगी की आशा में केवल हाथ - पैर मार रही थी बस्स ।'' [38]

माँ - बाप की गल्ती से बेटी की जिंदगी बरबाद हो गयी ।

माता - पिता की देखबाल करना हर एक व्यक्ति का प्रधान मूल्य है । क्यों कि बच्चे ही उनकी संपत्ति है । वे गाँव छोडकर शहर नहीं आते । अतः उन केलिए जो आवश्यकताएँ हैं, उनकी पूर्ति करना पुत्र का कर्तव्य है । इनाक जी की 'अस्पृश्य गंगा ' कहानी का नायक विनायक की आर्थिक स्थिति तो अच्छी नहीं है । फिर भी वह अपने बूढे माँ - बाप को कुछ पैसे भेजकर, उनकी देखबाल करने लगता है ।

'कोलुपुलु ' कहानी में पूँजी वादी नांचारय्या अपने नौकर की पत्नी को बलात्कार करना चाहता है । पोतराजू नौकर का बेटा है, जो इन्टरमीडिएट पढ़ रहा है । नांचारय्या एक शर्त रखता है कि पोतुराजू को अपना कर्ज झठ चुकाना है या अपनी माँ का बलात्कार करना हैं, नहीं तो वह पोतुराजू की माँ नल्लम्मा का बलात्कार स्वयं करेगा । पोतुराजू अपनी माँ को देवी का स्वरूप मान कर कहता है -

'' वह मेरी माँ है । मेरे जन्म दाता है । मजदूरी करके उसका पालन पोषन करती है । माता देवी का स्वरूप है । '' [39]

इस प्रकार पोतुराजू माँ को भगवान का रूप मानता है ।

इनाक जी की कहानी ' दैन्यं लेनि जीवितं ' में राजू के दो बेटे और दो बेटियाँ हैं । दोनों पति - पत्नी अपनी सन्तान के भविष्य केलिए अनेक कष्ट सहकर, चारों को उन्नत शिखर पर देखने की अभिलाषा रखते हैं । उसकी बडी बेटी कहती है -

'' पिताजी । हमारे भविष्य केलिए कोई चिंता नहीं है । आप हमारे भविष्य केलिए सोने जैसे नींव डाली । हमारे लिए किसी प्रकार का भय नहीं है । ''[40]

राजू ने बचपन में अनेक कष्ट झेले । इसलिए अपने बच्चों को किसी प्रकार का कष्ट न आने केलिए जागरूक रहा । अपने बच्चों के प्रति माता -पिता को जो जिम्मेदारियाँ रहती हैं, उनकी पूर्ति केलिए राजू और उसकी पत्नी सफल हुए । उन दोनों की आशा है कि उनकी संतान कभी भी दुःख का अनुभव न करे ।

4.1.2.3. *सन्तान संबंधी मूल्य :*

माता - पिता के प्रति आदर व्यक्त करना संतान का प्रथम कर्तव्य है । आजकल समाज में संतान संबंधी मूल्य भी विघटित होते दिखायी पडते हैं । सन्तान अपने माता - पिता को बोझ समझ रहे हैं । अतः वृद्धाश्रम उनका आवास बन रहा है । इसीलिए संतान संबंधी मूल्यों को कर्दम जी और इनाक जी अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं ।

कर्दम जी की कहानी 'नो बार ' में लडकीवालों से दिये गये मैट्रीमोनियल का विज्ञापन देखकर, राजेश नामक लडका आता है । दोनों के विचार एक जैसे होते हैं । लडका और लडकी एक - दूसरे से शादी करना चाहते हैं । राजेश स्वयं निर्णय कर सकता है । फिर भी वह माँ - बाप की अनुमति लेना चाहता है और सोचता है -

'' भले ही अपने भविष्य के बारे में निर्णय मुझे खुद लेना है और ले लिया है, फिर भी माता - पिता ने मुझे पढाया - लिखाया है, मेरे लिए इतने कष्ट सहे हैं । मुझे उनका मान - सम्मान भी रखना चाहिए । मुझे उनको भी बताना चाहिए कि मैं ने अपने लिए लडकी ढूँढ ली है । वे कितने खुश होंगे ।'' [41]

यहाँ बेटा माँ - बाप की खुशी ही अपनी खुशी समझता है ।

'रास्ते' कहानी में दीपक कालेज का विद्यार्थी है । जब पिता की मृत्यु हो जाती है तो वह अपने सारे परिवार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है । उसकी दोस्त कल्पना उसे पढाई न रोकने की सलाह देती है । लेकिन वह कहता है कि वह अपने स्वार्थ के बारे में ही सोचकर पढने लगता है तो घर में सब लोग भूखे रहेंगे । वह कल्पना से कहता है -

'' दो टाइम का आटा तक घर में नहीं है । पिताजी जैसै - तैसे गाडी खींच रहे थे । कैसे होगा सब कुछ ? केवल मेरी पढाई की ही बात होती तो कोई बात नहीं थी । मेरी अपनी पढाई तो इस तरह ट्यूशन करके हो जाएगी । लेकिन गाँव में माँ, छोटे भाई - बहन और बडे भैय्या का परिवार है । उनका क्या होगा ? उनके पेट केलिए रोटी कहाँ से आये, सबसे पहली और बडी समस्या तो यह है ।''[42]

यहाँ दीपक एक सच्चा सुपुत्र साबित होता है । अंत में कल्पना के सहयोग से वह अपनी समस्या का सुझाव सोच लेता है ।

'मानिटर' कहानी का सतीश इंटरमीडिएट विज्ञान का छात्र था । वह कक्षा का सबसे बडा होशियार छात्र तथा मानिटर था । जब पिता की मृत्यु हो गयी तो वह इंजनीयर बनने की इच्छा को मारकर, परिवार की आजीविका चलाने केलिए मजदूरी करने केलिए तैयार हो गया । जब उनके मित्र उसे काम करते हुए देखते हैं तो वह स्थिर चित्त से कहता है कि घर की देखबाल करना अपना कर्तव्य है । इसीलिए मजदूरी कर रहा है । ऐसा लगता है कि सतीश के पात्र के द्वारा कर्दम जी अपने ही जीवन का वर्णन कर रहे हैं ।

इनाक जी की कहानी ' दैन्यं लेनि जीवितं ' में राजू की संतान अपने माता - पिता के प्रति अपार प्रेम रखते हैं । राजू की छोटी बेटी कहती है -

''उस समय हम बच्चे थे और आप दोनों माता - पिता । लेकिन अब आप दोनों बच्चे हैं और हम चारों आपके माता - पिता जैसे हैं । उस समय हमारी सभी आशाओं को आपने पूरी की । अब आपको जो कुछ भी चाहिए, हम पूरा करेंगे । आप दोनों ने हमारा संरक्षण -भार अपने ऊपर रखा । अब हम चार हैं । आपकी देखबाल करना हमारा धर्म है और यही न्याय है ।''[43]

4.1.3. *समष्टिगत सामाजिक मूल्य :*

व्यक्ति समाज का अंग है । समाज में व्यक्ति केलिए कुछ मूल्य होते हैं । वे ही मूल्य जब सामाजिक भावना से ओतप्रोत होते हैं तो सामाजिक मूल्यों के रूप में परिवर्तित होते हैं ।

इन्हीं सामाजिक मुल्यों से समाज का दायित्व स्थिर होता है । आजकल समाज में मूल्यों का विघटन बहुत अधिक देखा जा रहा है । अतः कर्दम जी और इनाक जी अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों की याद दिलाने का प्रयत्न करते हैं ।

4.1.3.1. *वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन :*

समाज में वर्ण व्यवस्था ने आजकल विकृत रूप धारण कर लिया है । कुछ वर्ग या जाति के लोग दलित समझे जाने लगे और उच्च वर्ग के लोग उनको अपने पैरों के नीचे कुचलकर, दबाने का प्रयत्न करने लगे । सरकार जितनी भी योजनाएँ क्यों न बनाएँ, फिर भी कुछ लोग 'दलित' के नाम से आज भी अपमान सह रहे हैं । कर्दम जी और इनाक जी दलित लेखकों के रूप में अपना स्थान स्थिर रखते हैं । उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का खंडन करते हैं । किसी भी जाति को या धर्म को निम्न नहीं बताकर, सर्व धर्म सम भावना को उन्होंने व्यक्त किया ।

कर्दम जी की 'नो बार' कहानी में लडकी के पिता, अपनी बेटी अनिता केलिए अच्छे वर की तलाश में मैट्रिमोनियल में विज्ञापन देता है और यह भी बताता है - 'नो बार '। मतलब किसी भी जाति या वर्ण का लडका वर बनने का लायक है । राजेश प्रगतिशील विचार रखनेवाला युवक है और चाहता है कि उसकी पत्नी भी प्रगतिशील विचारों की हो । जब राजेश अनिता को देखने केलिए उसका घर जाता है तो जाति - पाँति का विरोध करते हुए उसका पिता कहता है -

''देखिए राजेश जी । हम बडे खुले विचारों के आदमी हैं । जाति - पाँति, धर्म -संप्रदाय किसी प्रकार के बंघन हम नहीं मानते । ये सब बातें पिछडेपन की प्रतीक हैं । हमारे परिवार में जितनी भी शादियाँ हुई हैं, वे सब अंतर्जातीय हुई हैं । अब देखो, मैं ब्राह्मण हूँ और मेरी पत्नी कायस्थ परिवार से है । हमारी बडी बेटी की शादी अग्रवाल लडके के साथ हुई है और हमारे घर में जो बहू आई है, वह पंजाबी खत्री है । हमारी नजर में लडका और लडकी एक -दूसरे

को अच्छी तरह देखें, परखें और बातचीत करें । यदि वे दोनों एक - दूसरे को पसंद करते हैं, एक - दूसरे से संतुष्ट होते हैं और उन्हें लगता है कि एक - दूसरे के साथ एडजेस्ट कर सकते हैं तो बस्स वह काफी है । इसके अलावा सब चीजें गौण हैं ।'' [44]

' बिट्टन मर गयी ' कहानी में बिट्टन की शादी हो जाती है । लेकिन शादी के बाद पता चलता है कि वर एक दलित है तो बिट्टन ससुराल नहीं भेजी जाती । वर्माजी उसके घर में किराये पर रहता था । बिट्टन का परिवार कायस्थ था, जब कि वर्माजी चमार थे । बिट्टन की माँ जाति के प्रति कुछ ज्यादा ही सजग रहती थी । घर के अंदर आते - आते वर्माजी के परिवार के सदस्यों का छू जाना तक उसको अच्छा नहीं लगता था । इससे वह स्वयं को अपवित्र मानती थी । विकास बच्चों को पढाने केलिए आता था । जाति के कारण बिट्टन की जिंदगी बरबाद हो जाती है और कहानी के अंत में वह जलकर मर जाती है । उसकी जिंदगी के बारे में विकास सोचने लगता है -

'' मर गयी या मार दी गयी, जो भी हुआ हो । पर बिट्टन तो उसी दिन मर गयी थी, जब जाति के कारण उसके माँ - बाप ने उसको ससुराल न भेजकर, उसकी जिंदगी को मछली की तरह तपते रेगिस्तान में झुलसकर मर जाने केलिए छोड दिया था ।''[45]

यहाँ बिट्टन का कोई सहारा नहीं मिलता तो वह खीजती हैं, चिडचिडाती हैं, गुस्सा करती है और अंदर धधकती रहती है । उसे प्यार और खुशी के दो क्षण चाहिए । विकास भी चमार हैं । बिट्टन के माँ - बाप दलितों को हीन समझनेवाले हैं । अतः विकास बिट्टन की सहायता किसी भी प्रकार नहीं कर पाता । अतः बिट्टन की जिन्दगी बरबाद होने का एक मात्र कारण जाति - भेद हैं ।

'जहर 'कहानी में दलितों के प्रति घृणा भरी बातें सुनकर विश्वंभर, पंडित को अपने टांगे पर रहने नहीं देता । उस ने पंडित से कहा -

''जिस आदमी के मन में इतना जहर भरा हो,उस केलिए मेरे टांगे में कोई जगह नई हैं ।''[46]

'मोहरे ' कहानी का सत्य प्रकाश एक दलित है और दलितों को शिक्षित बनाने में औत्सुक है ।सवर्ण अध्यापक रामदेव त्रिपाठी, दलित शिक्षक सत्य प्रकाश को विद्या मंदिर में बर्दाश्त नहीं कर पाते । अतः उस के विरुध्द षडयंत्र रचकर, उसका स्थानांतरण एक ऐसे स्थान पर करवा देता है, जो उस केलिए नितांत असुविधाजनक है ।

'खरोंच 'कहानी में भी रंगलाल एक दफ्तर में अफसर हैं । अफसर होने के नाते, सभी लोग उसे कार खरीदने की सलाह देते हैं । एक दलित को कार खरीद कर दफतर आने से अनेक लोग, उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं । उनका उद्देश्य है कि एक दलित को कार नहीं खरीदना चाहिए । शाम तक कार पर खरोंच लगाए जाते हैं । क्यों कि दलित होने के कारण रंगलाल को हिकारत की नजर से देखते थे, उस के प्रति द्वेष भाव रखते थे और इन में से ही किसी एक व्यक्ति ने कार में खरोंच के जरिए अपने मन के जातीय द्वेष और घृणा का जहर उगला था । रंगलाल ने महसूस किया कि खरोंच कार से ज्यादा उस के कलेजे पर लगी थी, जो कार में लगी खरोंच से ज्यादा बडी और गहरी थी ।

'हाउसिंग सोसाइटी' कहानी में सरकारी कर्मचारियों को दिया जाने वाला मेंबरशिप ,डिप्टी सेक्रेटरी विजय महतो को नहीं दिया जाता, क्यों कि वे दलित हैं । सोसाइटी का मेंबर बनने केलिए सामाजिक स्टेटस रहने की भी आवश्यकता है । सोसाइटी का अफसर शर्मा जी विजय महतो से कहते है -

''आप तो अच्छी तरह समझते हैं कि हमारा सामाज कुछ अलग तरह का है हमारी सामाजिकता और सामाजिक स्टेटस भी कुछ अलग तरह से निर्धारित होता है । मेरा मतलब है कि सब सदस्य उच्च जातियों के है, जब कि आप .... । हमें तो इन बातों से कुछ लेना -देना नहीं है, लेकिन फ्लैट बेचने हैं तो यह सब ऊँच -नीच देखनी पडती है । यदि आप को सोसाइटी का मेंबर बना लें तो सोसाइटी में इस का तीव्र विरोध होगा और हमारे बाकी फ्लैट भी नहीं बिक पाएँगे । '' [47]

विजय महतो यह सुनकर सन्न रह गया । उसने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि सरकारी कर्मचारियों की आवासीय सोसाइटी में भी जातिगत आधार पर भेद भाव हो सकता है । लेकिन वह इस पर कानूनी कार्रवाई भी करने के लिए तैयार होता है ।

'गोष्ठी ' कहानी का कुमार आदित्य और डाक्टर सुमन समीपी अम्बेडकरवादी भावानाओं को आपनानेवाले हैं । कुछ अन्य मित्रों के साथ मिलकर डाक्टर समीपी के घर गोष्ठी केलिए मिले । कुमार आदित्य के अलावा बाकी सब लोग अम्बेडकर के अनुयायी होने का बहुत दम भरते हैं । लेकिन असल में बाबा अम्बेडकर तो जाति -पाँति का खंडन करनेवाले हैं और सभी लोगों को एक समान रहने का उपदेश देनेवाले हैं । अम्बेडकर के विचारों को व्यक्त करते हुए कुमार आदित्य कहते हैं -

'' हम लोग बाबा साहेब अम्बेडकर के अनुयायी हैं । बाबा साहब ने सदैव जाति - भेद की दीवारों को तोडने पर बल दिया था । वह दलित - पिछडी जातियों की उन्नति और विकास के प्रबल पक्षधर और प्रवक्ता थे । परस्पर जाति भेद को मिटाये बिना कैसी उन्नति और कैसा विकास ? '' [48]

कुमार आदित्य का विचार है कि बाबा साहेब के विचारों को सच बनाना है तो जाति भेद को मिटाना पडता है । इस केलिए एक मात्र साधन अन्तरर्जातीय विवाह है । सबसे पहले भंगी जाति के लोगों से संबंध जोडना चाहिए । क्यों कि -

'' मूल उद्देश्य जाति के बंधनों को तोडना है और इस मे प्राथमिकता भंगी समाज के साथ संबंध बनाने को देनी चाहिए । '' [49]

इस कहानी में कर्दमजी जाति के बंधनों को तोडने पर जोर देते है ।

आज भी समाज में कुछ ऐसी जातियाँ हैं जो अस्पृश्य माने जाते है । उन जातियों के लोगों पर अग्र वर्ण वाले अपना अधिकार जमा लेते है और उन पर अमानवीय व्यवहार

करते है । ऐसी जातियों के पहचान केलिए दलित लेखक बहुत प्रयत्न करते है । इनाक जी की 'अस्पृश्य गंगा 'ऐसी ही कहानी है, जिसमें उन्होंने दलित जाति के उद्धार करना चाहते हैं ।

समाज परिवर्तनशील है । दलित जाति में जन्म लेने के कारण, उन्होंने अनेक यातनाएँ तथा अपमान भोगे । उन्हीं का जीता -जागता वर्णन उनकी कहानियों में दिखायी पडता है । ऊरबावि, कट्टडि, काकि, विघ्न विनायकुडु, तल लेनोडु, अस्पृश्य गंगा, विपर्ययं, कोलुपुलु, कुलवृत्ति आदि कहानियाँ इस केलिए सबूत हैं । समाज में अछूत की समस्या, मंदिर के प्रवेश में निषेध, निरक्षर होने के नाते कुंठित अभ्युदय, गाँव से दूर आवास आदि दलितों के सामने प्रज्वलित समस्याएँ हैं ।

इनाक जी की कहानी 'कालेरा' में सुमिता, विश्व विद्यालय में असिस्टेन्ट प्रोफेसर है । उसके माँ - बाप की शादी रिजिस्ट्रार दफ्तर में हुआ । एक - दूसरे की जाति की जानकारी उनको नहीं है । सुमिता भी जाति - पाँति से दूर ऐसा जीवन बिताना चाहती है कि जहाँ जाति भेद न हो ।यही भावना व्यक्त करती हुई वह विश्वविद्यालय के उप -कुलपति से कहती है -

'' अगर जाति, ऊँच - नीच भावनाओं केलिए तथा एक - दूसरे पर विद्वेष केलिए मूल नहीं बनती तो अच्छा है । मनुष्य में आपसी विद्वेष पैदा न करे तो ठीक है । जाति तथा धर्म के कारण मनुष्य सहजीवन नहीं बिता रहे हें । जाति - विद्वेष आजकल भारतीय सामाजिक चेतना को राख बना रहे हैं । इसलिए मैं जाति - पाँति से दूर रहकर स्वतंत्र जीवन बिताना चाहती हूँ ।''[50]

उप कुलपति भी उसे आशीर्वाद देते हुए कहते हैं -

''मैं विश्वास करता हूँ कि जाति - पाँति रहित समाज के निर्माण केलिए वर्तमान समाज सब कुछ जरूर तैयार करेगा । अगर मनुष्य जाति तथा धर्म के विरुद्ध खडा रहेगा तो मृत्यु के बाद मिलनेवाला स्वर्ग अभी पृथ्वी पर उनको जरूर मिलेगी । यही आशा करें । ''[51]

'जब्बु' कहानी में कोटी दलित है तो सत्यनारायण ब्राह्मण है । दोनों मित्र हैं और अध्यापक हैं । साल में दो बार परीक्षा पेपर्स जाँच करते समय विश्वविद्यालय में मिलते हैं ।

दोनों की पद्धतियाँ बिलकुल भिन्न हैं । जब कोटी सत्यनारायण को भोजन का निमंत्रण देता है तो वह इनकार करके चला जाता है । उसका उद्देश्य है कि वह ब्राह्मण है और एक दलित के घर भोजन कैसे करें । इसी विचार से वह अपना घर चला जाता है । लेकिन उसी दिन से अपने कार्य की याद करते हुए वह पछताने लगा । इसी चिंता से उसकी तंदुरुस्ती बिगड गयी । विषय जानकर जब कोटी उसे देखने आता है तो सत्यं उससे क्षमा - भिक्षा मांगकर, अपनी गल्ती को सुधारता है । इस प्रकार इनाक जी, इस कहानी में जाति - पाँति का खंडन करते हैं ।

इनाक जी की ' बोट्टु ' कहानी में मेरी, रमा दोस्त हैं । मेरी क्रिस्टियन है और रमा हिन्दू है । एक दिन जब वे नींद से उठे तो रमा के माथे पर बिंदी नहीं है और मेरी के माथे पर बिंदी है । कई दिन तक वे कालेज में ऐसे ही घूमते रहे । शिक्षा पूरी होने के बाद, रमा क्रिस्टियन से और मेरी हिन्दू से शादी करती हैं । रमा चर्च में जाती है तो मेरी मंदिर जाती है । इस प्रकार दोनों अपनी - अपनी जातियाँ बदल देती हैं । इनाक का उद्देश्य है कि दोनों जातियों में भेद नहीं है । अपनी जाति चुनने केलिए सब स्वतंत्र हैं । इसीलिए रमा और मेरी अपनी इच्छानुसार जातियाँ बदल दीं ।

' इदें न्यायं ' कहानी में राम शास्त्री ब्राह्मण है तो लता क्रिस्टियन है । दोनों एक - दूसरे से आकर्षित होकर, शादी करते हैं । लता, राम शास्त्री के इच्छानुसार तथा राम शास्त्री, लता के इच्छानुसार अपनी कुछ आदतें और पद्धतियाँ बदलते हैं । इसी संदर्भ में लेखक कहते हैं -

'' भ्रमर, और एक कीटक को लाकर भ्रमर बनाती है । यह एक तरह का न्याय है । क्या लता केलिए थोडा कीटक बनता है तो कीटक जैसी लता थोडा भ्रमर बनती है । यह कैसा न्याय है ? ''[53]

भिन्न - भिन्न जातियों की अपनी वेष - भूषा तथा आचार - व्यवहार होते हैं । फिर भी जब तक मन में मलिनता नहीं है, तब तक मानवता अपने लिए स्थान रखती है ।

4.1.3.2. *समानता :*

जयप्रकाश कर्दम एक सधे हुए कथाकार हैं । उन में धैर्य का ही नही, कहने का भी साहस है । उन्होंने सामाजिक समरसता की क्रांति की मशाल हो जलाए रखने में साहित्य के महत्व को आंकते हैं । 'जाति' सामाज का ऐसा मकडजाल है,जिस से निकल पाना असम्भव नहीं तो मुश्किल जरूर है । इस में घर - परिवार की अन्तरात्मा जकडी हुई नजर आती है । जाति और वर्ग भेद का नाग आज भी फन फैलाये बैठा है और अवसर पाते ही वह अपना जहर फैंकने लगता है । कर्दमजी ऐसे समाज की तलाश करते है, जहाँ जाति, ऊँच - नीच और शोषण रहित है ।

कर्दमजी की 'तलाश ' नामक कहानी का नायक रामवीर सिंह को केवल किराए के मकान की तलाश नहीं, बल्कि ऐसे घर की तालाश है, जहाँ अपनापन हो और ऐसे समाज की तालाश है जहाँ जाति का विभेद न हो । घर का मालिक गुप्ताजी रामवीर सिंह से कहते है कि चूहडी रामबती से खाना पकवाने से उन का रसोई धर अपवित्र हो जाएगा । अतः उनको मकान खाली करना चाहिए । गुप्ता के मुँह से यह बात सुनकर रामवीर सिंह सन्न रह गये । भेद भाव की इतनी दुर्गन्ध इन लोगों के मन में भरी हुई है । अतः वे गुप्ता से कहते है -

'' यदि यह बात है तो मैं आप का मकान खाली करने केलिए तैयार हूँ । लेकिन जातिगत भेद भाव के आधार पर मैं रामबती से खाना बनवाना बन्द कर देना तो छुवाछूत और जाति वाद के सामने हथियार डाल देना होगा, जो समाज का सबसे बडा दुश्मन है और जिस का विरोध मैं आज तक करता आया हूँ ।'' [54]

'मजदूर खाता 'कहानी में बैंक के अधिकारी रुपये लेने केलिए मजदूरों को शनिवार का दिन तय करते है, क्यों कि वे लोग गंदे रहते है और उनके कपडे मैले - कुचले और तेल - चीकट में सने होते है । इन के बैंक मे होने से बाकी कस्टमर, जो साफ - सुथरे कपडे पहन कर आते हैं ,असहज महसूस करते हैं । इसलिए मजदूर लोग शनिवार को ही आकर पैसे ल

सकते हैं । रामलाल का बच्चा बीमार है, उसे फौरन पैसे चाहिए । लेकिन बैंक के गलत नियमों से वह पैसा नहीं ले सकता तो उस का मालिक आकर बैंक वालों के नियमों का विरोध करते हुए कहता है -

''यह भेद - भाव तो गलत है । देश के सब नागरिक समान हैं । सब को समानता का अधिकार है । बैंक केलिए भी अब ग्राहक समान होने चाहिए । मजदूरों को उनके खाते में ट्रांजेक्शन करने से रोकना तो एकदम अमानवीय और संविधान का उल्लंघन है । '' [55]

सब नागरिकों के प्रति समानता की भावना रखना हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है । फाक्टरी का मालिक इसी पर जोर देते हुए बैंक के कर्मचारियों को धमकी देता है कि उच्च अधिकारियों को इस बात की जानकारी दी जाएगी क्यों कि एक मजदूर को इसप्रकार कोसना ठीक नहीं है ।

'मंदिर 'कहानी में रंगलाल यह मानता है कि सब लोगों केलिए एक ही मंदिर काफी हैं । हर एक कालनी में मंदिर के निर्माण करने की जरूरत नही । क्यों कि भगवान सब के लिए एक समान होता है । इसी बात का समर्थन करते हुए रंगलाल कहता है -

''मंदिर भगवान का होता है । भगवान की पूजा केलिए ही लोग मंदिर जाते है । यदि भगवान सब का है तो फिर इस में शर्म या भेद भाव की क्या बात है ? भगवान की पूजा किसी भी मंदिर में की जा सकती है । '' [56]

इस प्रकार कर्दमजी समानता पर बल देते है ।

इनाक जी भी समानता की भावना का समर्थन करते हैं । उनकी 'गुडि 'कहानी का मूर्ती, जाति विवक्षता का खंड़न करता है । अस्पृश्य केलिए मंदिर मे प्रवेश करना मना है । मूर्ती एक अधिकारी है वह कुलवृत्ति को गौरव दे कर सबको समान रूप से निम्न और उच्च वर्गों के लोगों को मंदिर में प्रवेश कराना चाहता है ।

'ताकट्टु' कहानी का ओबुलेसु दलित है और शास्त्री ब्राह्मण है । दोनों कलाशाला के

अध्यापक हैं और मित्र हैं । शास्त्री हमेशा कर्ज लेता रहता है, क्योंकि उसकी तनख्वाह घर के खर्च केलिए काफी नहीं है । एक दिन जब शास्त्री दस हजार रुपये कर्ज देने केलिए ओबुलेसु से मांगता है तो वह शास्त्री को मलजल धागे को धरोहर के रूप में रखने केलिए कहता है । वह धागा ब्राह्मणत्व का चिह्न है । अतः उसे निकालने केलिए शास्त्री हिचकिचाता है । ओबुलेसु कहता है -

'' अगर यह धागा तेरे पास नहीं है तो दोनों एक समान हो जाएँगे । हम दोनों में कोई अंतर नहीं होगा । दोनों भाई - भाई हो जाएँगे और दोनों की असमानताएँ समाप्त हो जायेंगी ।''[57]

यहाँ इनाक जी दलित और ब्राह्मण को एक - समान बनाना चाहते हैं । अगर ब्राह्मण के पास मलजल धागा नहीं है तो उसका ब्राह्मणत्व मिट जायेगा । इस प्रकार इनाक जी समानता पर जोर देते हैं । 'ऊरबावि' कहानी में चिदंबरं की पत्नी अनपढ थी । इसमें पूँजीपति से किये गये अन्याय, दलितों का शोषण, उन पर अधिकार जमाना आदि का वर्णन किया गया । इस सामाजिक समानता केलिए पुकार सुनायी पडती है । प्रो.आशा ज्योती कहती हैं -

'' समाज में दलितों के विद्रोह का कारण, सामाजिक असमानता है । जीना मानव का हक है । हवा, पानी आदि प्रकृति से दिये गये उपहार हैं । अतः सभी लोगों को उन पर समान अधिकार है । लेकिन आजकल कुछ बुजुर्गों के पास ये बंदी बन गये हैं । अतः अपनी जाति के लोगों का जो अन्याय हो रहा है, इसका तीव्र खंडन करके, अपने लोगों को न्याय पहुँचने केलिए एक दलित नारी का विद्रोह ही 'ऊरबावि' कहानी है ।''[58]

4.1.3.3. *धर्म के अंधानुकरण का विरोध :*

समाज में कुछ ऐसी कुरीतियाँ होती हैं, जिन का अनुसरण करने से समाज का नाश हो जाता है । कर्दम जी की 'तलाश' कहानी में रामबती अछूत समझी जानेवाली नारी है । जब रामवीर सिंह उससे खाना बनवाना चाहा तो घर का मालिक गुप्ता जी पसंद नहीं करते । उनका उद्देश्य है कि एक अछूत रसोईघर में प्रवेश करती तो उसका घर अपवित्र बन जाएगा।

इस प्रकार गुप्ता जी धर्म का अंधानुकरण करनेवाले आदमी है ।

'कामरेड का घर' कहानी में अभयतिवारी अपने को मार्क्सवादी कहने लगता है । लेकिन आचरण में धार्मिक पाखंडता दिखाता है । वह असलम के घर में चिकेन भी खाता है । पर जब असलम अभय तिवारी के घर आकर अंडे की सब्जी खाने केलिए तैयार होता है तो वह पसंद नही करता । वह एक ब्राह्मण है,जिस के घर में चिकेन या अंडे पकाते नहीं । बाहरी तौर पर मार्क्सवादी भावनाओं का समर्थन करता है और घर जाकर धार्मिक पाखंड का शिकारी बनता है । यही भावना व्यक्त करते हुए असलम ने कहा -

'यह तो छदुम है । इस तरह से तो तुम धार्मिक वाद को न केवल जिन्दा रखते हो,बल्कि उसे बढ़ावा देते हो । मार्क्सवाद तो हमें यह नहीं सिखाता । मार्क्सवाद तो हमें धार्मिकता से ऊपर उठने केलिए कहता है और फिर खान - पान का तो धर्म से वैसे भी कोई मतलब नहीं होना चाहिए । यह तो एक धार्मिक कट्टरपन और पाखंड है । ''[59]

यह कहकर असलम खाना छोडकर जाने लगता है तो सभी कामरेड उसे रोकने का प्रयत्न करते हैं तो असलम कहता है -

''किसलिए रुक जाऊँ मैं , क्या हिन्दुत्व को पानी देने केलिए ? मेरे यहाँ रुकने का कोई औचित्य नही है । मैं तो यह मानकर चल रहा था कि आप लोग सच्च में प्रगतिशील हैं और परिवर्तन के अपने संकल्प के प्रति ईमानदार है । इसलिए मैं आप लोगों के साथ जुडा था .... आप के सिद्दांत और व्यवहार के दोगलेपन ने मुझे निराश किया है । मैं इस दोगलेपन के साथ खडा नही रह सकता । '' [60]

इस प्रकार कर्दम जी धार्मिक पाखंडता का खंड़न करते है ।

इनाक जी की कहानी 'गुडि 'में वे यह निरूपित करने का प्रयत्न करते हैं कि भगवान के पास जाने केलिए निर्मल मन चाहिए । अगर गुंडे, बद्माश मंदिर में जाना गल्ती नहीं है तो चप्पल पहनकर जाने में भी कोई गल्ती नहीं है ।

4.1.3.4. *शोषितों ,पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति :*

डॉ. कर्दमजी और डॉ. इनाक जी दलित लेखक है दोनों ने शोषितों,पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की । क्यों कि दलित होने के नाते दोनों को अनेक अपमान भोगने पडे । अतः अपने ही अनुभवों को दोनों ने अपनी कहानीयों के माध्यम से व्यक्त किया । दोनों ने दलित चेतना पर जोर दिया ।

कर्दम जी की कहानियाँ केवल कहानियाँ ही नहीं है, बल्कि दलित आंदोलन के वैचारिक दस्तावेज हैं ।कर्दम जी की कहानी 'साँग' की नायिका चम्पा खेतीहर मजदूर है । साँग देखने केलिए जब उसकी सहेली शीला बुलाती है तो चंपा को अपने शोषित जीवन की याद आती है । थोडे समय केलिए मन तो खुश होता है , लेकिन उनके जीवन की पीडा तो कम नहीं होती । उसी की शब्दों में -

' जब कि हम यह जानते है कि पूरी जिन्दगी फिर वही पीडा, दर्द, दुःख, अभाव और रोना - झींकना है, यही हमारे जीवन का सच है । ''[61]

मालिक के कठोर व्यवहार से उसके पति की मृत्यु हो गयी । इसी की याद करके वह बहुत दुःखित होने लगी ।वह यही सोचने लगती है कि क्या शोषण ही दलितों का जीवन हैं ? इसका समाधान मालिक की हत्या करके वही देती है ।

' लाठी ' कहानी का हरिसिंह अहीर था और बदनी मढैया गाँव का जाट था । बदनी हरिसिंह के खेत को पानी न देकर जुल्म करता है और लाठी से उस के कमर पर मारता है । इस अन्याय पर हरिसिंह की पत्नी गालियाँ देती हुई कहती है -

''बदनी तेरा सत्यानाश होयेगा । तुझ पै ऐसी हाय पडैगी कि कोई दिया जलानेवाला भी नई बचैगा । जैसा तैने जुल्म करा है सत्यानासी, तुझकू इसकी सजा जरूर मिलैगी ।''[62]

इस में बदनी का स्वार्थ दिखाई पडता है । वह हरसिंह का शोषण करने लगता है, जिस से उसका खेत पानी से भरता नहीं ।

'सूरज' कहानी का नायक सूरज एक दलित छात्र है । दलित होने के नाते आत्म हत्या का नाटक रचाकर, उसकी हत्या की जाती है । लेकिन सुमन लता, सूरज का स्वभाव जानती है और कहती है कि वह आत्महत्या करने का कायर नही हैं । दलित छात्र जोश में भर कर, नारे लगाने लगे -

' दलित दमन की सत्ता है - मौत नही यह हत्या है । सूरज के हत्यारों को गिरफ्तार करो, गिरफ्तार करो । ''[63]

यहाँ एक दलित छात्र का दमन किया गया । आज भी कुछ कलाशालाओं मे या विश्वविद्यालयों मे दलितों का दमन प्रत्यक्ष रूप से देखा जा रहा है । यही भावना कर्दम जी भी व्यक्त करते है ।

'खरोंच' कहानी में जब रंगलाल दलित होकर कार खरीदता है तो दफ्तर के कुछ कर्मचारी ईर्ष्या से जलने लगते हैं । ईर्ष्या का फल यह निकला कि रंगलाल के नये कार पर खरोंच लग गये । पहले ही दिन खरोंच लग जाना पूरे दफ्तर में चर्चा का विषय बन गया । दफ्तर के कर्मचारियों में से कुछ सहानुभूतिपूर्ण देखने लगे तो कुछ कुटिल दृष्टि से । उनका विचार है कि दलितों केलिए संस्कार नहीं होता । यही भाव व्यक्त करते हुए एक कर्मचारी ने कहा -

'' तुम ठीक कहते हो । कार खरीद लेना ही सब कुछ नहीं होता । कार चलाने का संस्कार भी आना चाहिए । कहाँ से आएगा इन लोगो में वह संस्कार । '' [64]

'हाउसिंग सोसाइटी 'कहानी में भी एक दलित होने के कारण, विजय महतो को हाउसिंग सोसाइटी में मेंबरशिप नहीं मिलता । चाहे वह डिप्टी सेक्रेटरी है, फिर भी उसे फ्लैट नहीं मिलता ।सोसाइटी के अधिकारी दलितों पर विरोधी भावना व्यक्त करते हुए स्पष्ट कहते हैं -

''आप तो अच्छी तरह समझते है कि हमारा समाज कुछ अलग तरह का है और हमारी सामाजिकता और सामाजिक स्टेटस भी कुछ अलग तरह से निर्धारित होता है । मेरा मतलब ह

''सब सदस्य उच्च जातियों के हैं, जब कि आप ....। हमें तो इन बातों से कुछ लेना देना नहीं है, लेकिन फ्लैट बेचने हैं तो यह सब ऊँच - नीच देखनी पडती है । यदि आप को सोसाइटी का मेंबर बना लें तो सोसाइटी में इसका तीव्र विरोध होगा और हमारे बाकी फ्लैट भी नहीं बिक पायेंगे ।''[65]

'रास्ते' कहानी में दीपक के गाँव में दलितों का शोषण किया जा रहा है । पिता की मृत्यु होने के कारण, सारे परिवार का पोषण दीपक पर पडता है । इसलिए वह पढ़ाई छोडकर, गाँव जाकर, कुछ न कुछ काम करना चाहता है । उसके गाँव की स्थिति के बारे में कल्पना कहती है - ''गाँव के जिस जीवन को तुम दलितों केलिए नरक और शोषण का कारखाना मानते हो, वहाँ लौटकर तुम उसी नरक का हिस्सा बन जाओगे । उसी शोषण के कारखाने में पिसकर, खत्म हो जाओगे । '' [66]

कल्पना दीपक को सलाह देती है कि शहर में ही रहकर, पढ़ाई पूरा करे और कुछ न कुछ नौकरी पाकर, अपने परिवार का पोषण करे । पता चलता है कि गाँवों में दलितों का जीवन कैसा दुर्भर होता है ।

डॉ. इनाक जी ने अपनी कहानियों का प्रधान विषय शोषितों, पीडितों तथा दलितों का जीवन ले लिया । उनकी दयनीय स्थिति का वर्णन करने में वे सफल हुए । 'ऊरबावि ' कहानी में चिदंबरं पैरों को देखकर उसका पिता रामुडु उदास से हँसता है । क्योंकि वह अनेक लोगों केलिए चप्पल सिलाता है, लेकिन उसके पैरों में चप्पल नहीं । दलित अपने लिए कुछ नहीं करते ।

'अस्पृश्य गंगा' कहानी में विनायक एक दलित है । इसलिए उनके बच्चों को शास्त्री की पत्नी अंदर आने नहीं देती । पानी देकर, उस गिलास को दूर रखती है । इस प्रकार छोटी - छोटी बातों में भी अस्पृश्य होने का अपमान उनको सहना पडा । गोविन्द के श्रम का फल है, कुएँ का पानी । कुएँ खोदने में गोविन्द पसीना - पसीना हो गया । आखिर कुएँ से पानी

निकला । गोविन्द का जूठन विनायक पीने लगता है और कहता है -

''जूठन है तो क्या हुआ ? इसमें तेरा पसीना है, रक्त है और श्रम है,। पृथ्वी तो मिट्टी है लेकिन गंगा पवित्र है ।''[67]

ऐसा लगता है कि इनाक जी ने अपने जीवन को ही 'अस्पृश्य गंगा' कहानी में प्रस्तुत किया हो । उन्होंने अपने जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना किया था, उसी का जीता - जागता स्वरूप 'अस्पृश्य गंगा' में दिखाई पडता है ।

4.1.3.5. *सहयोग :*

'मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं । अतः एक -दूसरे का सहयोग देना अनिवार्य है । 'मजदूर खाता' कहानी में बैंक वालों ने एक नियम रखा कि मजदूर लोग शनिवार को ही बैंक से पैसे ले सकते है । इसका विरोध करते हुए रंगलाल का फाक्टरी मालिक अन्याय का विरोध करते हुए शाखा प्रबंधक को चेतावनी देते हुए कहता है -

''मै तो इसकी मदद करूँगा । अपने खाते से खुद पैसा निकालकर, इसको दूँगा, लेकिन आपकी शिकायत भी मैं आप के सी.एम.डी. और रिजर्व बैंक से जरूर करूँगा और मीडिया तक भी मैं यह बात जरूर पहुँचाऊँगा । एक राष्ट्रीकृत बैंक किस तरह देश के नागरिकों के साथ भेद भाव करता है । तब दीजिएगा आप जवाब .....बनाइएगा अपना बिजिनेस ।''[68]

'रास्ते' कहानी में कल्पना पारिवारिक समस्याओं के हल करने में दीपक का सहयोग देती है । वह सलाह देती है -

''अकेले संघर्ष करके टूट जाने से अपनों के सहयोग से संघर्ष करना बेहतर है । हमारे समाज को इसी सहयोग भावना की आवश्यकता है । समाज के बहुत सी प्रतिभाएँ सहयोग के अभाव में इसी प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों की भेंट चढ जाती है ।..... संघर्ष और जरूरत के समय मित्र सहयोग नहीं करेंगे तो और कौन करेगा । इसीलिए तुम मेरे सहयोग को मना मत करो । ..... छोटे से दबाव या भावुकता में आकर, अपने उज्वल भविष्य को

अभाव और शोषण की भट्टी में झोंकना अकलमंदी नहीं है । तुम्हारे साथ बहुत सारे लोगों का जीवन जुडा है । उनके साथ अन्याय मत करो ।''[69]

इस प्रकार कल्पना के सहयोग से दीपक को अपनी समस्याओं का परिष्कार मिल जाता है । यही सहयोग समाज में होना अनिवार्य है ।

4.1.3.6. *साहस व धैर्य :*

अन्याय का सामना करने केलिए साहस या धैर्य से काम लेना पडता है । 'साँग' कहानी की नायिका चम्पा और 'लाठी 'कहानी का फग्गन अन्याय के विरोध लडने में साहसपूर्ण कार्य करते हैं । चम्पा अपने मालिक को गंडासे से मार डालती है तो फग्गन दबंग जाट किसान बदनी को लाठी से मारता है । दलित तांगेवाला विश्वंभर, दलितों के खिलाफ जहर उगलनेवाले पंडित को बीच रोस्ते में ही तांगे से नीचे उतार देता है । इससे प्रमाणित होता है कि दलित अब जागृत हो रहे हैं और अब वे न तो शाब्दिक हिंसा बर्दाश्त करने को तैयार हैं और न शारीरिक हिंसा को ।

आजकल समाज में लडकी को जन्म देना एक साहसपूर्ण कार्य है । क्योंकि समाज में अधिकतर सास - ससुर लडकी नहीं चाहते । इसीलिए 'पिल्लनि कंटानु' कहानी में पति, सास और ससुर वैदेही को लडकी को जन्म देने केलिए मना करते हैं और उसे गर्भपात कराना चाहते हैं । लेकिन वैदेही, किसी से न डरकर, लडकी को जन्म देने का साहस पूर्ण निर्णय लेती है और धैर्य से सबका तिरस्कार करती है ।

'ट्रोफी' कहानी में आरती, चक्री के हाथों बलात्कार की जाती है और गर्भवती बनती है । चक्री उसे अपहरण करके, पलंग पर बाँधकर, उसका बलात्कार करता है । उसे अपने विजय पर गर्व है । क्योंकि आरती ने उसका प्रेम तिरस्कार करके, अपमानित किया था । इसलिए उसने अब उससे बदला ले लिया । जब वह आरती के हाथों को बंधन मुक्त करता है, तो आरती उसका गला घोंटकर मार डालती है । एक अबला होकर भी, साहस से एक पुरुष को मारकर,

वीर नारी साबित होती है । अपनी इच्छा के विरुद्ध वह गर्भवती बनती है । फिर भी धैर्य से कहती है -

''जो बच्चा जन्म लेनेवाला है,वह मेरे लिए ट्रोफी के बराबर है ।वह सिर्फ मेरा ही है ।''[70]

'कोलुपुलु' कहानी में दलित स्त्रियों की दुस्थिति का जीता - जागता वर्णन मिलता है । नल्लम्मा एक दलित नारी है । उसको गाँव का मुखिया नांचारय्या कुदृष्टि से देखने लगा । जब नल्लम्मा उसका तिरस्कार करती है तो नांचारय्या कहता है कि चाहे वह, अपनी कर्ज चुका दे या सबके सामने, अपने बेटे से ही स्वयं अपना बलात्कार करवाये । उसके अन्याय का सामना करनेवाला कोई नहीं है । इसलिए नल्लम्मा अपने बेटे को संकेत करती है कि कोलुपुलु के दिन जिस तरह मुर्गे का गला काटकर भगवान को बलि चढाया जाता है, उसी प्रकार नांचारय्या का गर्दन भी काटकर, भगवान को बलि चढा दे । बेटे के सहयोग से वह दुष्ट नांचारय्या को मार डालने में सफल हुई । इस प्रकार जब किसी से सहायता नहीं मिलती, तो स्त्री अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है । इस केलिए नल्लम्मा एक सच्चा सबूत है ।

4.1.3.7. *नारी संबंधी मूल्य :*

अन्याय का विरोध करना चाहती है तो नारी एक शक्ति बनकर अन्याय का विरोध कर सकती है । 'साँग' कहानी में दलित नारी चम्पा अपने पति की हत्या का बदला लेने केलिए मुखिया से विरोध करती है । जब मुखिया का हाथ चम्पा की ओर बढने लगा तो ओढने में से गंडासा पकडे, चम्पा के हाथ बाहर निकले और अगले ही क्षण मुखिया का सिर दो फाँक हो गया । अतः अगर नारी चाहती है तो किसी की परवाह नहीं करती ।

'मूवमेंट' कहानी का नायक सामाजिक कार्यों से प्रायः घर से बाहर ही रहता है और अपनी पत्नी तथा बच्चों को समय नहीं दे पाया । उसकी पत्नी सुनीता इस बात से बहुत नाराज हैं । वह अपने पति से पूछती है -

''क्या यही प्रगतिशीलता है तुम्हारी कि बाहर जाकर अन्याय और असमानता के खिलाफ भाषण झाझो और खुद घर में असमानता का व्यवहार करो । यही मूवमेंट है तुम्हारा ? ''[71]

सामाजिक कार्य करके, घर की उपेक्षा करनेवाले पुरुष को सुनीता की बातें सच्चा सबक सिखाती हैं । अगर पुरुष नारी को भी उन्नत स्थान देता है तो वह भी पुरुष के हर काम में सहचरी बनेगी । अतः पुरुष को नारी का महत्व जानकर, अपने सामाजिक कार्यों में उसे भी भागीदार बनाना चाहिए । तब उसे हर एक काम में सफलता मिलेगी ।

'बिट्टन मर गयी' कहानी में जाति के दलित होने के कारण बिट्टन, अपने पति के पास नहीं भेजी जाती । वह अपने माता - पिता से सवाल करती है कि गल्ती उनकी है या आप लोगों की ? पर सजा तो मुझे मिल रही है न ? मेरी गल्ती क्या है ? बिट्टन के बारे में विकास सोचने लगता है -

'' उसे थोडा साहस करना चाहिए । या तो माँ - बाप की परवाह छोड, वह पति के साथ चली जाय या फिर खुद पहल करके, कोई दूसरे जीवन साथी को तलाश कर अपनी दुनिया को बसा ले । वह पढी - लिखी है । उसे अपने जीवन को माँ - बाप की संकीर्ण मानसिकता की भेंट नहीं चढने देना चाहिए ।''[72]

विकास की इच्छा के अनुसार बिट्टन तो अपने लिए दूसरे जीवन साथी को तो चुनकर उसके साथ चली जाती है । लेकिन वह अपने जीवन में सफल नहीं बन सकी और जलकर मर गयी । आजकल समाज में अनेक नारियों का जीवन पुरुष के अहंकार के सामने बलि हो रहा है । इसके विरुद्ध लडना नितांत आवश्यक है

आज की नारी अबला नहीं सबला है । इस केलिए एक अच्छा उदाहरण इनाक जी की कहानी 'ऊरबावि ' का नारी पात्र चिदंबरं की पत्नी । इस कहानी में दलितों की हीन स्थिति और सवर्णों की उच्च स्थिति से चिदंबरं की पत्नी आगबबूला होती है । गाँव में एक ही कुआँ, जो

सवर्णों केलिए ही है । अगर कोई दलित पानी चाहता है तो कोई सवर्ण की दया से ही प्राप्त कर सकता है । अतः दलितों की स्थिति को उद्धार करने केलिए किसी ने बैल का कलेवर कुआँ में डाल देता है । उसे बाहर निकालने में कोई पुरुष आगे नहीं बढता ।केवल चिदंबरं की पत्नी धीरज से उस शव को बाहर निकालती है और कलुषित पानी निकालकर, दलितों केलिए पीने के पानी का इंतजाम करती है । इस प्रकार ऊरबावि अब सवर्णों की नहीं, बल्कि दलितों की बन गयी ।

कुआँ समाज है तो कलेवर कलुषित सामाजिक व्यवस्था है । इसके उद्धार केलिए पुरुष असफल हुए तो एक नारी सफल बनती है ।

इनाक जी नारी केलिए उन्नत स्थान देते हैं । 'गम्यं ' कहानी में नागम्मा अशिक्षित है और गँवारी है । अतः उसका पति नागि रेड्डी रमा नामक युवती से दूसरी शादी करता है , जो पढी - लिखी है,नौकरी करती है और पति का पोषण स्वयं करती है । नागिरेड्डी दोनों पत्नियों को समान रूप से नहीं देखता । रमा केलिए बेटा है तो नागम्मा की बटी है । बच्चों के देखभाल करने में भी नागिरेड्डी असमानता का व्यवहार करता है । नागम्मा जानती है कि इन असमानताओं का कारण उस को अशिक्षित होना ही है । अतः वह पति को छोड कर, बच्ची को लेकर कालेज में पढने केलिए आगे बढती है और अपने भविष्य - पथ का निर्णय स्वयं करती है ।

'विमुक्ति ' कहानी में रामप्पा नामक राजनीतिज्ञ राजू की पत्नी सीता का अपहरण करके बलात्कार करता है ।जब राजू अपहरण की बात कहकर सब की सहायता माँगता है तो रामप्पा की क्रूरता जानकर कोई उसकी सहयता नहीं करता । अंत में सीता अकलमंदी से उपाय सोचकर, प्रेम का नाटक खेल कर नागिरेड्डी का अन्त कर देती है । यहाँ लेखक यह कहना चाहते है कि हर एक नारी को अपनी समस्या का परिष्कार स्वयं करना है । किसी केलिए इंतजार करना नहीं चाहिए । श्रीमती. ए.भारतम्मा का कथन है -

''कोई आएगा और सहायता करेगा - एसे विचार से नारी का इन्तजार करना

आजकल के समाज में ठीक नहीं है । अत्याचार तथा अन्याय से वंचित नारी अपने ही शक्ति - सामर्थ्य से समस्या का सुझाव प्रस्तुत करना 'विमुक्ति ' कहानी का उद्देश्य है । अगर नारी चाहती है तो पुरूष कितना भी बलवान हो या अहंकारी हो उसका प्रतिरोध कर सकती है और अपनी समस्या का समाधान स्वयं बताती है ।''[73]

नारी को अत्युन्नत स्थान देना ही 'विमुक्ति 'कहानी के लेखक इनाक जी का लक्ष्य है ।

एक दलित युवती से प्रेम का नाटक खेल कर तीन साल शारीरिक - सुख भोग कर बाद में बडों की अनुमति से शादी केलिए तैयार हुए एक युवक की कहानी है - 'विपर्यय ' ।

जब योगी अपनी विवाह पत्रिका और नींद की गोलियाँ सुनिता को देकर कहता है -

'' चाहे शादी में आये या गोलियाँ खाकर मर जावे ।''[74]

योगी कहता है कि एक दलित युकती को छूकर उसने एक महान कार्य किया । सुनीता अकेली है और अपनी स्थिति से बहुत दुखित है । लेकिन अंत मे वह योगी को विवाह पत्रिका और नींद की गोलियाँ वापस देकर कहती है कि शादी करो या गोलियाँ खाकर मर जाओ । पहले तो सुनिता गोलियाँ खाकर मर जाना चाहती है । लेकिन अंत मे नींद की गोलियाँ योगी को भी देकर कहती है -

''तुम मुझे मत छुओ क्यों कि तुम अछूत हो '' । [75]

अगर एक प्रेमी धोखा देता है तो उस केलिए प्राण - त्याग करना मानव जन्म केलिए भी अपमान है । यही सोच कर, सुनीता योगी का तिरस्कार करती है । अग्रवर्णवाले होकर भी योगी अछूत के बराबर है ।

'मल्ले मोग्गा'कहानी में कुसुमा एक बाल विधवा है । पत्नी की मृत्यु के बाद सुन्दर्राव , कुसुमा के सिर में फूल रखकर, उसे एक नया जीवन प्रदान करता है । इस प्रकार इनाक जी, इस कहानी में एक विधवा के कली रूपी जीवन को फूल बनकर विकसित होने पर जोर देते हैं ।

' ऊर बावि' कहानी में चिदंबरं की पत्नी, पानी केलिए कुएँ के पास जाती है तो एक उच्च जाति का युवक उसका निरादर करता है तो धीरज से उसका सामना करती है । गाँव का मुखिया, जब अपने पति और ससुर को खूब पीटता है तो वह मुखिया का हाथ फाडकर, पलंग से बाँधती है । इस प्रकार वह अन्याय के विरुद्ध आत्म विश्वास से लडती है तथा किसी से नहीं डरती । शहर के लोग जब दलितों का शोषण करते हैं तो उसका भी विरोध करती है । रेल - स्टेषन को बेंच पर, सवर्णों के साथ दलितों को भी बैठने का अवसर प्रदान करती है । कुएँ के पानी केलिए गाँव के मुखिया से भी संघर्ष करती है । कुएँ से बैल का कलेवर बाहर खींचने में पुरुषों से भी आगे बढकर, सफल होती है । कह सकते हैं कि इनाक जी की कहानी, 'ऊरबावि' नारी - शक्ति का सच्चा सबूत है ।

4.1.4. *उपसंहार :*

साहित्य समाज का प्रतिबिंब माना जाता है । समाज की सारी परिस्थितियाँ साहित्य में दिखायी पडती हैं । साहित्यकार अपनी रचनाओं के द्वारा समाज की परिस्थितियों के वर्णन करने के साथ - साथ, समाज को संदेश भी देना चाहता है । ऐसे लेखकों में दलित चेतना से ओतप्रोत लेखक हैं - डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक । हिन्दी साहित्य में कर्दम जी और तेलुगु साहित्य में इनाक जी का स्थान बेजोड है । डॉ. सुनील बनसोडे का कथन है -

'' जयप्रकाश कर्दम के साहित्य की माँग विश्व दृष्टि, जाति - भेद का त्याग, उदात्त आदर्श भाव तथा आदर्श जीवन का निर्माण करना है और सम्पूर्ण मानव जाति को सत्य के प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर करना है ।''[76]

डॉ. कोलकलूरि इनाक जी ने समाज को अपने जीवनानुभव से ही नहीं, बल्कि वर्ग रहित, जाति रहित समाज केलिए भी कथा रचना की । शोषण तथा पीडा के विरुद्ध दलितों को जागृत करना ही उनकी कहानियों का लक्ष्य है । डॉ. सिम्मन्ना के अनुसार -

''डॉ.इनाक के साहित्य रूपी समुन्दर में साहस से कूदकर, गहराई में खोजने से हजारों अमूल्य रत्न हमें प्राप्त होते हैं । ''[77]

समाज का विकास तभी होता है, जब उसमें कतिपय मूल्य होते हैं । आजकल समाज में मूल्यों का विघटन अधिक दिखायी पड रहा है । अतः समाज को जागृत करने केलिए डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ.कोलकलूरि इनाक जी ने अपनी कहानियों में अनेक सामाजिक मूल्यों का वर्णन किया, जिनको अपनाना हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है ।

सामाजिक मूल्य व्यष्टि तथा समष्टि - दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं । निर्भीकता, आत्मपर्यालोचन, विनम्रता, तेजस्विता, उद्यमशीलता, एक निष्ठा, स्वाभिमान आदि वैयक्तिक मूल्य हैं, जिनको हर एक व्यक्ति को अपनाना चाहिए । मूल्यों के बिना जीवन सफल नहीं बनता और समाज में ऐसे लोगों केलिए स्थान भी असाध्य है । व्यष्टि जब समष्टि का रूप धारण करता है, वही समाज के रूप में बदल जाता है । समष्टिगत मूल्यों के अंतर्गत पारिवारिक मूल्य तथा समष्टिगत सामाजिक मूल्य आते हैं ।

परिवार, समाज का ही महत्वपूर्ण इकाई है । इसमें माता - पिता, पति - पत्नी और संतान होते हैं । पर हर एक केलिए कुछ मूल्य निर्धारित किये गये । परिवार में जब हर एक अपने - अपने मूल्यों का अनुसरण करते हैं तो वह परिवार आनंदमय बनता है । समष्टिगत सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत वर्ण - व्यवस्था या जातिवाद का खंडन किया गया है । समाज में उच्च - नीच के रूप में जो भेद - भाव है, उसका अंत होने से ही सामाजिक जीवन सार्थक बनता है । एक - दूसरे के प्रति समानता की भावना जागृत होने से ही सामाजिक असमानताएँ दूर होती हैं और सम - समाज का निर्माण हो सकता है । धर्म का अंधानुकरण भी कम होना चाहिए । समाज में आज भी कुछ ऐसे लोग हैं, जिनको दलित या अस्पृश्य नाम से पुकारा जाता है । अस्पृश्यता मानवतावाद केलिए शाप जैसा है । अतः जब शोषितों, पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं तो सामाजिक असमानता जरूर दूर हो जाएगी । इसके साथ

साथ आपसी सहयोग तथा साहस व धैर्य भी अनिवार्य है । साहस के साथ आगे बढने से सफलता जरूर मिलेगी ।

नारी एक महान शक्ति के बराबर है । आज की नारी अबला नहीं, सबला है । पुरुषों से आगे, आज नारी सभी रंगों में आगे बढ रही है । नारी केलिए भी कुछ मूल्य होते हैं, जो सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत आते हैं ।

डॉ.कर्दम और डॉ. इनाक - दोनों दलित लेखक हैं ।दोनों की पारिवारिक परिस्थितियाँ तथा सामाजिक परिस्थितियाँ एक जैसी हैं । दोनों के विचार भी एक - जैसे हैं । अम्बेड्कर वाद के समर्थक हैं । अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने कतिपय मूल्यों को व्यक्त करने में सफल हुए । वैयक्तिक, पारिवारिक तथा समष्टिगत सामाजिक मूल्यों पर प्रकाश डालकर, दोनों ने समाज को मूल्यों का सबक सिखाया, जो आधुनिक समाज केलिए नितांत आवश्यक है । जहाँ भी देखो, मूल्यों का विघटन देखा जा रहा है । अगर यह स्थिति ऐसे ही आगे बढती है तो वह दिन दूर नहीं कि मूल्य - रहित समाज हमारे सामने खडा हो जाएगा । अतः कर्दम जी तथा इनाक जी जैसे लेखक साहित्य के माध्यम से समाज को उत्तम मार्ग पर चलने केलिए जागृत कर रहे हैं । अपने - अपने कार्य में दोनों सफल सिद्ध हुए ।

संदर्भ - सूची

1. कथा रचइतल्लो आदर्श प्रायुडु कोलकलूरि - ताल्लूरि लाबन बाबू
   आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं -संपादक - आर. चन्द्रशेखर रेड्डी पृ. 6
2. सूरज (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 8
3. वही - पृ. 13
4. छिपकली (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 22
5. मानिटर (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 72
6. जहर (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 113
7. वही - पृ. 114
8. मंदिर (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 113
9 वही - पृ. 114
10. पल्लनि कन्टानु (कट्टडि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 108
11. कोलकलूरि कोरिन सामाजिक मार्पु - डॉ.बी. नारायण
   आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं -संपादक - आर. चन्द्रशेखर रेड्डी पृ.135
12. पेन्शन (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 32
13. मंगलसूत्र (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 105
14. कुलवृत्ति (कोलुपुलु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 101
15. वही - पृ. 102
16. मंदिर (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 110
17. वही - पृ. 111
18. वही - पृ. 111

19. पादपूजा (कट्टडि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 72

20. वही - पृ. 76

21.मजदूर खाता (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 53

22. तलाश (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 28

23. ऊरबावि (ऊरबावि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 28

24. वही - पृ. 29

25. हाउसिंग सोसाइटी (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 46

26. विघ्न विनायकुडु (कोलुपुलु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 72

27. लाठी (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 96

28. प्रेम स्पर्श (कोलुपुलु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 85

29. सूरज (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 13

30. रास्ते (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 66

31. बर्त सर्टिफिकेट (कोलुपुलु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 185

32. पगडी (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 90

33. गृह हिंसा (काकि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 77

34. मजदूर खाता (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 47

35. कामरेड का घर (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 118

36. नो बार (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 41

37. बिट्टन मर गयी (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 73

38. वही - पृ. 78

39. कोलुपुलु (कोलुपुलु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 117

40. दैन्यं लेनि जीवितं (कट्टडि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 209

41. नो बार (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 39

42. रास्ते (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 63

43. दैन्यं लेनि जीवितं (कट्टडि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 211

44. नो बार (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 37

45. बिट्टन मर गयी (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 78

46. जहर (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 114

47. हाउसिंग सोसाइटी (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 45

48. गोष्ठी (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 80

49. वही - पृ. 82

50. कोलेरा (काकि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 151

51. वही - पृ. 152

52. बोट्टु (अस्पृश्य गंगा - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 126

53. इदें न्यायं (सूर्युडु तलेत्ताडु - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 35

54. तलाश (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 28

55. मजदूर खाता (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 52

56. मंदिर (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 109

57. ताकट्टु (अस्पृश्य गंगा - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 41

58. साहित्य समालोचना - डॉ. आशा ज्योती पृ. 79

59. कामरेड का घर (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 121

60. वही - पृ. 122

61. साँग (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 31

62.लाठी (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 97

63. सूरज (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 16

64. खरोंच (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 29

65.हाउसिंग सोसाइटी (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 45

66. रास्ते (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 64

67. अस्पृश्य गंगा (अस्पृश्य गंगा - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 220

68. मजदूर खाता (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 53

69. रास्ते (खरोंच - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 66

70. ट्रोफी (कट्टुडि - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 33

71. मूवमेंट (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 88

72. बिट्टन मर गयी (तलाश - कथा संग्रह) - डॉ. जय प्रकाश कर्दम पृ. 76

73. आचार्य कोलकलूरि इनाक गारि कथलु - स्त्री वाद दृक्पथं - श्रीमती. ए.भारतम्मा
आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं -संपादक - आर. चन्द्रशेखर रेड्डि पृ. 36

74. विपर्ययं (अस्पृश्य गंगा - कथा संग्पह) डॉ. कोलकलूरि इनाक - पृ. 109

75. वही - पृ. 110

76. कवि जय प्रकाश कर्दम - एक अध्ययन - डॉ.सुनील बनसोडे पृ. 9

77. तेलुगु कथानिका साहित्यंलो आचार्य कोलकलूरि इनाक स्थानं - डॉ. वी.सिम्मन्ना
आचार्य इनाक जा का षष्टि पूर्ति संचिका - पृ. 110

****

पाँचवाँ अध्याय

उपसंहार

पाँचवाँ अध्याय

उपसंहार

आज साहित्य के क्षेत्र में तुलनात्मक अनुसंधान का विशेष महत्व है, क्योंकि तुलना से साहित्य खरा उतरता है । तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा ज्ञानवर्द्धन के साथ - साथ विभिन्न समाजों और संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त होता है । दो भिन्न भाषाई प्रदेशों के साहित्य की तुलना करने से वहाँ की सामाजिक गतिविधियाँ, भौगोलिक वातावरण, सांस्कृतिक परिवेश एवं जीवन शैली का आदान - प्रदान संभव होता है । ज्ञान - वृद्धि, सुख समृद्धि, उच्चतर मानवीय मूल्यों की स्थापना आदि तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा ही संभव है ।

मनुष्य हमेशा दूसरों के साथ मिलकर जीना चाहता है । समाज अचेतन पदार्थों से नहीं, बल्कि चेतन पदार्थों से युक्त रहता है । अतः व्यक्ति समाज का अंग है और वही समाज का निर्माता भी है । जब तक व्यक्ति की वैयक्तिकता, सदाचार के साँचे में ढलकर, जीवन की गति का निर्माण नहीं करती है, तब तक समाज अथवा राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं ।

समाज और साहित्य अन्योन्याश्रित हैं । समाज में घटनेवाली घटनाओं का प्रतिरूप ही साहित्य में दिखायी पडता है । समष्टिगत चेतना से ही साहित्य का उपज होता है । अतः साहित्य और समाज का संबंध अटूट है । साहित्य एक ओर समाज से प्रभावित होकर, उसे प्रतिबिंबित करता है तो दूसरी ओर समाज को बदलने तथा संशोधित करने में सहायक होता है ।

साहित्य का सृजन करनेवाला ही साहित्यकार है । उसका जन्म, विकास और अंत समाज में ही होता है । मानव चेतना की परिष्कृत अनुभूतियों की वाणी साहित्य है । अतः

समाज का यथार्थ और सशक्त चित्रण साहित्य के द्वारा ही संभव है । समाज का सबसे अधिक संवेदनशील व्यक्ति साहित्यकार है । लेखक पहले समाज के स्पंदन आत्मसात करके अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को प्रतिस्पंदित करता है । इस प्रकार समाज, साहित्य और लेखक एक - दूसरे से निरंतर प्रभावित, संशोधित और परिवर्तित होते रहते हैं ।

समाज वह संस्था है, जहाँ व्यक्ति सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेशों से प्रभावित होकर,अपने जीवन - यापन की शैली को निश्चित करता है । समाज में व्यक्ति को चन्द नियमों, मर्यादाओं एवं सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का अनुसरण करना आवश्यक है । साहित्यकार भी समाज का सदस्य एवं भोक्ता है, अतः वे अपने अनुभवों के जरिए अपने समय के सामाजिक गतिविधियों एवं जीवन शैलियों को अपने साहित्य के माध्यम से प्रतिबिंबित करते हैं ।

किसी साहित्यकार के निर्माण में उसके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । जीवन के व्यापक क्षेत्र में केवल वे व्यक्ति महत्ता पा सके हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से, अपने जीवन का उन्नयन किया है । प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में डॉ. जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक के कथा -साहित्य की तुलना की गयी है । कर्दम जी, हिन्दी साहित्य के प्रमुख दलित लेखक हैं तो कोलकलूरि इनाक तेलुगु साहित्य के प्रमुख दलित लेखक हैं । दोनों दलित होने के कारण बचपन में अनेक कष्टों का तथा अपमानों का सामना करना पडा । दोनों की पारिवारिक परिस्थितियाँ भी एक जैसी थीं । छोटी ही उम्र में दोनों पिता से वंचित हुए । अतः दोनों को पारिवारिक बोझ उठाना पडा । इस प्रकार बचपन की परिस्थितियों के प्रभाव से दोनों ने दलित,शोषित या पीडितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त किया । दोनों लेखकों ने जिन परिस्थितियों का सामना किया, उनका जीता - जागता वर्णन अपनी कहानियों में किया । उन्होंने अपनी

कहानियों के माध्यम से दलितों की स्थिति, आक्रोश आदि का वर्णन करते हुए उनमें चेतना की भावना प्रज्वलित होने का प्रयत्न किया । दलितों के उद्धार केलिए कर्दम जी और इनाक जी अपने जीवन में अधिक समय लगाए । कर्दम जी 'दलित वार्षिकी ' पत्रिका के द्वारा अनेक लेखकों के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं ।

कर्दम जी अब केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक के पद पर आसीन हैं तो इनाक जी एक अध्यापक,आचार्य तथा उप - कुलपति जैसे उन्नत पदों से अलंकृत होकर, समाज को अनवरत सेवाएँ प्रस्तुत करके, अब विश्रांत जीवन बिता रहे हैं । विद्यार्थियों के भविष्य केलिए इनाक जी ने अनेक कार्यक्रम किये । दोनों लेखकों ने अनेक उपाधियों से गौरवान्वित किये गये । इनाक जी 'पद्मश्री 'उपाधि से पुरस्कृत हुए तो कर्दम जी 'राहुल सांकृत्यायन 'पुरस्कार से सम्मानित हुए । समाज केलिए दोनों का कार्य प्रशंसनीय हैं । उन दोनों की कहानियाँ दलित चेतना से ओतप्रोत हैं और दलित ही उनकी कहानियों के प्रधान पात्र हैं । एक लेखक हिन्दी की तथा दूसरा तेलुगु की कीर्ति पताका साहित्य गगन में फहरानेवाले बहुमुख प्रतिभाशाली लेखक हैं ।

कर्दम जी के साहित्य - सृजन का प्रधान आधार, बाबा साहेब अम्बेडकर के विचार हैं । उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक जागृति के प्रगतिशील विचारधारा को प्रवाहित किया । सच्चाई पर जोर देकर, समाज के सामने प्रस्तुत करने केलिए खुली आंखों से देखा और तदनुरूप अभिव्यक्त किया । उन्होंने आत्म विश्वास, कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी से रहना सफलता के सोपान समझते हैं । इक्कीसवीं सदी के दलित लेखकों में कर्दम जी केलिए महत्वपूर्ण स्थान है ।

पद्मश्री इनाक जी सामाजिक दृष्टि रखनेवाले महान व्यक्तित्व हैं । उनके व्यक्तित्व में

जो मोहकता रही है, वह हर किसी को सहज ही आकृष्ट कर लेती है । वे अत्यंत सरल, स्पष्टवादी तथा प्रदर्शन से रहित खुले विचार के व्यक्ति हैं ।

मानव जीवन को सही रास्ते पर ले जानेवाले ही हैं मूल्य । अगर मानव सुख पूर्ण और आनंदमय जीवन जीना चाहता है तो कतिपय मूल्यों का होना अनिवार्य है, नहीं ता उसका जीवन अस्तव्यस्त बन जाता है । अतः मानव जीवन में मूल्यों केलिए अत्यधिक स्थान है । लेकिन आजकल समाज में मूल्य हीनता नजर आती है और मूल्यों का विघात हो रहा है । आजकल के समाज केलिए मूल्यों की याद करना अनिवार्य सिद्ध हो रहा है । समाज को अच्छे मार्ग दिखाने केलिए तथा मूल्यों से विघटित अव्यवस्थित समाज की श्रीवृद्धि केलिए दोनों लेखकों का प्रयत्न सफल सिद्ध हुआ । इस लघु - शोध - प्रबंध का प्रधान लश्य , समाज को इन मूल्यों से अवगत कराना ही है ।

एक व्यक्ति को अपने जीवन में सफलता पाना है तो उसे निर्भयता, तेजस्विता, विनम्रता, आत्मपर्यालोचन, उद्यमशीलता, एकनिष्ठा, स्वाभिमान, कृतज्ञता आदि मूल्यों को अपनाना चाहिए । दोनों लेखकों ने दलितों के जीवन को आधार बनाकर, इन वैयक्तिक मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए, अपनी कहानियों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन को सफल बनाना चाहता है तो उसे उपर्युक्त मूल्यों को आत्मसात करके आगे बढना चाहिए । तभी वह अपना जीवन - लक्ष्य प्राप्त कर सकता है । 'सूरज' कहानी का नायक सूरज, निर्भय होकर, सवर्ण छात्रों को ईंट का जवाब पत्थर से देता है । फिर भी अंत में वह अन्याय का प्रहार बन जाता है और सवर्णों के हाथ उसकी मृत्यु हो जाती है । इस कहानी के द्वारा कर्दम जी यह साबित करना चाहते हैं कि चाहे जितना भी प्रयत्न करें, आज भी समाज में कुछ दलित कुचले जा रहे हैं । फिर भी धीरज बाँधने के उद्देश्य से कर्दम जी ने ऐसे पात्रों का

भी चित्रण किया, जिनसे दलित युवक प्रेरणा पा सके । 'मानिटर' कहानी का सतीश निर्भय होकर, अपना कर्तव्य निभाता है और 'जहर' कहानी का विश्वंभर भी दलितों के प्रति घृणा व्यक्त करनेवाले पंडित को निडरता से अपने तांगे से उतारकर, अपनी जाति के प्रति प्रेम व्यक्त करता है ।

इनाक जी की कहानी 'कोलुपुलु' में छोटा बालक पोतुराजू धीरज से अन्याय का विरोध करता है और दुष्ट नांचारय्या को मारकर, अपनी माँ की इज्जत बचाता है । आजकल के समाज में लडकी को जन्म देना साहस पूर्ण कार्य है । 'पिल्लनि कंटानु' कहानी की वैदेही गर्भ विच्छिति को रोकने केलिए पति, सास और ससुर को धिक्कार करती है और निर्भय होकर, लडकी को जन्म देने केलिए तैयार होती है ।

आत्मपर्यालोचन, एक ऐसा मूल्य है कि जिससे बुरा व्यक्ति अच्छा बन जाता है । 'पेंशन' कहानी का अविनाश, अपनी दादी को मार डालकर, उसकी अंगूठी को फ्रिज में छिपाकर रखता है, जिससे दादी का हस्ताक्षर लगाकर, उसका पेंशन ले ले । आजकल के अनेक युवक पथ - भ्रष्ट हो रहे हैं । इसीलिए कर्दम जी आत्मपर्यालोचन पर जोर देते हुए स्पष्ट करते हैं कि जब व्यक्ति अपना आत्मपर्यालोचन करता है तो जरूर वह उत्तम मार्ग पर जा सकता है । 'पेंशन' कहानी के अंत में अविनाश अपनी गल्ती स्वयं स्वीकार करता है और पुलिस के सामने सच बता देता है । इनाक जी अपनी कहानी 'कुलवृत्ति' में बताते हैं कि अगर एक दुष्ट, हत्यारा आदि मंदिर में जा सकता है तो चप्पल पहनकर मंदिर में जाना दोष नहीं है । अगर मन पवित्र रहता है तो चप्पल पहनकर, मंदिर में प्रवेश करना ठीक नहीं है ।

परिवार रूपी गाडी के दो पहिये हैं - पति - पत्नी । पारिवारिक जीवन में सफल बनने केलिए पति - पत्नी को एक - दूसरे के प्रति प्रेम रखना चाहिए । आधुनिक समाज में जो परिवर्तन

आ रहे हैं, उनको स्वीकार करना पति - पत्नी का कर्तव्य है । कर्दम जी के अनुसार, परिवार का देखबाल करनेवाला ही घर का मुखिया बन सकता है, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री हो । 'पगडी कहानी की सरबतिया को परिवार का मुखिया स्वीकार किया जाता है और मूल्यों से वंचित पति को नहीं । इनाक जी की 'रुचि' कहानी में सुंदर और सुधा एक - दूसरे की इच्छाओं की पूर्ति केलिए आदर्श पति - पत्नी के रूप में चित्रित किये गये । 'गृह हिंसा' कहानी में पत्नी के प्रति अति - प्रेम व्यक्त करना गृहहिंसा के बराबर बताया गया ।

आजकल समाज पर विदेशी सभ्यता का सवार खडा हुआ है । इसी का जीता - जागता व्यक्तित्व हैं, 'मंगलसूत्र' कहानी की सुगुणा और 'जरूरत' कहानी की संगीता । लेकिन अंत में कर्दम जी यह सूचित करते हैं कि आजकल समाज में 'सेक्स' भी एक जरूरत है और युवा पीढी को इसके प्रति जानकारी भी अनिवार्य है । इनाक जी भी अपनी कहानी 'मार्पु 'में इस बात का समर्थन करते हैं कि आजकल की युवा पीढी को बुरे मार्ग पर जाने से रोकना है तो उनको लिंग - शिक्षा मिलना जरूरी है ।

कर्दम जी और इनाक जी अपनी कहानियों में जाति - पाँति का तीव्र खंडन किया । कर्दम जी की कहानी 'नो बार' कहानी में मैट्रिमोनियल में 'नो बार' लिखकर जाति - पाँति का खंडन करते हैं । लेकिन जब पिता को मालूम होता है कि लडका दलित है, तो वह अपनी बेटी की शादी एक दलित से करना, ठीक नहीं समझते । इस प्रकार आजकल समाज में कथनी और करनी में बहुत अंतर दिखायी पडता है । 'बिट्टन मर गयी' कहानी में भी बिट्टन का पति दलित होने के कारण, बिट्टन का जीवन बरबाद हो जाता है । 'मोहरे' कहानी के सत्य प्रकाश और 'खरोंच' कहानी के रंगलाल को भी दलित होने के नाते, अनेक अपमानों का सामना करना पडा । 'हाउसिंग सोसाइटी' कहानी में एक दलित को सोसाइटी का मेंबर स्वीकार करने

केलिए इनकार करते हैं तो 'मजदूर खाता' कहानी में मजदूरों केलिए ही शनिवार का दिन तय करके, बैंकवाले उनके प्रति अन्याय करते हैं ।

इनाक जी की कहानी 'कालेरा' कहानी में सुमिता जाति - पाँति से दूर ऐसा जीवन बिताना चाहती है, कि जहाँ जाति - भेद न हो । वह जाति - पाँति रहित समाज की आशा करती है । 'बोट्टु' कहानी में मेरी और रमा अपना - अपनी जातियाँ बदलकर, समाज में यह निरूपित करते हैं कि जातियों में कोई भेद नहीं है । ' इदें न्यायं ' कहानी में एक ब्राह्मण और एक क्रिस्टियन आपस में शादी करके, जाति - पाँति का खंडन करते हैं । इस प्रकार दोनों लेखकों ने जाति - भेद को मिटाकर, सामाजिक समानता की स्थापना करना चाहते हैं ।

कर्दम जी और इनाक जी ने नारी केलिए उन्नत स्थान प्रदान किया । कर्दम जी की कहानी 'साँग' में दलित नारी चंपा, मुखिया को मारकर, अपने पति के प्रति मुखिया के हमले का बदला लेती है । 'मूवमेंट' कहानी की सुनीता, नारी अस्मिता केलिए तडपती है और अपने पति को अपनी गल्ती की जानकारी देती हुई कहती है कि मूवमेंट पहले अपने घर से सी शुरू होनी चाहिए ।

इनाक जी की कहानी 'मल्ले मोग्गा' में बाल विधवा की कली रूपी जीवन फूल बनकर, विकसित हुआ । ' ऊरबावि ' कहानी में चिदंबरं की पत्नी, अपने जातिवालों को पानी दिलाने केलिए, पुरुषों से भी आगे बढकर, काम करती है । ' गम्यं ' कहानी में अशिक्षित नागम्मा अपने जीवन को सार्थक बनाने केलिए आत्म - निर्भरता से आगे बढकर, शिक्षित होना चाहती है । ' पिल्लनि कन्टानु ' कहानी की वैदेही लडकी को जन्म देने केलिए अपने पति, सास और ससुर का तिरस्कार करती है । अतः दोनों लेखकों ने यह साबित करने का प्रयत्न किया कि आज की नारी अबला नहीं , सबला है । आजकल हर एक क्षेत्र में वह पुरुषों से भी आगे बढकर,

अपने अस्तित्व को साबित करती है ।

दोनों लेखक शोषितो, पीडितों तथा दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं । क्यों कि आजकल के समाज में यह भी एक अनिवार्य सामाजिक मूल्य बन गया है । उन दोनों ने स्वानुभव से इसको प्रस्तुत करने में सफल हुए । अपने - अपने जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना करना पडा, उन्हीं का जीता - जागता वर्णन दोनों ने प्रस्तुत किया । कर्दम जी की 'मानिटर' कहानी और इनाक जी की 'दैन्यं लेनि जीवितं ' इसका सबूत है ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन केलिए आधुनिक साहित्यिक विधा में प्रत्येक स्थान है ।हिन्दी और तेलुगु साहित्य में दलित भावनाओं से ओतप्रोत लेखक डॉ.जयप्रकाश कर्दम और डॉ. कोलकलूरि इनाक की कहानियों में प्रतिबिंबित सामाजिक मूल्यों का जो अध्ययन किया गया, वह सफल सिद्ध हुआ । दोनों साहित्य - गगन के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं, जिनका प्रकाश सामान्य - जनता को जरूर मार्ग दिखाएगा ।

****

परिशिष्ट

क. आधार ग्रंथों की सूची

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	संस्करण	प्रकाशन
1	गुलाबि नव्विंदि	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1960	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
2	भवानी	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1969	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
3	इदा जीवितं	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1976	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
4	ऊरबवि	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1983	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
5	सूर्युडु तलेत्ताडु	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1989	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
6	अस्पृस्यगंगा	डॉ. कोलकलूरि इनाक	1999	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
7	तलाश	डॉ. जय प्रकाश कर्दम	2005	विक्रम प्रकाशन, नयी दिल्ली
8	कट्टडि	डॉ. कोलकलूरि इनाक	2007	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
9	कोलुपुलु	डॉ. कोलकलूरि इनाक	2007	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
10	काकि	डॉ. कोलकलूरि इनाक	2009	ज्योती ग्रंथ माला, हैदराबद
11	खरोंच	डॉ. जय प्रकाश कर्दम	2014	स्वराज प्रकाशन,नयी दिल्ली

ख. सहायक ग्रंथों की सूची

1. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - श्री नितीन गायकवाड
   सन. 2011, अमन प्रकाशन, कानपुर
2. मेरे संवाद(साक्षात्कार) - जयप्रकाश कर्दम, सन. 2013, अमन प्रकाशन, कानपुर
3. संवाद पर संवाद - डॉ. जयप्रकाश कर्दम - सम्पादक - रूपचन्द गौतम, सन.2007.
   श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली
4. कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन - डॉ.सुनील ब्नसोडे और श्री.सचिन कांब्ले
   सन. 2014, विनय प्रकाशन, कानपुर
5. हिन्दी की चर्चित दलित कहानियाँ : एक मूल्यांकन - मोहम्मद रफी, हंचिनाल
   सन. 2015, रोली प्रकाशन, कानपुर
6. छप्पर - डॉ. जयप्रकाश कर्दम ,सन. 1994 में समता प्रकाशन, नई दिल्ली
7. करुणा - डॉ. जयप्रकाश कर्दम,सन. 1976 में भारत - सावित्री प्रकाशन, गाजियाबाद
8. निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ - डॉ.सरोज मार्कंडेय
9. आचार्य कोलकलूरि इनाक कथलु - वस्तु वैविध्यं - डॉ. के. आनंद राव
10. नान्न - आचार्य कोलकलूरि मधु ज्योति, सन. 2014, ज्योती ग्रंथमाला, हैदराबद
11. साहित्य समालोचना - डॉ.कोलकलूरि आशा ज्योती, सन.2014,ज्योती ग्रंथमाला, हैदराबाद
12. साहित्य वीक्षणं - आचार्य कोलकलूरि मधु ज्योति, सन. 2009, ज्योती ग्रंथमाला, अनंतपुर
13. आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै परिशोधनं, संपादक - आर. चन्द्रशेखर रेड्डी
    सन. 2009 ,ज्योती ग्रंथमाला, हैदराबाद
14. आचार्य कोलकलूरि इनाक षष्टि पूर्ति संचिका, सन.1999 आचार्य कोलकलूरि
    इनाक षष्टि पूर्ति कमिटी, हैदराबद

15. साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य - विनीता अरोरा, सन. 1999 नमन प्रकाशन, दिल्ली

16. हिन्दी नाटक - मूल्य संक्रमण - गिरिराज शर्मा गुंजन, सन.1978 ,संघी प्रकाशन, जयपुर

17. आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - डॉ. रमेश देश मुख

18. रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में जीवन मूल्य - डॉ. शोभा सूर्यवंशी, सन.2012,
विकास प्रकाशन, कानपुर

19. निर्मलवर्मा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य - डॉ. प्रमोद पाटिल
सन.2014, विद्या प्रकाशन, कानपुर

20. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण - हेमेन्द्र पानेरी

21. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका - डॉ नगेन्द्र, सन.1979, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

22. समकालीन कहानियों में टूटते हुए मानवीय संबंध, डॉ. टी. सुमति, सन.2012
मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबद

23. नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ - जगदीश गुप्त, सन.1969, अलीपुर पार्क प्रेस, कलकत्ता

24. दलित साहित्य - बुनियादी सरोकार, कृष्णदत्त पालीवाल, सन.2012, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

25. बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - ओम प्रकाश सारस्वत, सन. 1984
मंथन प्रकाशन, रोहतक

26. हिन्दू समाज एवं दलित - डॉ. अरविंद सिंह, सन.2005 ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर

27. आचार्य कोलकलूरि इनाक साहित्यं पै विमर्शनं - संपादक - डॉ. कोलकलूरि मधु ज्योति
सन.2009, ज्योती ग्रंथमाला, तिरुपति

28. ई तरं कोसं कथा स्रवंति - कोलकलूरि इनाक कथलु - संपादक - मेडिपल्लि रवि कुमार
सन.2015 , अभ्युदय रचइतल संघं, गुंटूर

29. बृहत सूक्ति कोश - संपादक - डॉ श्याम कुमार वर्मा एवं मधु वर्मा

30. The Intuitive Philosophy - Rohit Mehta

31. हिन्दी उपन्यासों का मूल्यपरक विवेचन - डॉ सविता चोखोब,

सन. 2013, विनय प्रकाशन, कानपुर

32. महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य - डॉ भारती शेलके,

सन.2014 विद्या प्रकाशन, कानपुर

33. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन - डॉ देवराज

34. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य - डॉ. हुकुमचन्द्र राजपाल ,

सन.१९७२, संस्कृत भवन, जलंधर

35. हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य - डॉ मोहिनी शर्मा

36. दलित साहित्य : सामाजिक ब्दलाव की पटकथा - डॉ. जयप्रकाश कर्दम ,

सन. 2016 , अमन प्रकाशन, कानपुर

37. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना - मंजूर सैय्यद,

सन. 2005 चिंतन प्रकाशन, कानपुर

38. मानव जगत - डॉ सम्पूर्णानंद, (मधुमती, जनवरी, सन. 2003)

39. आलोचना की तीसरी परंपरा और जयप्रकाश कर्दम - डॉ. नामदेव

सन.2014, अमन प्रकाशन, कानपुर

40. पाश्चात्य दर्शन की मुख्य अवधारणाएँ - जयदेव सिंह

41. दलित चेतना की कहानियाँ - ब्दलती परिभाषाएँ - प्रो. राजमणि शर्मा,

सन. 2005, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

42. हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना - डॉ कुवँरपाल सिंह, सन.1976, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली

43. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना - डॉ. सोफिया मैथ्यू ,

सन. 1996 सर्व भारती प्रकाशन, नयी दिल्ली

44. हिन्दी राम काव्य : नये संदर्भ - डॉ. प्रमूला अवस्थी, सन.1993, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर

45. साहित्य का समाज शास्त्र - डॉ नगेन्द्र, सन. 1972, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

46. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी समीक्षा में काव्य मूल्य - रामजी तिवारी

47. अमृतलाल नागर कृत मानस का हंस : सामाजिक मूल्य - प्रो. अंजना विजन

सन. 2006, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर

48. हिन्दी नाटक : मूल्य संक्रमण - गिरिराज शर्मा गुंजन

49. अमृतलाल नागर के उपन्यास - हेमराज कौशिक, सन.1965 प्रकाशन संस्थान, दिल्ली

50. साहित्य का उद्देश्य - मुंशी प्रेमचन्द, सन.1992 , साहित्यागर, जयपुर

51. समाज और व्यक्ति - महादेवी वर्मा (समरलोक, अप्रैल - जून, सन.2002)

52. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र, सन.1968 ,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

53. प्रताप नारायण श्री वास्तव के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन -उर्मिल गंभीर

सन. 1972, आर्य बुक डिपो, नयी दिल्ली

54. साहित्य : समाज शास्त्रीय संदर्भ - हाथरस, सन. 1978 सीता प्रकाशन, नयी दिल्ली

55. हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य - डॉ मोहिनी शर्मा

56. हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - रमेशचन्द्र लाबनिया, सन. 1978,

अमित प्रकाशन, गाजियाबद

57. मेरे प्रिय निबंध - महादेवी वर्मा

58. समाज मनोविज्ञान - डॉ. मनमोहन सहगल